

सचित्र

उत्तराखंड हिमालययात्रा

माहात्म्य सहित

(हिमालयान्तर्गत, उत्तराखंड के समस्त तीर्थ व अन्य दर्शनीय स्थानों का वर्णन)

लेखक :—

श्री विशालमणि जी शर्मा उपाध्याय

नारायण कोटि, गढ़वाल ।

श्री बालमुकुन्द चतुर्वेदी द्वारा परिवर्द्धित ' संस्करण "

प्रकाशक :—

फर्म रघुनाथदास पुरुषोत्तमदास अग्रवाल,

बुकसेलर्स एण्ड पब्लिशर्स,

छत्ता बाजार, मथुरा ।

सन् १९५१ मूल्य २।)

❀ श्री बद्रीश पंचरत्न स्तुति ❀

पवन मन्द सुगन्ध शीतल हेम मन्दिर शोभितम् ।
निकट गंगा बहत निर्मल श्री बद्रीनाथ विश्वंभरम् ॥
शेष सुमिरन करत निशदिन धरत ध्यान महेश्वरम् ।
श्री वेद ब्रह्मा करत स्तुति श्री बद्रीनाथ विश्वंभरम् ॥
इन्द्र चन्द्र कुबेर धुनिकर धूप दीप प्रकाशितम् ।
सिद्ध मुनिजन करत जय २ श्री बद्रीनाथ विश्वंभरम् ॥
शक्ति गौरि गणेश शारद नारद मुनि उच्चारणम् ।
योगि ध्वनिकर अपार लीला श्री बद्रीनाथ विश्वंभरम् ॥
यक्ष किन्नर करत कौतुक ज्ञान गंधर्व प्रकाशितम् ।
श्री लक्ष्मि कमला चंवर डोले श्री बदीनाथ विश्वंभरम् ॥
कैलाश में एक देव निरंजन शैल शिखर महेश्वरम् ।
राजा युधिष्ठिर करत स्तुति श्री बदरीनाथ विश्वंभरम् ॥
श्री बदरीनाथजी के पंचरत्न पढ़त पाप विनाशनम् ।
कोटि तीर्थ भयो है पुण्यं प्राप्त ते फलदायकम् ॥

भूमिका

हिमालय के अञ्चल में उत्तराखंड की भूमि परम पवित्र देव भूमि है । भारतवर्ष में कौन ऐसा प्राणी है जो इस मनोरम भूमि के नेत्रों से दर्शन करने और वहां फिर कर अपनी आत्मा को तृप्त करने की अभिलाषा नहीं रखता ? इस देव भूमि में कुछ ऐसा आकर्षण है कि अनंतकाल से देवता ऋषि मुनि योगी महात्मा संत यहां आध्यात्मिक साधना के लिये निवास और प्रयाण करते रहे हैं । उत्तरा खंड में आज भी वही चमत्कार है ।

संसारिकजीवों के लिये सौन्दर्य का संसार और दैवी-जीवों के लिये ज्ञान का भंडार यहां भरा पड़ा है । प्रतिवर्ष ही लाखों यात्री इस तरफ यात्रा करने जाते हैं उन सभी के लिये यह पुस्तक ज्ञानवर्धक और पथदर्शक का काम करेगी साथ ही जो वहां नहीं जा सकते साधनों के अभाव में मन मार कर रह जाते हैं उनके लिये भी इस पुस्तक से उत्तराखंड के आनन्द का घर बैठे ही आभास प्राप्त हो सकेगा ।

बहुत से यात्रीगण अपनी यात्रा की स्मृति में भी ऐसी वर्णन पुस्तक चाहते हैं जिसे घर ले जाकर अपनी यात्रा के वर्णन के रूप में अन्यान्यलोगों को बता सकें । यह पुस्तक ऐसे लोगों के लिये भी अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी ।

बालमुकुन्द चतुर्वेदी "मुकुन्द"

फाल्गुन २००७ मथुरा ।

उत्तराखण्ड के प्रसिद्ध स्थानों की दूरी-मीलों से-

हरिद्वार से यमुनोत्तरी	१४०	देव प्रयाग से टिहरी	३४
,, गंगोत्तरी	१४८	टिहरी से धरासू	२६
,, केदार थ	१५१	मंसूरी से धरासू	३८
,, बद्रीनाथ	१६९	टिहरी से यमुनोत्तरी	७४
,, युमनोत्तरी होकर-		,, गंगोत्तरी	१००
गंगोत्री	२३९	,, श्रीनगर	३२
हरिद्वार से-यमुनोत्तरी, गंगोत्तरी,		,, देवप्रयाग	३४
केदारनाथ होकर बद्रीनाथ ४६१		,, ऊखीमठ	६५
हरिद्वार से यमुनोत्तरी, गंगोत्तरी,		धरासू से यमुनोत्तरी	४८
केदारनाथ, बद्रीनाथ होकर		धरासू से गंगोत्तरी	७३।।
हरिद्वार	६५३	गंगोत्तरी से केदारनाथ	१२१
हरिद्वार से उत्तरकाशी	१२७	यमुनोत्तरी से गंगोत्तरी	६६
,, गुप्तकाशी	१२७	उत्तर काशी से गङ्गोत्तरी	५८
,, रुद्रप्रयाग	१०३	बूढ़ाकेदार से त्रियुगी-	
,, चमोली	१४४	नारायण	४०।।
,, कर्णप्रयाग	१२५	त्रियुगी नारायण से केदारनाथ	१२
,, श्रीनगर	७७	केदारनाथ से बद्रीनाथ	१०१
,, देवप्रयाग	५६	रुद्रप्रयाग से केदारनाथ	४८
,, टिहरी	५९	,, से बदरीनाथ	८६
,, ऋषिकेश	१५	,, से गुप्तकाशी	२४
,, कनखल	३	गुप्तकाशी से-नारायण कोटि	२
,, कीर्तिनगर	७८	नारायण कोटिसे से केदार-	
कीर्तिनगर से श्रीनगर	३	नाथ	२२
ऋषिकेश से टिहरी	४४	,, से कालीमठ	२

कालीमठ से काली शिला	३	माणाधूरा से कैलाश	२१२
कालीमठ से कोटिमाहेश्वरी	३	केदारनाथ से चोराबाड़ीताल	१॥
यमुनोत्तरी से उत्तरकाशी	४२	केदारनाथ से वासुकीताल	३
उत्तर काशी से भटवाड़ी	१८	चमोली से गोहनाताल	१२
गङ्गोत्तरी से मल्ला	४०	नन्द प्रयाग से गरुड़ मोटर	४७
मल्ला से बूढ़ाकेदार	२७	गरुड़ से रानी खेत	६०
केदारनाथ से नारायणकोटि	२२	कर्णप्रयाग सेरानीखेत	६०
नारायणकोटि से चमोली	३१	कर्णप्रयाग से भिकिया सैण	५६
रुद्रप्रयाग से उत्तराखण्ड—		भिकिया सैण से रामनगर	४४
विद्यापीठ	६४	कर्णप्रयाग से पौखुटिया	
ऊखीमठ से तुंगनाथ	१४	कर्णप्रयाग से चमोली	२०
तुंगनाथ से चमोली	१८	कर्णप्रयाग से रुद्रप्रयाग	२२
चमोली से बदरीनाथ	४८	हेलंग से कल्पेश्वर	७
चमोली से ज्योतिर्मठ	३०	मण्डल से अनुसूया	३
जोशीमठ से बद्रीनाथ	१८	मण्डल से रुद्रनाथ	१०
जोशीमठ से लोकपाल	१८	कालीमठ से राकेश्वरी	७
जोशीमठ से फूलोंकी घाटी	१६	कालीमठ से मध्यमेश्वर	१५
जोशीमठ से तपोवन	७	श्रीनगर से पौड़ी	८
जोशीमठ से नीतिगांव	४३	पौड़ी से दुगड्डा	४१
नीति गाँव से नीतिधूरा	१२	दुगड्डा कोटद्वारा	१०
नीतिधूरा से कैलाश	१४७	दुगड्डा लन्सडौन	६
बदरीनाथ से सत्यपथ	१५।		
बद्रीनाथ से वसुधारा	५		
बद्रीनाथ से मातामूर्ति	२		
बद्रीनाथ से माणा गांव	२		
माणागाँव से माणा धूरा	२६		

श्री नगर से मोटर द्वारा पौड़ी दुगड्डाहोकर कोट द्वारा रेल स्टेशन को अच्छा मार्ग है यात्रि चाहें तो इस रास्ते भी अपने मकान को जासकते हैं खासकर पूरबको जाने वाले यात्रियों को कोट द्वारा,नजीबाबाद होकर जाने में ही सुगमता रहेगी।

हरिद्वार से—यमुनोत्तरी, गंगोत्तरी, केदारनाथ, बद्रीनाथ होकर वापिस रेलवे तक की चट्टियां-मीलों में ।

हरिद्वार	०	देवप्रयाग	१–२
सत्यनारायण	८	धनेश्वर	४
ऋषि केश	७	देवानीगाड़	२
मुनि की रेति	१–४	कुलासू	२
लक्ष्मणझूला	१–४	रानीबाग	३–४
गरुड़ चट्टी	२	कोलटा	१–२
महादेव	५	रामपुर	२–३
नाइमोहन	१	भर कणी	३
बिजनी छोटी	२	बिल्वकेदार	२
बिजनी बड़ी	१	श्रीनगर	३
न्योळ खाल	१	सुकरता	४–४
कुण्ड	२	भट्टीसेरा	३–४
बन्दर भेल	३	खांकरा	३
महादेव	३	नरकोटा	२–६
सेमल	४	गुलाबराय	३
कांडी	३	रुद्रप्रयाग	१–२
व्यासघाट	४	छतोली	४–५
छालुरी	३	तिलवाड़ा	१–१
उमरासू	२–२	मठ	१–१
सौड़	२–४		५

अगस्तमुनि	४	कंथा	३—४
सौड़ी	२--२	ग्वालिया बगड़	२
चंद्रापुरी	२	दैड़ा	१
भीरी	३—४	गोद	१
पोखरी खेत	१—४	पोथी बासा	२
कुण्ड	२	दोगल भीटा	२
गुप्तकाशी	२—१	बणियाँ कुण्ड	०—६
नाला	१	चौपता	१
नारायणकोटि	१—२	तुंगनाथ	२
व्यूंग	२	भुलकना	२
मैखण्डा	१-४	पांगर बासा	२—६
फाटा	१—४	मण्डल	३—२
बड़ासु	२	बैरागणा	२
बदलपुर	१	गोपेश्वर	३—६
रामपुर	३	चमोली	२—४
सीतापुर	१—२	मठ	२
त्रियुगी नारायण	३—४	छिनका	१—४
सोन प्रयाग	२—४	बौला	२
गौरी कुण्ड	२—४	सीयासैन	१
सर्गानिशानी	२	हाट	१
रामबाड़ा	२	पीपल कोटि	२
केदारनाथ	३	गरुड़ गंगा	३—४
नारायण कोटि	२२	टंगनी	१—४
नाला	१	पाताल गंगा	३
विद्यापीठ	१—३	गुलाब कोटि	२
ऊखीमठ	१—१	हेलंग	२

खनेटी	२—२	घटनापीपल	२
झड़कुला	१—२	कर्णप्रयाग	४
सिंहधार	३	कर्णप्रयाग से मेलचौरी,	
जोशीमठ	०—४	चौखुटिया, रानीखेत,	
विष्णु प्रयाग	२	काठ गोदाम, रामनगर,	
घाट	४	कर्णप्रयाग	०
पाण्डु केश्वर	२	शिमली	४
लामबगड़	३	सिरोली	२
हनुमान चट्टि	३	भटोली	१—४
बद्रीनाथ	५	उज्वलपुर	२
चमोली	४८	आदि बद्री	१—४
कुहेड़	२	खेती	३—२
मैठाणा	२	जोंकापानी	१—४
नन्दप्रयाग	३	दिवाली खाल	२
सोनला	३	गाडागां	०—४
लगासू	३	ख्वाड़माधेरा	२
उमट्टा	४	लोहबा	१—६
कर्णप्रयाग	२	धुनार घाट	१—४
रुद्रप्रयाग से—		मेलचौरी	५
कर्णप्रयाग को	२२	पनुवाखाल	१
रुद्रप्रयाग	०	सेमलखेत	१—४
सुमेरपुर	३—४	गणाई (चौखुटिया)	५—४
शिवानन्दी	४—४	महाकालेश्वर	४
नगरासू	३	विभ्रश्वर	२
कमेड़ा	३	द्वाराहाट	४
गोचर	२	घटेश्वर	२—४

कफड़ा	३—४	नन्दप्रयाग—	०
गगास	३—४	थिरपाक	४
कोटली	२—४	बिलोली	१
रानीखेत	१—४	चमतोली	३
काठगोदामरेलस्टेशन ६० मील		घाट	४
गणाईसे—रामनगरको		वांजबगड़	३॥
गणाई	०	सुपताल	४
स्याङ	४—४	डुंगरी	५।
मासी	७—४	थराली	५
बूढ़ाकेदार	४	वैनोली	१॥
भिकयासैण	३	ग्वालदम	५।
श्रीकोट	३	पारकोटि	४
बासोट	३	ग्वाड	३
ग्वीलखान	३—६	डंगोली	१
भूजरघाटी	३	वैजनाथ	२
मछोड़	३	गरुड़ मोटर स्टे०	१
पनवा धौलन	२	हरिद्वारसेयमुनोत्तरी १४०मील	
भौंदी	२	हरिद्वार	०
टोटाआम	६	ऋषिकेश	१५
मौराल	२	नरेन्द्रनगर	१०
कुमरिया	३	टिहरी	४१
मोहन	३	धरांई	५
गरजिया	४	भल्डियाना	६
रामनगर	८	छाम	५
नन्दप्रयागसे—		नगूण	५
गरुड़ ४७ मील को—		धरासू	५

कल्याणी	४	यमुनाचट्टी	६
गेंवला	५	ओजरी	६
सिलक्यारी	५	डडोटी	२
राड़ीधार	५	रानागांऊ	२
डंडालगांऊ	२	हनुमानचट्टी	२
शिमली	२	खरशाली	४
गंगाणी	२	यमुनोत्तरी	४

ऋषिकेश से ५३ मील टिहरीतक मोटर चलती है आगे उत्तरकाशी तक मोटर सड़क बन रही है।

यमनोत्तरीसे-गंगोत्तरी ६६ मील

गंगोत्तरीसे-केदारनाथ १२१ मील

यमुनोत्तरी	०	गंगोत्तरी	०
शिमली	२५	मह्ला	४०
किंघोट	७॥	सौरा	६
मीकुरी	३	क्यालु	३
उत्तरकाशी	६	छ्ना	३
गंगोरी	३	बेलक	४
बेताला	३	पगराणा	५
मनेरी	४	झाला	४
कुमाल्टी	४	अंगूडा	३
मह्ला	२	बूढ़ाकेदार	२
भटवाड़ी	२	भैरों	६॥

भूकी	६	गौंट	३
गंगनाणी	३	घुत्तू	९
लोहारीनाग	४	दुफन्द	६
सूकी	५	मगू	३
झाला	३	त्रियुगी नारायण	५
हरसिल	२	गौरीकुण्ड	५
धराली	२॥	सगीनिशानी	२
जांगला	४	रामबाड़ा	२
भैरोंघाटी	२।	केदारनाथ	३
गंगोत्तरी	६॥	केदारनाथसे—	
गोमुखी	१८	नारायणकोटि	३२

देवप्रयागसे-टिहरी
३४ मील,

देवप्रयाग	०
खरसाड़ा	१०
कोटेश्वर	४
बरड़या	६
क्यारा	८
टिहरा	६

ऋषिकेश से नरेन्द्रनगर-होकर-टिहरी-४४ मील—

ऋषिकेश	०
नरेन्द्रनगर	६
फकोट	११

मंसूरीसे-टिहरी
४० मील

मंसूरी	०
सुवाखोली	६
धनोल्टी	८
कांणाताल	९
कौड़िया	५
टिहरी	१२

कोटद्वार से-श्रीनगर ५० मील

दुगड्डा	१०
डाडामण्डी	६
द्वारीखाल	६
बांघाट	७

नागणी	१०	कलेथ	२
धमा	५	अधवानी	१०
टिहरी	१२	पौड़ी	१०
मंसूरी से धरासू ३८ मील,		श्रीनगर	८
मंसूरी	०	कर्णप्रयाग से चमोली २० मील	
सुवाखोली	६	उमट्टा	२
थत्यूड़ा	६	लंगासू	४
भोलधार	५	सोनला	४
अंधियारी	७	नन्दप्रयाग	३
चापड़ा	१	मैठाणा	३
स्याड़	६	कुहेड़	२
धरासू	७	चमोली	२

चमोली अपरगढ़वाल का न्याय-कार्यालय है । यहां खण्डमण्डलाधीश आदि प्रमुख न्याय कर्तालोग एवं कानूनी पण्डितों का निवास भी है ।

उत्तराखंड के यात्रालुओं मोटरें ऊपर चढ़ने को निम्न स्थानों से भी मिलती हैं ।

(१) ऋषीकेश से देवप्रयाग होकर कर्ण प्रयाग तक वहां से तीन मील पैदल श्री नगर—वहां से आगे चमोली तक मोटर जाती हैं, चमोली से बद्रीनाथ ४० मील पैदल रास्ता है ।

(२) कोटद्वार से पौड़ी, श्रीनगर रुद्रप्रयाग चमोली तक ।

(३) ऋषीकेश से टिहरी वहां से गंगोत्री—यमनोत्री—तथा कर्णप्रयाग व श्रीनगर को पैदल रास्ता है ।

मु.-हीरालाल खुराना, बहादुर प्रिंटिंग प्रेस, गली गुसांईयान मथुरा

।। आरती जय जगदीश हरे ।।

ओ३म् जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट छन में दूर करे ।। ओ३म्
जो ध्यावे फल पावे दुःख विनसे मन का ।
सुख सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तन का ।। ओ३म्
मात पिता तुम मेरे शरण गहूं किसकी ।
तुम बिन और न दूजा आस करूं जिसकी ।। ओ३म्
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी ।
पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सब के स्वामी ।। ओ३म्
तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्ता ।
मैं मूरख खल कामी कृपा करो भर्ता ।। ओ३
तुम हो एक अगोचर सब के प्राण पति ।
किस विधि मिलूं गोसांई तुमको मैं कुमती ।। ओ३म्
दीन बन्धु दुःख हरता तुम ठाकुर मेरे ।
अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा तेरे ।। ओ३म्
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा ।। ओ३म्

● ओ३म जय जगदीश हरे ●

श्री गङ्गाजी की आरती

जय भगवति गंगे । मा जय जय भगवति गंगे ॥ तरल तरंगे दुर्मति भंगे सुमरत दे संगे ॥ जय० ॥ टेक ॥ विष्णु पदादनु शारणी खंडिनी ब्रह्मण्डे । शंकर जटा के निःसरति अतिरंगे । जान्हवि नाम तुम्हारो शोभित जय अनघे । भागिरथी मति लगाने सागर जग उद्धारणी ॥ जय० ॥ १ ॥ अघनाशन भवशामन दासन शिवतनुजे । शामन मोह विकारन कारन ब्रह्मपददे । सुरमारि धारा सधारा कलिमल टारन जै शरणागत प्रतिपालक बालक शिवसुखदे ॥ जय० ॥ २ ॥ शिवस्मरणी जगतरणी हरणी भवसिन्धो । हरिपद दाता धाता वंदित जगमाता ॥ काम क्रोध विदारणि दारुण दुर सुभगे । पाथोधि परतिय सुरधनि गुण जगे ॥ जय० ॥ तव धारा जयपारा दर्शित भक्तजने । सेवत काशिनिवासी अखिल अभ्यतरने । शेष नरेश कवीशा गुण गावें तेरा । पूरी आस निराशा सुरसरि सुखदंगे ॥ जय० ॥ ४ ॥ सुराबधु सारी नृपति सुनारस्निपा मृदुमद दे । ते सुरलोकं गच्छन्ति सुर धर निर्मलदे ॥ तेरी महिमा कालभि वरनूं गंगे भवगंगे त्रिपथगामिनी सुर नर पन्नेगधे ॥ जय० ॥ ५ ॥ गंगा आरति सकल उचारति हरजनन । सुनत सुनावत फल पावत मनके ॥ गावत आरति रामकृष्ण जन के । सकल कामना पूरन करत श्रीगंगे ॥ जय० ॥ ६ ॥

श्री बद्रीकेदार उत्तराखंड हिमालय यात्रा ।

पवित्र उत्तराखड की यात्रा भाग्यवान प्राणी को ही प्राप्त होती है । जीवन के अनेक दुखद प्रसंगों म ऊब कर जब प्राणी आत्मचेतना की ओर प्रवृत्त होता है तब अनायासही उसका मन उसे उत्तर के पवित्र तीर्थों का ओर ले जाता है । शान्ति सुख और आत्मकल्याण का इतना प्रचुर साधन और प्राणी को मिलेगा भी कहाँ ? वास्तव में इस देव भूमि मे ऐसा कुछ आकर्षण भरा है कि यहाँ जाकर मन एक दम कुछ और का और ही हो जाता है ।

ब्रज की पवित्र भूमि जिस तरह भगवान की लीला भूमि है हिमाँचल की हरी भरी हिमावृत भूमि उसी प्रकार तपो भूमि है इसमें कुछ भी सन्देह नहीं । बर्फ से ढकी उत्तुगं शिखरों की चाँदी सी चमक, हरे भरे वन प्रदेश की शोभा, दुर्लभ जड़ी बूटियों की मनोरम सुगंध गंगा यमुनादि देव नदियों की अल्हड़चाल, शीतल स्वास्थप्रद वायु का स्पर्श एक से एक वस्तु मन और प्राण को प्रफुल्ल करने वाली इस प्रदेश में है जिसका वर्णन शब्दों म किया जाना कठिन प्रतीत होता है ।

उत्तराखड की यात्रा प्रायः हरिद्वार से प्रारम्भ होती है । यहाँ इस यात्रा के लिये प्रचुर साधन भी उपलब्ध

हो जाते हैं किन्तु दूसरे स्थानों जैसे देहरादून, अल्मोड़ा, मसूरी, रानीखेत से भी परिभ्रमण आरम्भ किया जा सकता है पद्रीनारायण के लिये तो हरिद्वार हृषीकेश ही यात्रा प्रारम्भ करने के एक मात्र स्थान है।

उत्तराखंड की यात्रा करने वाले को यहां अनेक साथी पथदर्शक, परामर्श दाता प्राप्त हो सकते हैं। श्री बद्रीकेदार के पंडे भी प्रायः यहां ही मिल जाते हैं और सुविधा पूर्वक पूरी यात्रा साथ देने को तैयार हो जाते हैं। अतः हिमालय यात्रा के प्रेमी को अपना यात्रा कार्यक्रम यहीं से प्रारम्भ करना चाहिये।

गङ्गा उत्तराखंड की एक प्रमुख विभूति है। जहाँ भी आप जांयगे जिधर भी दृष्टि आप डालेंगे आपको गंगा-माई का आनन्द और चमत्कार दृष्टिगोचर होगा। रास्ते भर लोग गंगामाता का जय जयकार करते सुनाई पड़ेंगे यहां तक कि सारे यात्रा मार्ग में आपको भगवती पुण्य सलिला भागीरथी का अनुगमन करना पड़ेगा।

इस एक नाते ही हमें इस महानदी का कृतज्ञ होना चाहिये किन्तु उसका अनन्त उपकार तो देखिये प्रति-क्षण यात्रा में पग पग पर गङ्गा का वैभव आपके प्राणों को प्रफुल्ल करता जायगा और एक क्षण के लिये भी आप शायद ही भक्त भागीरथ के इस अमरप्रयास की सौन्दर्य झांकी को भुला सकेंगे।

उसके महिमा और महात्म्य का विस्तृत वर्णन पाठक आगे पढ़ सकेंगे। उत्तराखंड के समस्ततीर्थ स्थानों के अतिरिक्त काश्मीर, लद्दाख, कुलु,बुशहर, तिब्बत आदि हिमालय के अंचल में अपना अपना विशिष्ठ स्थान रखते हैं, उनका वर्णन भी आगे के पृष्ठों में दिया गया है। उस विस्तार के प्रवेश में जाने के पूर्व श्रद्धालु यात्रियों एवम अन्य समस्त जिज्ञासुओं के ज्ञातव्य कुछ प्रमुख स्थानों का वर्णन यहां करके "गंगा का महात्मय व पुण्य" शीर्षक अध्याय से यात्रा प्रारम्भ होगी।

अमरनाथ जी

यह द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से है यहां पर शीत बहुत पड़ता है। पिण्डी शिवजी की बरफ की है। जो कृष्णपक्ष को क्रम से नित्य घटती तथा शुक्लपक्ष को बढ़ती हैं। इस मार्ग से काश्मीर का भी रास्ता है।

ज्वालाजी व पठानकोट

ईस्ट पंजाब रेलवे के पठानकोठ स्टेशन से कांगड़े को जाते हैं। कांगड़ा में भी देवी का प्रसिद्ध मंदिर है। कांगड़े से थोड़ी दूर ज्वालाजी है। यहाँ मन्दिर के बीच में तथा अन्य स्थान में भी अग्नि की ज्योति निकलती

है। दोनों नवरात्रों में बड़ा भारी मेला होता है। पठानकोट से जम्मू तथा, श्रीनगर व काश्मीर को मोटर जाती है। काश्मीर इलाके में प्रवेश करने के लिये आज्ञापत्र प्राप्त करना जरूरी है, जो बड़ी आसानी से अमृतसर में प्राप्त हो सकता है। अमृतसर ईस्ट पंजाब रेलवे का प्रमुख स्टेशन भारत-पाक सीमा के निकट एक व्यापारिक केन्द्र है, पठानकोट को रेलगाड़ी व मोटर यहीं से मिलती हैं।

श्री पशुपतिनाथ यात्रा–नेपाल

श्री पशुपतिनाथ जी का मन्दिर नेपाल राज्य की राजधानी काठमाण्डू से २ मील पश्चिम की ओर बाग-मती नदी के किनारे पर है। मन्दिर में श्याम पाषाण १ गज ऊँची लिंगाकार मूर्ति है जिसकी १ हाथ ऊँचाई पर ४ सिर और ८ भुजाएँ है। पुजारी के अतिरिक्त मूर्ति को दूसरा कोई स्पर्श नहीं कर सकता। नदी के दूसरे किनारे पूरब की तरफ गुह्येश्वरीदेवी और बाबा गोरखनाथ जी के मन्दिर हैं यहां अन्य रम्य स्थान और धर्मशालायें भी हैं।

मेला–श्रीपशुपतिनाथ जी की यात्रा का मेला केवल फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी (शिवरात्रि) को लगता

है वहाँ जाने की और समय आज्ञा नहीं है, शिवरात्रि पर ४०-५० हजार यात्री इकट्ठे हो जाते हैं।

पासपोर्ट—नेपाल राज्य की ओर से हरएक यात्री को आज्ञापत्र मिलता है और सारी यात्रा का प्रबन्ध नेपाल राज्य की ओर से हुआ करता है।

रेल मार्ग—गोरखपुर या मुजफ्फरपुर होते हुए रक्सौल पहुंचते हैं, यहां से नेपाल राज्य की रेल मिलती है। रक्सौल से १४ मील वीरगञ्ज स्टेशन है वहाँ से १० मील अम्लकगञ्ज आखीरी स्टेशन है।

मोटर—अम्लकगञ्ज से भीमफेरी २४ मील तक मोटर-लारी जाती है, यहां पासपोर्ट बदला जाता है।

पैदल यात्रा—भीमफेरी से पशुपतिनाथ २० मील है, भीमफेरी से पहले शीशगिरी की ३ मील की चढ़ाई है बीच में २ मील पर १ किला है वहाँ पर पासपोर्ट की जाँच होती है। गढ़ी से १ मील कठिन चढ़ाई के बाद २ मील की उतराई है जो कुलीखाना तक गई है। कुलीखाना से माखू तक १॥ मील मैदान का सीधा रास्ता है। माखू से चित्तलांग २॥ मील सीधा रास्ता

है । चित्तलांग से १।। फलांग एकदन्ता पर्वत की साधारण चढ़ाई के बाद १ मील चन्द्रगिरि की चढ़ाई है । चन्द्रगिरि से थानकोट तक २ मील का उतार है यहाँ भी पासपोर्ट की जाँच की जाती है । थानकोट से काठमाण्डू ६ मील है ।

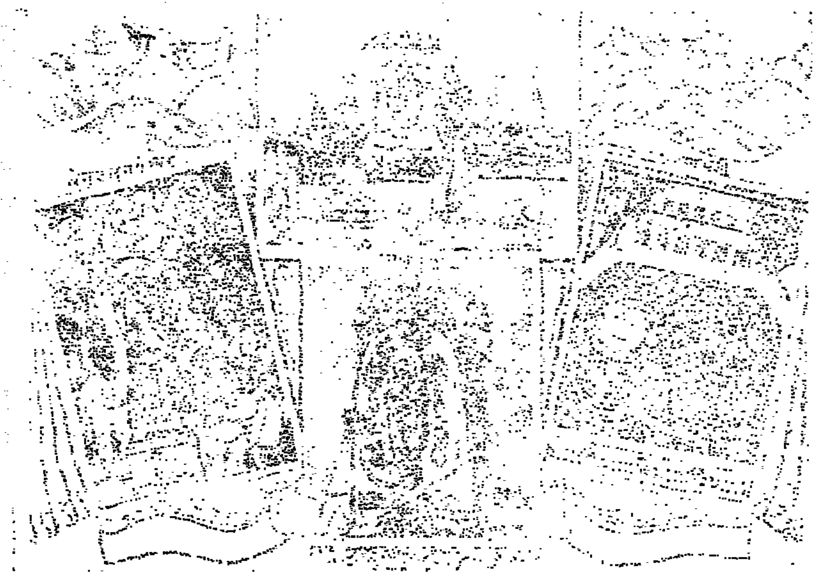
मंसूरी, नैनीताल, अलमोड़ा, रानीखेत, मुवाली, लैन्सडौन, चकरौता, शिमला दार्जिलिंग, डलहौसी, कुलू आदि पहाड़ों पर गर्मी की ऋतु में स्वास्थप्रद और सैर करने के प्रसिद्ध स्थान हैं ।



उत्तराखण्ड यात्रा में झपडी की सवारी।



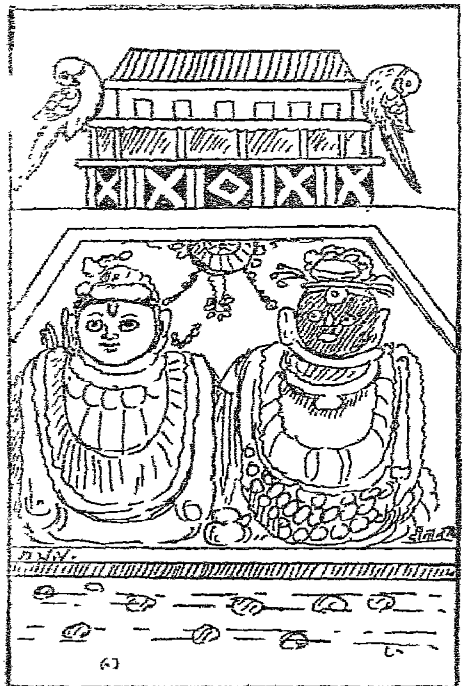
गुप्त काशी देवालय



चारों धाम



गुप्त काशी गढ़वाल के सार्वजनिक कार्यकर्ताओं का समूह ।



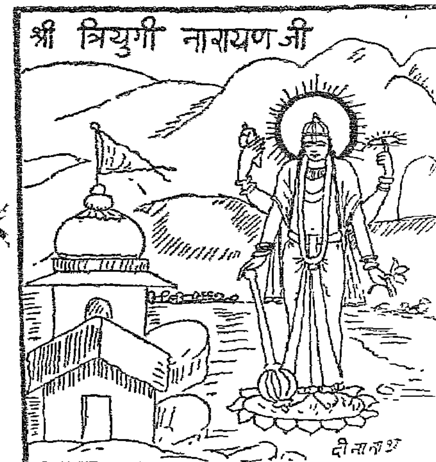
श्री जगन्नाथजी

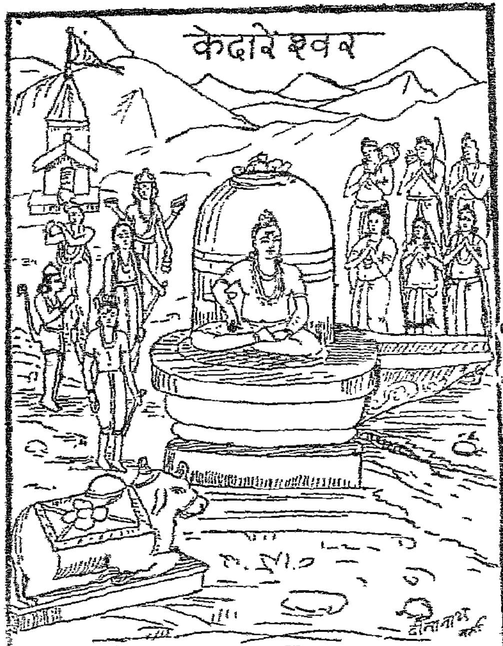



श्री गंङ्गोत्रीजी
श्री जमुनोत्रीजी


लक्ष्मी जी
नर
नारायण जी
नारद जी


नारायणकोटि
देवगण
दीनानाथ वर्मा
मथुरा


श्री त्रियुगी नारायण जी
दीनानाथ


केदारेश्वर


श्री मध्यमेश्वर

गङ्गा का महात्म्य और पुण्य

—:०:—

हमारे शास्त्रों में सभी जगह गंगा के प्रभाव का वर्णन मिलता है तथा इस प्रकार की कथायें भी पाई जाती हैं शास्त्रों में यहां तक वर्णन पाया जाता है कि यदि श्रद्धा व विश्वास पूर्वक गंगा में स्नान किया जाये तो अश्वमेध यज्ञ जैसा फल प्राप्त होता है, इस विषय में एक इतिहास है जो कि नीचे लिखा जाता है:—

मकर संक्रान्ति के पर्व पर श्री महादेव जी श्री पार्वती जी के साथ स्नान के निमित्त प्रयाग जा रहे थे, मार्ग में स्नानार्थ जाते हुए अन्य जन समुदाय को देख कर श्री पार्वती जी ने भगवान शंकर से पूछा कि हे प्रभो। यह इतना जन समूह जो संसार के दिग दिगान्तर से आरहा है इसका क्या कारण है? श्रीशंकरजी ने कहा कि यह सब मनुष्य गंगा में स्नान करने के लिये जा रहे है, जिसका महात्म्य बड़ा अद्भुत और अनन्त हैं श्री पार्वतीजी कहने लगीं कि हे प्रभो! कृपा कर मुझे यह महात्म्य सुनाइये। भगवान् ने कहा कि जो गंगा स्नान को आते हैं उनको प्रति पग सौ अश्वमेध यज्ञ फल मिलता है। और करोड़ों जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं, तथा वह मनुष्य देवतुल्य हो जाता

है। यह बात सुन पार्वती जी कहने लगी कि यह लाखों शूद्रादि जाति के मनुष्य जो स्नान करने चले आरहे हैं इन की अभी कुरूपता तक नहीं गई तो भला देवता कहा से होंगे, मैं आपकी बात कैसे ठीक मानू? इस पर श्री महादेव जी ने उत्तर दिया कि मैं इस बात को अभी प्रत्यक्षसिद्ध कर दिखाता हूँ, यह कहकर श्रीशंकरजी कोढ़ी का रूप बना कर यात्रीयों के सम्मुख मार्ग में बैठ गये और पार्वतीजी से कहा कि तुम इसी सुन्दर स्वरूप से मेरे शरीर पर की मक्खियों को उड़ाती रहो, जो कोई पूछे तो यही कहना कि कर्म विपाक में इनके लिये लिखा है कि जिसने सौ अश्वमेध यज्ञ किये हों यदि उससे इनका शरीर स्पर्श हो जाय तो यह अच्छे हो सकते हैं, सो यहां लाखों मनुष्य एकत्रित हैं यदि किसी ने सौ अश्वमेध यज्ञ किए हो तो वह इनको स्पर्श करदे जिससे मेरे पति देव कोढ़ से छूट जाये पार्वतीजी ने ऐसा ही किया।

थोड़े से समय के पश्चात् ऐसी सुन्दर स्त्री को एक कोढ़ी की सेवा करते देख कर वहां बहुत से लोग एकत्रित हो गये, कितने ही जी पार्वती जी पर मोहित हो कर कोढ़ी को छोड़ अपने संग चलने को कहने लगे, कोई उनके साथ हँसी करने लगे, परन्तु ज्ञानी लोगों ने उन की प्रशंसा

करते हुये उन्हे धन्यवाद दिया, उसी समय एक कंगाल ब्राह्मण ने आकर पूछा कि माता जी तुम यहां पर क्या कर रही हो ? किसी एकान्त स्थान में जाकर अपने पति की सेवा करो। यहां बैठने का क्या कारण है। पा ती जी ने सारा वृत्तान्त कह सुनाया । यह सुन ब्राह्मण बोला कि तुम सौ अश्वमेध कहती हो मैं तो लाखों कर चुका हूँ यह कह कर उसने ज्यों ही स्पर्श किया कि महादेव जी का शरीर कोढ से छूट कर अत्यन्त मनोहर हो गया। यह देख कर सब आश्चर्य से चकित रह गये, कारण पूछने पर ब्राह्मण ने बतलाया कि शास्त्रों में वर्णन है कि गंगा स्नान करने के लिये जो मनुष्य निर्मलभाव से पैदल चलता है उसको प्रति पग सौ अश्वमेध यज्ञों का फल मिलता है मैं २० सों बार पैदल गंगा स्नान करने आया हूँ इस कारण मैंने लाखों ही अश्वमेधों का फल पा लिया इस पर मुझे पूर्ण विश्वास है।

इसके वाद शिवजी ने पार्वतीजी से कहा कि देखा, इतने लोगों में कौन गंगा स्नान करने आया था और किसे शास्त्रीय वचनों पर पूर्ण विश्वास था, इसलिये जिसे गंगाजी के प्रति दृढ़ विश्वास होता है, उन्हें अब यही उपरोक्त फल मिल जाता है, इसमें संशय नहीं।

"हरिद्वार का प्राचीन इतिहास"

हरिद्वार अथवा गंगा द्वार हिन्दुओं का एक प्राचीन पवित्र तीर्थ है। यह लुक्सर से १७ मील की दूरी पर और सहारनपुर से ५० मील की दूरी पर है और यह गंगा के तट पर सहारनपुर के उत्तर पूर्व के कोने पर शिवालक पर्वत के दामन में है।

मेघदूत काव्य से सिद्ध होता है कि यह तीर्थ हरिद्वार महाराज भोज के समय में नहीं था। क्योंकि पंडित कालिदास ने जो उक्त राज के समय में प्रसिद्ध काव्य मेघदूत में कई विख्यात स्थानों के साथ कनखल का नाम लिखा है यदि उस समय हरिद्वार होता तो कनखल का नाम यह क्यों लिखता। उन्होंने हरिद्वार का कहीं भी कुछ बयान नहीं किया। स्कन्द पुराण और मत्स्य पुराण में हरिद्वार का वर्णन आया है। चीनी यात्री हियूनशांग यहाँ आया उसने इसको म्यूलो वर्णन किया है जिसके विषय में किंघम साहब की राय है कि यह मायापुर है। अबूरीहान तथा रशीदुद्दीन मुसलमान इतिहास लेखकों ने इसे गंगाद्वार बयान किया है। लेकिन अबुलफजल जो बादशाह अकबर के समय में

प्रसिद्ध इतिहास लेखक हुआ है वह इस स्थान को हरि-द्वार के नाम से पुकारता है।

तीर्थ का अनुसंधान करने से स्पष्ट विदित होता है कि यह तीर्थं राजा मानसिंह सवाई जयपुर के कुछ समय पहिले स्थापित हुआ क्योंकि सबसे प्रथम इस जगह पर राजाजी ने एक छोटा सा घाट शिवालिक पर्वत की कुछ कगर काट कर इस ही शिवालिक पत्थरों से बनवाया था जिसकी आठ सीढ़ियाँ ज्यौं की त्यों नये घाट से उत्तर की ओर मायापुरी की हवेली के पास अब भी मौजूद हैं और उक्त घाट से मिली हुई राजाजी की छतरी भी खड़ी है नहीं तो यहाँ इससे पहिले कोई चिन्ह तीर्थं का नहीं मिलता और पण्डों की बहियाँ भी इसी समय का परिचय दे रही हैं।

राजा मानसिंह का सिक्का देखने से विदित हुआ कि राजाजी १५६५ ईसवी में राजगद्दी पर बैठे थे जिसको आज ४२० वर्ष हो गये हैं वह मुहम्मद जलालुद्दीन अकबर बादशाह के रासनशीन थे और हफ्तहजारी मनसब रखते थे। जब से राजाजी ने घाट बनवाया तब से यह ब्रह्मकुण्ड विख्यात हुआ और राजा के नियम पालन करके राजा प्रजा और रईस स्नान को आने लगे।

मायापुरी में इसका नाम गंगाद्वार लिखा है यह नाम पहिला प्रतीत होता है क्योंकि जब राजा भगीरथ हिमालय की श्रेणियों को काटता काटता अन्तिम श्रेणी शिवालक को जो केदारनाथ की दक्षिण सीमा है काट कर गंगा को हिमालय पर्वतों से बाहर भूमि में लाया तो गंगाद्वार नाम हुआ और हरिद्वार नाम भी इसी प्रकार बोला जाने लगा क्योंकि केदार देश महादेवजी का देश है और महादेवजी का नाम हर है तो केदार देश का द्वार होने से हर का भी द्वार हुआ।

इस तीर्थ के प्रचलित होने का मुख्य कारण यह है कि पहिले समय मे तपस्वी महात्मा लोग इन स्थानों को तप करने योग्य गंगाजी का तट और वन वेदाभ्यास और योग सिद्धि के उपयोगी देखकर वास किया करते थे। इसी कारण ऋषीकेश और तपोवन इत्यादि स्थान आज तक विख्यात चले आते हैं। मायापुरी महात्म्य में भी जिन स्थानों को तप तीर्थ लिखा है वहाँ उनका स्थान भी लिखा है कि अमुक ऋषि ने अमुक स्थान में तप किया, इसलिये यह पुण्य भूमि है। और गंगा—गंगा नदी हरिद्वार में पर्वत से बाहर मैदान में निकली है इसलिये हरिद्वार पहले गंगाद्वार के नाम से प्रसिद्ध

था। गंगा भारतवर्ष की सब नदियों में प्रधान और सबसे अधिक पवित्र है। गंगा हिमालय में गंगोत्री पहाड़ से निकल कर दक्षिण की ओर पर्वत के लगभग १५०० मील बहने के उपरान्त अनेक प्रवाहों से बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

हरिद्वार के तीर्थ

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका।
पुरिद्वारावतिज्ञेया सप्तैता मोक्ष दायकाः॥

हरिद्वार भारत के सात मुख्य पवित्र नगरों में से है गंगा की पवित्र शोभा के देखने का सौभाग्य सबसे प्रथम यही प्राप्त होता है। हरिद्वार का स्टेशन ई० आई० आर० की एक शाखा पर है, हरिद्वार में करीब ५० धर्मशालायें हैं, कुछ में यात्रियों के भोजन का भी प्रबन्ध है।

हरिद्वार तो अब एक बड़ा नगर बन गया है, यह भी गंगा जी के नहर के किनारे है, डाकघर-बिजली-तार टेलीफून आदि सभी यहाँ पर उपस्थित हैं, म्युनिसिपैलिटी के उद्योग से इस समय पक्की सड़कें बन गई हैं। अस्पताल भी खुल गया है, खाने-पीने के लिये बाजार भी है।

हरिद्वार में यात्रियों का मुख्य कर्म स्नान है, यहाँ देव दर्शन का भी बड़ा पुण्य है, इस स्थान में पिण्डदान तर्पण, और पुष्प (हड्डी) प्रवाह भी किया जाता है, हरि की पौड़ी में अस्थियाँ प्रवाहित की जाती हैं, स्नान का भी मुख्य स्थान है, मायापुरी, कुशावर्त-बिल्वक-नील पर्वत और कनखल इन पाँच तीर्थों में स्नान पूजन करने से कल्याण होता है (गरुड़ पुराण पूर्वार्द्ध ८१वाँ अध्याय)।

स्टेशन से पौन मील की दूरी पर प्रसिद्ध घाट "हरि की पौड़ी" यह स्थान हरिद्वार का केन्द्र है, पत्थर का घाट बना है, दाहिनी ओर दो-तीन मन्दिर हैं। बाईं ओर एक बड़ा पत्थर का मकान है, जिसके साथ ही एक मन्दिर है, इस घाट पर उत्तर की ओर दीवार के नीचे हरि का चरण चिन्ह है, हरि की पौढ़ियों से कुछ दूर पूर्व की ओर गंगा के बीच घाट में पानी से थोड़ा ऊपर एक चबूतरा है, सरकार ने इस प्लेटफार्म तथा सीढ़ियों के मध्य में एक छोटा सा पुल बाँध दिया है प्लेटफार्म और पैढ़ियों के बीच में जहाँ गंगा की धार है उसी स्थान को ब्रह्मकुण्ड कहते हैं, यहाँ बड़ी बड़ी निडर मछलियाँ बहुत हैं ब्रह्मकुण्ड के पास गंगाजी की

धार के बीच में ही मनसा देवी का मन्दिर है मन्दिर की प्रदक्षिणा यात्री लोग जल ही में करते हैं, ब्रह्मकुण्ड का हरिद्वार में बहुत महात्म्य है, इस स्थान पर ब्रह्माजी ने यज्ञ किया था, यहीं पर श्री गंगाजी का मन्दिर है जहाँ प्रातः व सायंकाल आरती होती है, रात को गंगा की शोभा बड़ी सुन्दर होती है।

मायापुरी

(मायापुरी, कुशावर्त, नील पर्वत, कनखल का वर्णन)

—:o:—

हरिद्वार हरद्वार गङ्गाद्वार इन सब नामों के सम्बन्ध में आप पीछे पढ़ चुके हैं मायापुरी इसका प्राचीन नाम है, बाकी सब नाम पीछे के हैं, उसके सम्बन्ध में पौराणिक कथा इस प्रकार है—

हरिः विष्णु, द्वारः दरवाजा, अर्थात् भगवान विष्णु का दरवाजा, जिस बद्री धाम में भगवान विष्णु 'हरि' स्वयं तपस्वी अवतार धारण कर तपस्या करते थे उसका

मार्ग इसी स्थान से होकर जाता है, इसी कारण इस पुरी का नाम हरिद्वार पड़ा।

इस स्थान में श्री गंगाजी पर्वतों से होकर प्रथम समतल (मैदान) में प्रविष्ट हुई हैं, इसी से इसको गंगा द्वार भी कहते हैं। इसका प्राचीन नाम मायापुरी है, इस नाम की कथा पुराणों में इस प्रकार है—पूर्वकाल सत्युग में दक्ष प्रजापति ने यहाँ पर एक बड़ा यज्ञ किया था, उस यज्ञ में दक्ष ने अपने सब इष्टमित्र अपनी कन्यायें और उनके पति आमन्त्रित किये थे, पर केवल अपनी कन्या सती और उनके पति महादेव जी को को निमंत्रण नहीं भेजा, अपनी अन्य बहिनों को पिता के घर जाते देख सती के मन में अपने माता पिता तथा सभी बहिनों से मिलने की इच्छा प्रकट हुई, उन्होंने अपने पति श्री महादेव जी से अपने माता पिता के पास जाने की आज्ञा माँगी, महादेद जी ने सती को समझाया कि बिना बुलाये किसी के घर जाना ठीक नहीं है, पर सती जी ने नही माना और उल्टा ताना महादेव जी को दिया कि तुम तो फकीर हो, इससे माता-पिता-बहिन के प्रेम को क्या जानो। इस पर महादेव जी कुछ रुष्ट हो गये, उन्होंने तुरन्त योगबल से जान लिया कि होनहार

होकर ही रहेगी इसलिये सतीजी को पिता के घर जाने की आज्ञा दे दी, और वह जल्दी से अपने माता-पिता के पास पहुँच गई, दक्ष ने सती का कुछ भी आदर सत्कार नहीं किया, तब सतीजी अपने किये पर पछताने लगीं, फिर आगे जब सती जी ने देखा कि यज्ञ में सब देवताओं को तो यज्ञ भाग दिये जा रहे हैं, पर उनके पति महादेव जी को कोई यज्ञ भाग नहीं दिया जा रहा है, तब उन्होंने इसका कारण अपने पिता दक्ष से पूछा दक्ष ने उत्तर दिया कि हे सती ! तेरे पति मुण्ड माला पहनते हैं, नंगे रहते हैं, उनका स्वरूप अमंगलकारी है, इसलिये उनको यज्ञ में बुलाना या यज्ञ भाग देना उचित नहीं, हमने भूल से तेरा विवाह उनसे कर दिया अब हम पछताते हैं, अपने पिता के यह बचन सुन सती के क्रोध की सीमा न रही, अपने पती का निरादर सहन न कर सकी, वह अपने पति महादेव जी का मन में स्मरण करती हुई यज्ञ कुण्ड में कूद पड़ी और भस्म हो गई, जब महादेव जी को सती के भस्म होने का समाचार मिला तो उन्होंने अपने गणों को, प्रधान गण वीरभद्र की अध्यक्षता में दक्ष के यज्ञ को नष्ट करने के लिये भेज दिया, महादेव जी के गणों ने यज्ञ भूमि में

पहुँच कर यज्ञ को नष्ट भ्रष्ट कर दिया और दक्ष का सिर काट कर यज्ञ कुण्ड में डाल भस्म कर दिया। तब ब्रह्मादि देवताओं ने गणों की वेदना से व्याकुल होकर महादेव जी की स्तुति की, फिर महादेव जी ने प्रसन्न हो दक्ष को जीवित कर दिया लेकिन उसका सिर भस्म हो चुका था इस कारण बकरे का सिर काट कर दक्ष के धड़ से लगाया गया फिर दक्ष ने भी महादेव जी की स्तुति की, महादेव जी के प्रसन्न होने पर दक्ष ने वर मांगा कि मेरी आप में भक्ति सदा बनी रहे, यह तीर्थ पापों का नाश करने वाला हो, महादेव जी ने तथास्तु कह समझाया कि यह सब विष्णु भगवान की माया से हुआ है, इसलिये इस क्षेत्र का नाम मायापुरी होगा, और हम यहाँ पर दक्षेश्वर नाम से निवास करेंगे।

माया क्षेत्र का मायापुर एक प्रधान क्षेत्र था प्राचीन समय में यह नगरी अति सुन्दर और वैभव सम्पन्न थी। काल की गति से इसका सम्पूर्ण वैभव नष्ट हो गया, मायापुर ७वीं सदी तक रहा, इस समय मायापुर की बस्ती नहीं है, किन्तु हरिद्वार व कनखल के बीच उसके खंडहर अब भी मिलते हैं, इस नगरी का विस्तार शास्त्रों में ६६ मील लम्बा और २० मील चौड़ा बतलाया गया है।

इस समय मायापुर हरिद्वार से १ मील दक्षिण पश्चिम गंगा के दाहिने तट पर है, यह सप्त पुरियों में से माया नाम की एक पुरी थी, अब दीन दशा में है। यहां के प्राचीन टीले ही अब स्मृति मात्र हैं, इस मायापुर में राजा वेन की गढ़ी बनी हुई है, इन टूटे फूटे ध्वंसावशेष स्थानों को देखने के लिये भी यात्री बड़े चाव से जाते हैं।

इस मायापुरी में पुराने ३ मन्दिर हैं, पहला पूर्वोत्तर ज्वालापुर जाने वाली सड़क के पास है, यह मन्दिर माया देवी का है जो १०वीं व ११वीं शताब्दी का बना हुआ है, माया देवी के तीन सिर और चार भुजायें हैं, इसके निकट ही आठ भुजा वाले शिव की मूर्ति है, और बाहर नन्दी बैल है।

कुशावर्त

हरि की पौड़ी से दाहिनी ओर थोड़ी दूर पर कुशावर्त नाम का प्रसिद्ध घाट है। महाराज इन्दौर ने यहाँ एक छायादार चबूतरा बनवा दिया है, यहाँ यात्री सुख से स्नान पूजा पाठ पिण्डदान कर सके हैं। मेष की संक्रान्ति के समय यहां पिण्ड दान की बड़ी भीड़ रहती है, स्कन्द पुराण में इस तीर्थ का बहुत महात्म्य

लिखा है यहां महामुनि दत्तात्रेय जी ने तप किया था। इस स्थान पर यात्री मुण्डन संस्कार करते हैं। कुशावर्त के दक्षिण की तरफ़ विष्णु तीर्थ है।

नील पर्वत और नीलेश्वर शिव

मायापुर से दक्षिण गंगा पर लकड़ी का पुल है, जिसको लांघ कर नील पर्वत पर जाना होता है, मेले के दिनों में हरि की पौड़ी के निकट नावों का पुल बनता है, यात्रीगण गंगा पार नील पर्वत पर जाते हैं, लकड़ी के पुल पर नील पर्वत पर नील पर्वत के पास तक डेढ़ मील गंगा के विस्तार में पत्थर के टुकड़ों पर चलना होता है, विविध प्रकार के विविध रंग के छोटे छोटे गोलाकार पत्थर देख पड़ते हैं, कनखल के सामने दक्षिण गंगा के बायें नील पर्वत नामक एक पहाड़ है, जिसके नीचे से बहती हुई गंगा की एक धारा को नील धारा कहते हैं, जो कभी कभी सूख भी जाती है। पहाड़ी के नीचे गौरी कुण्ड के पास एक नये मन्दिर में गौरी-शंकर शिव-लिंग और ऊपर एक छोटे मन्दिर में नीलेश्वर शिव-लिंग है। गौरी कुण्ड का जल कभी कभी सूख भी जाता है।

दक्षेश्वर के निकट नील शैल के ऊपर नीलेश्वर शिव-लिंग है जिसके दर्शन से पाप नाश होते हैं उस जगह भी चण्डिका का स्थान है उसके निकट उत्तम कुण्ड है जिसमें स्नान करने से बड़ा आनन्द होता है।

उज्जैन का असमर्चित नामक ब्राह्मण बड़ा पापी था वह एक समय चोरों के साथ चोरी के लिये माया क्षेत्र में गया वहां उसे शिवभक्त ब्राह्मणों के सत्संग से ज्ञान उपजा। वह उनके उपदेश से गंगाजी के समीप महागिरि स्थान पर जाकर रात दिन महादेव का नाम रटने लगा सात दिनों के उपरान्त सदाशिव ने उसको दर्शन दिया और प्रसन्न होकर कहा कि हे ब्राह्मण! तुम आज से हमारे गण हो, जाओ तुम्हारा नाम नील होगा हम नीलेश्वर होकर इस स्थान पर विराजमान होंगे, इस पर्वत का नाम भी नील ही होगा, हम अंश रूप होकर सर्वदा इस स्थान पर तुम्हारे साथ रहेंगे, गंगाजी के तट पर जो हमारा कुण्ड है उसमें स्नान करने से मनुष्य हमारा रूप हो जायगा इस प्रकार नील पर्वत तथा नीलेश्वर की कथा है।

नीलेश्वर से दो मील दूर चंडी पहाड़ की चोटी पर

चंडी का मन्दिर है, मार्ग चढ़ाई का है, रास्ते में पानी नहीं मिलता मन्दिर दूर से दिखाई देता है ।

कनखल

कनखल बड़ा प्राचीन तीर्थ है, और हरिद्वार से दो मील की दूरी पर स्थित है। कनखल शब्द का भावार्थ यह है कि कौन ऐसा खल है जो कि यहाँ आकर श्रद्धा एवं विश्वास पूर्वक गंगा स्नान कर भगवान दक्षेश्वर महादेव का पूजन करे और उसके पाप जाय न हों, यहां पर श्री महादेव जी दक्षेश्वर के रूप में निवास करते हैं, जिसकी कथा इस प्रकार है—

पूर्व समय में दक्ष प्रजापति ने गंगाद्वार में राज किया आदित्य-वसु-साध्य-रुद्र आदि देवता इन्द्र के सहित वहां पर आगे थे। ऋषिगण भी पितरों तथा ब्रह्मा के साथ वहां इकट्ठे हुए थे। निमन्त्रित देववृन्द निज देवियों के सहित वहां उपस्थित थे उस समय दधीच क्रुद्ध होकर बोले कि जिस यज्ञ में भगवान शंकर पूजित न हों वह यज्ञ सर्वनाश का सूचक है, दधीच ने यह देखकर कि यहां श्री शंकर जी ने क्रोध से सर्वनाश अवश्यंभावी है, अतः यज्ञ से दूर रहना ही श्रेयस्कर

समझा ऐसा निश्चय कर वहां से पृथक हो दधीचि कहने लगे देखो यज्ञभोक्ता पशुपति हैं, वही इस यज्ञ में निमन्त्रित नहीं किये गये मुझे यह बोध होता है कि देवताओं ने एकता करके यह सब किया है, जो हो दक्ष का यह यत्न किसी प्रकार सिद्ध न होगा।

दक्ष ने अपना यज्ञपति विष्णु को बनाया और विधि से आहुति देनी आरम्भ की इससे श्री शिवजी ने क्रोधित हो तमतमाते हुए अपने मुख से ज्वालमाला शरीर वाले शस्त्रधारी एक भूत (गण) को उत्पन्न किया और उसको दक्ष के यज्ञ विध्वंस करने की आज्ञा दी, महाकाली भी अनुमति लेकर उसकी अनुगामिनी हुईं भगवान वीरभद्र ने भी उनके साथ अपने अनेकों गण यज्ञ विध्वंस करने के लिये भेज दिये। वह सब रौद्रगण दक्ष के यज्ञ मण्डल में पहुँचे उनके भयानक नाद से सब देवता भयभीत हो गये और पृथ्वी कांपने लगी रुद्रगणों ने वहां पर सब कुछ तहस नहस कर डाला, और उस प्रधान भूत ने दक्ष का शिर काट डालना चाहा इस पर ब्रह्मादि देवताओं ने उनकी स्तुति की और पूछा कि आप कौन हैं। फिर प्रसन्न होकर वह गण बोला कि मैं महादेव जी के क्रोध से उत्पन्न हुआ उनका एक गण

हूँ और वीरभद्र मेरा नाम है, यह देवी के क्रोध से उत्पन्न हुई भद्रकाली हैं, अब तुम अपना कल्याण चाहते हो तो अभी महादेव जी की शरण में जाओ।

तब दक्ष ने शिव की बड़ी स्तुति की जिससे महादेव जी अत्यन्त प्रसन्न हुए और बोले कि हे दक्ष ! इस यज्ञ में विघ्न होने से तुम निराश हो, मैंने पूर्व काल में भी तुम्हारा यज्ञ विध्वंस किया था उसी परम्परा के अनुसार यह सब किया गया है, अब तुम अपना मानसिक शोक दूर करो, ऐसा कह कर शंकर जी अपने गणों सहित अन्तर्ध्यान हो गये।

इस कनखल क्षेत्र में जहां श्री शिव जी ने दक्ष यज्ञ विध्वंस कराया उसी स्थान पर श्री महादेव जी लिंग रूप से स्थित हुए और दक्षेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुए, जिनके दर्शन से मनुष्य शिव समान हो जाता है। इसी कनखल क्षेत्र में अनेकों महात्माओं ने पूर्वकाल में तपस्या की थी।

कनखल के सम्बन्ध में कूर्म पुराण उपरिभाग छत्तीसवें अध्याय पर कनखल के स्नान का बड़ा पुण्य बताया है।

महाभारत के शल्य पर्व में यह भी लिखा है कि दक्ष के यज्ञ के समय सरस्वती आईं थीं और शीघ्रा से बह गईं, कनखल में गंगा सरस्वती कुरुक्षेत्र आदि के समान स्नान का फल मिलता है महाभारत के अनुशासन पर्व २५वाँ अध्याय में लिखा है कि गंगा द्वारकुशावर्त, बिल्वक, नील पर्वत और कनखल इन पाँच तीर्थों में स्नान करने से मनुष्य पाप रहित होकर सुरलोक को प्राप्त होता है। कूर्म पुराण में लिखा है कि हिमवान पर्वत और गंगा नदी सर्वत्र पवित्र हैं, सतयुग में नैमिषारण्य त्रेता में पुष्कर, द्वापर में कुरुक्षेत्र और कलियुग में कनखल तीर्थ प्रधान है। वामन पुराण में लिखा है कि कनखल में श्री प्रहलाद ने भद्रकाली और वीरभद्र का पूजन किया था। हिमालय की दूसरी कन्या उमा से भगवान रुद्र का विवाह हुआ तब से श्री भगवान महादेव उमा सहित इसी कनखल में निवास करने लगे।

कनखल में बहुत से ऐतिहासिक मन्दिर हैं जैसे कि (१) गंगा के तीर पर सती घाट के निकट मोटेश्वर महादेव का मन्दिर है इसके अलावा एक बड़ा शिव मन्दिर और एक छोटा शिव मन्दिर है, (२) एक राधा कृष्ण का मन्दिर है जो किसी रानी का बनवाया हुआ

है, इसमें राम-जानकी की, राधाकृष्ण तथा गंगाजी की मूर्तियाँ है, (२) वेद व्यास का मन्दिर है, शहर से दक्षिण की ओर दक्षेश्वर महादेव का मन्दिर है, मन्दिर छोटा बिना शिखर का है, इसके पश्चिम की ओर एक खिड़की है मेलों के समय यात्री लोग खिड़की से ही प्रवेश करते हैं। मन्दिर से उत्तर की ओर वीरभद्र और भद्रकाली की मूर्तियाँ हैं और पीछे सती कुण्ड है जिसकी भस्म यात्री लोग अपने साथ ले जाते हैं, कुण्ड के ऊपर चार पायों का छोटा गुम्बद है। मन्दिर और कुण्ड के मध्य में नन्दी की पाँच पुरानी मूर्तियाँ हैं। मन्दिर के आस पास तीन चार छोटे मन्दिरों में शिव लिंग और दालान में पाँच हाथ से अधिक बड़े महावीर (हनुमान) हैं।

भीमगोड़ा

भीम गोड़ा हर की पैड़ी से उत्तर में लगभग ३-४ मील है, इसके सम्बन्ध में कोई पौराणिक कथा हमारे देखने में नहीं आई, किन्तु यह किंवदन्ति प्रसिद्ध है कि महाभारत युद्ध के पश्चात् जब पाण्डव हिमालय में आये तो पहाड़ पर किसी स्थान पर ठहर गये, वहाँ पर रात के समय जब सोने लगे तो महाराज युधिष्ठिर ने भीमसेन

से कहा कि भैया तृषा है। यह आज्ञा सुन भीमसेन उठे और कहने लगे कि अभी नीचे जाकर गङ्गाजल ला देता हूँ। परन्तु महाराज युधिष्ठिर ने कहा कि भैया इस घोर अन्धेरी रात्रि में जब कि कोई मार्ग नहीं दीख रहा इतने नीचे कहाँ जाओगे। इसके लिए मैं आज्ञा नहीं देता, तब भीमसेन ने अपना गोड़ा जोर से दबाया कि उसी समय पहाड़ टूट कर वहीं पर गंगा का उद्गम हो गया, तब से यह स्थान भीम गोड़ा के नाम से प्रसिद्ध हुआ पिछले दिनों में पहाड़ से पानी गिरकर इस गढ़े में जमा हो जाता था अब सरकार ने पक्का कुण्ड बना कर गंगा पानी छुड़वा दिया है। जिससे कि और तीर्थों पर स्नान करके यहाँ भी यात्री स्नान करते हैं।

सप्त सरोवर

भीम गोड़ा से उत्तर की ओर भूपत वाला नामक एक स्थान है, उसे डेढ़ या दो मील आगे गंगा के किनारे सप्तसरोवर नामक स्थान है, इसी स्थान पर प्राचीन काल में बड़े बड़े ऋषि महात्मा तप किया करते थे, अब भी यह बड़ा सुन्दर एवं रमणीक स्थान है।

सप्त सरोवर के पीछे गंगा की जान्हवी तथा आगे

की गंगा भगीरथी कहलाती है, कुछ लोगों का मत कि सप्तसरोवर पर ही श्री जन्हु मुनी ने गंगा पान किया था, कोई कहते हैं कि वह कोई अन्य स्थान था। जो भी हो सप्तसरोवर बहुत महत्व का स्थान है।

पद्म पुराण के पाताल खण्ड ८२वें अध्याय में लिखा है कि वैशाख शुक्ला सप्तमी को जन्हु मुनि ने गंगा का पान किया था जिससे समस्त ग ा उनके पेट में समा गई फिर भगीरथ के प्रार्थना करने पर मुनी ने अपने दक्षिण कर्ण से गंगा को बाहर निकाल दिया था। इसी लिए इस सप्तमी का नाम गंगा सप्तमी पड़ा। इस दिन स्नान का बड़ा पर्व है और दूर दूर से यात्री स्नान करने आते हैं तथा मेला लगता है।

हरिद्वार-कनखल-ज्वालापुर की अन्य संस्थायें

—:o:—

हरिद्वार—हरिद्वार में श्रवणनाथ मन्दिर, श्रवणनाथ घाट तथा श्रवणनाथ पुस्तकालय है, साधु महाविद्यालय आदि महन्त श्री शान्तानन्द जी के बनाये हुए दिव्य स्थान हैं।

हरिद्वार ज्वालापुर सड़क पर ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम है, इस आश्रम मे सनातन धर्म के सिद्धान्तानुसार वेद वेदाङ्गों की शिक्षा दी जाती है, साथ में ही आयुर्वेदिक कालेज है, जिसमें प्राचीन व अर्वाचीन पद्धति के अनु-शिक्षा का प्रबन्ध है। (सूचना विभाग) इसके अलावा भोलाश्रम, गीताभवन तथा श्री १०८ बाबा कालीकमली वाला क्षेत्र का ब्रांच हैं जहाँ यात्री आकर सब बातें पूछते हैं।

कनखल—कनखल में बाबा काली कमली क्षेत्र हैं, रामकिशन मिशन सेवाश्रम है जहाँ बंगाली साधु सेवा भाव से जनता जनार्दन की सेवा करते हैं, रामकिशन मिशन वाली सड़क पर ही राजस्थान वानप्रस्थ आश्रम

है, यहाँ हरनन्यराय सूरजमल रूइया बम्बई वालों की भी एक बड़ी धर्मशाला है ।

ज्वालापुर—ज्वालापुर में गुरुकुल कांगड़ी जो पहले कांगड़ी में था तथा ज्वालापुर महाविद्यालय है, आर्य वानप्रस्थाश्रम और महिला विद्यालय आदि कई संस्थायें हैं ।

हरिद्वार से ऋषिकेश

हरिद्वार व कनखल आदि तीर्थों की यात्रा के अनन्तर यात्री ऋषिकेश को जाते हैं, हरिद्वार से ऋषि-केश तक रेल तथा लोरी सरविस भी मिलती है ।

१—परदूनी—भीमगोड़ा से ३ मील के फासले पर है, यहाँ बाबा काली कमली वाले क्षेत्र की धर्मशाला है ।

२—रायवाला—यहां रेल का स्टेशन है और जंकशन है, तथा काली कमली वालों की धर्मशाला है ।

३—सत्यनारायण—यहां पर प्रत्येक यात्री पहले रात्रीवास करते थे, अब भी मोटर आदि से उतर कर भगवान सत्यनारायण के दर्शन करते हैं, तथा चरणामृत पान करते हैं, यह मन्दिर तथा धर्मशाला और बड़ी गौशाला बाबा काली कमली वाले की है ।

४—बीबी वाला—सत्यनारायण से ढाई मील के फासले पर है, यहां पर बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला तथा प्याऊ का प्रबन्ध है।

५—दूध पानी—बीबी वाला से एक मील पर है, यहां पर श्री दूधनाथ महादेव का मन्दिर है, बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला तथा गौशाला है।

६—रामनगर (गंगाद्वार)—यहां पर काली कमली वाले ने सरकार से जमीन लेकर एक साधु आश्रम बनाया, इसमें साधु महात्माओं के रहने व भजन के लिए बड़े अच्छे स्थान बने हुए हैं, और इस उत्तम रमणीक स्थान में 'आत्मविज्ञान भवन' की स्थापना की जा रही है जिसके उद्देश्य यह हैं कि वर्तमान संसार में जो अशान्ति उत्पन्न होती जा रही है, उसको दूर करने के पौराणिक ढंग से आध्यात्मवाद का प्रचार किया जाय। साधु-संन्यासी-महात्मा-तपस्वी लोग यहां आध्यात्मवाद की शिक्षा देंगे और जनता में अपने देश की स्वतन्त्रता को दृढ़ बनाने के भाव भरेंगे।

ऋषिकेश

ऋषिकेश एक पवित्र स्थान है, यहां प्राचीन काल

में बड़े बड़े साधु महात्मा तपश्चर्या किया करते थे, इसी लिए इस स्थान का नाम ऋषिकेश पड़ा है, क्योंकि ऋषिक् नाम है इन्द्रियों का जहां शमन किया जाय।

ऋषिकेश के सम्बन्ध में पुराणों में क्या लिखा है! उसका नाम ऋषिकेश कैसे पड़ा? यह हम संक्षिप्त तौर पर साधु के पाठकगणों को बताना उचित समझते हैं। (स्कन्द पुराण) केदार खण्ड दूसरा भाग १६वां अध्याय विष्णु भगवान् ने १७वे मन्वन्तर में मधु और कैटभ दोनों दैत्यों को मारकर उनके मेद से पृथ्वी को बनाया उसके उपरान्त वे पृथ्वी तल के सैकड़ों क्षेत्रों में भ्रमण करते हुए गंगाद्वार में गये। बड़े तेजस्वी रैभ्य मुनि बहुत काल से तप कर रहे थे। विष्णु भगवान् ने आम्र-वृक्ष में प्राप्त हो कर रैभ्य मुनि को जो कुब्ज अर्थात् कुबड़े हो गये थे। दर्शन दिया। मुनि भगवान् को देख कर बार बार दंडवत् करके स्तुति करने लगे। भगवान बोले हे मुनीश्वर! मैं प्रसन्न हूँ तुम इच्छित वर मांगो। मुनि बोले हे भगवन्! यदि आप प्रसन्न हैं तो आप इस स्थल पर नित्य निवास करें सदा तुम्हारे और मेरे नाम से यह स्थान प्रसिद्ध रहे भगवान ने कहा कि ऐसा ही

होगा कुब्जरूप तुमने आम्रवृक्ष में प्राप्त मुझको देखा इस कारण से इस स्थान का कुब्जाम्रक नाम होगा।

काली कमली का प्रबन्ध

—:o:—

श्री बदरीनारायणजी की यात्रा में काली कमलीक्षेत्र का प्रबन्ध प्रशंसा के योग्य है। श्री १०८ स्वामी विशुद्धानन्द गिरिजी महाराज ने बद्रीनाथ के ऊपर घोर तपस्या कर भगवान के आदेशानुसार एक काले कम्बल की अलफी धारण करके कलकत्ते जाकर धनिक मारवाड़ियों के सामने बड़े फूटे घड़े को धधकती आग से जलता अपने नंगे सिर पर धारण कर यह उपदेश दिया कि श्री बद्रीनाथ में धर्मशाला, सदावर्त खुलने चाहियें ऐसे त्यागी और परोपकारी महात्मा के अमृतरूपी वचनों को शिरोधार्य कर मारवाड़ी समाज ने "ऋषिकेश" में श्री स्वामीजी की कुटिया बनवा उनके कथनानुसार अनेक स्थानों पर धर्मशाला, सदावर्त, पानी प्याऊ

खुलवाई। तेरह साल तक महात्मा जी ने इस परोपकारी काम को अपने सामने कराया और सं० १९५३ में स्वर्गवासी होगये। स्व० श्री १०८ बाबाजी का चेला खास तो कोई नहीं था लेकिन स्वामीजी का हाथ-बंटाने वाले कई साधु महात्माओं में दो मुख्य थे, एक तो बाबा रामनाथ जी दूसरे स्वामी आत्मप्रकाश जी कुछ दिन दोनों महात्मओं ने इस काम को सम्हाला बाद आपसी कलह के कारण स्वासी आत्मप्रकाश जी ने स्वर्गाश्रम, नाम की एक संस्था अलग खोली, जो एकान्त अति सुन्दर स्थान बाबा काली कमली के नाम से ही प्रसिद्ध है। बाबा काली कमली के क्षेत्र ऋषिकेश के एकमात्र सर्वेसर्वा बाबा रामनाथ जी हुए और उन्होंने इस संस्था की बड़ी भारी उन्नति की और उन्तीस वर्ष काम करने के बाद सं० १९८२ में परलोक सिधारे। बाद बाबा मनीराम जी ने क्षेत्र का कार्य सम्हाला और एक मारवड़ी कमेटी भी प्रबन्धक हुँई और काम भी अच्छा चला किन्तु सं० १९९७ में बाबा मनीराम जी भी परलोक सिधारे और अब कलकत्ता की समिति के आधीन क्षेत्र का प्रबन्ध है।

क्षेत्र का कार्य

बाबा काली कमली का प्रधान कार्यालय ऋषिकेश में है। इनकी ओर से पहाड़ों में तथा देश-देश में क्षेत्र खुले हुए हैं। साधुओं को बना बनाया भोजन मिलता है इस क्षेत्र की ओर से श्री बद्रीनाथ यात्रा में प्रायः ८-१० मील पर धर्मशाला सदावर्त हैं। लगभग ६५ सदावर्त ६५ औषधालय ७० धर्मशाला ५० पानी की प्याऊ ५ गौशाला ३ पाठशाला तथा आयुर्वेद महाविद्यालय और औषधि निर्माणशाला हैं। बद्रीनाथ जाने वाले साधु महात्मा संत और गरीबों को ऋषिकेश से सदावर्त की चिट्ठी तमाम यात्रा को ले जानी चाहिए। बड़े आदमियों को खातिर की चिठियां मिलती हैं। जिसे देखकर सभी धर्मशालाओं के चौकीदार अच्छी जगह देकर खातिर करते हैं।

पंजाबी सिन्ध क्षेत्र का प्रबन्ध

काली कमली क्षेत्र के ही समान "सिन्ध पंजाब क्षेत्र" नाम वाली एक संस्था है जिसका प्रबन्ध बहुत ही सुन्दर है। इस संस्था का प्रधान कार्यालय भी ऋषिकेश में ही है। इसकी भीमगौड़ा, कनखल आदि में बड़ी

विशाल शाखायें हैं, बद्रीनारायण यात्रा में भी इनकी ओर से अन्न क्षेत्र हैं। ऋषिकेश में पाठशाला, अंगरेजी दवाखाना भी इस उन्नतिशील संस्था के हैं।

इन्दौर राज्य की ओर से सदावर्त

यह सदावर्त बहुत थोड़े स्थान पर है और अभ्यागतों को मिलता है।

ऋषिकेश में छोटे छोटे क्षेत्र हैं। यहां कई धर्मशाला हैं।

यहाँ श्री भरत जी का मन्दिर है तथा एक वैष्णव सम्प्रदाय का पुष्कर मन्दिर है, चन्द्रभाग के मध्य में श्री चन्द्रेश्वर महादेव का मन्दिर है, वीरभद्र तथा सोमेश्वर महादेव के मन्दिर हैं, मुनि की रेति में श्री शत्रुघ्न जी का मन्दिर है।

कोल घाटी में दण्डी स्वामी रहते हैं, अच्छी धारणा और निष्ठा वाले विद्वान हैं। झाड़ियों में विरक्त तथा अवधूत लोग रहते हैं, मुनि की रेती में कैलाश आश्रम है, वहां के महन्त बहुत अच्छे विद्वान् और अच्छी निष्ठा के साधु हैं, इस से थोड़ा आगे श्री शिवानन्द जी की आनन्दी हैकुट, जहांपर बड़े बड़े अमेरिकन, अंगरेजतथा अन्य जन आध्यात्मवाद की शिक्षा पाते हैं।

ऋषिकेश से टिहरी ५१ मील है, ऋषिकेश से ही उत्तराखण्ड की यात्रा आरम्भ होती है यहां से ही सीधे केदारनाथ जी तथा बद्रीनाथ जी व जमुनोत्तरी गंगोत्री को जाते हैं।

ऋषिकेश से लोरी सरविस टिहरी तक जाती है, उससे आगे यात्री धरासू होकर यमुनोत्री जाते हैं। और उत्तर काशी होकर गंगोत्री चले जाते हैं, जिसके स्थानों का वर्णन आगे दिया जायगा। टिहरी से उत्तर काशी तक नई सड़क लोरी जाने के लिये बन रही है आशा है कि इसी वर्ष चालू हो सकेगी।

लक्ष्मण झूला और तपोवन

ऋषिकेश से तीन मील के फासले पर गंगा पार की भूमि को तपोवन कहा जाता है। प्राचीन काल में यहाँ तपस्वी महात्माओं का वास होता था, वहाँ पपश्चर्या करते थे इसी से इस स्थान का नाम तपोवन प्रसिद्ध हुआ। अब भी जो तपोवन के चावल होते हैं वह बहुत बढ़िया श्रेणी के होते हैं।

पहले इस स्थान पर रस्सों का पुल होता था उसी

से यात्री लोग गंगा पार करते हुऐ झूल जाते थे इसी कारण से इसका नाम लक्ष्मण झूला प्रसिद्ध हो गया यहां पर लक्ष्मण जी गणेशजी हनुमान जी के मन्दिर हैं बड़े सुन्दर स्थान हैं, एक बंगला और पुलिस की चौकी है, बाबा काली कमली की धर्मशाला है। यहां पर ४५० फीट लम्बा दर्शनीय पुल है।

स्वर्गाश्रम

स्वर्गाश्रम लक्ष्मण झूला के पुल से भी यात्री जाते हैं, और मुनि की रेती से नावों का भी प्रबन्ध रहता है उससे सीधे चले जाते हैं, और स्वर्गाश्रम में बड़े सुन्दर स्थान हैं।

गीता भवन

गीता भवन श्रीमान् भक्तराज जी सेठ जयदयाल गोयन्का गीता प्रेस गोरखपुर वालों ने बनाया है, यह बहुत सुन्दर है, ऊपर की मंजिल में एक विशाल हाल बनाया गया है। जिसमें गीता के श्लोक तथा रामायण की चौपाइयां लिखी हुई हैं। यहां सत्सङ्ग का अच्छा प्रबन्ध है तथा यहां वटवृक्ष के नीचे चैत्र से आषाढ़ तक

बराबर सत्सङ्ग तथा उपदेश होता है, इन महीनों में सत्सङ्गियों का बड़ा समारोह रहता है।

लक्ष्मण झूले का इतिहास

कुब्जाम्रक तीर्थ के उत्तर ऋषि पर्वत के निकट गङ्गा के पश्चिम तट पर मुनियों का तपोवन है उस स्थान के नीचे के भाग की एक गुहा में शेष जी स्वयं निवास करते हैं।

श्री रामचन्द्र जी रावण को मार कर सीता जी और लक्ष्मण जी के सहित अयोध्यापुरी में आये और अपने पिता के राज सिंहासन पर बिराजे उसके पश्चात् लक्ष्मण जी को राजयक्ष्मा का रोग हुआ। श्री रामचन्द्र के पूछने पर महर्षि वशिष्ट ने कहा कि लक्ष्मण ने रावण के पुत्र इन्द्रजीत को जो ब्राह्मण था और से हार कर तप करने जाना चाहता था। 'मारा' उसी पाप से इनको यह रोग हुआ है, यह कुब्जाम्रक तीर्थ में जाकर तप करें वह रोग से विमुक्ति हो जायँगे और तुम भी रावण बध के पाप से छूटने के लिए तप करो।

(स्कन्द पुराण के खण्ड २२वाँ अध्याय) कुब्जाम्रक से डेढ़ कोस उत्तर गंगा के तट में अब तक शेष जी

विद्यमान हैं श्री लक्ष्मण जी ने वहां जाकर निराहार रह शिव का तप किया उसके पश्चात् वह सौ वर्ष वायु भोजन करके और सौ वर्ष पत्र, फल खाकर एक चरण से खड़े होकर तप करते रहे तब शंकर भगवान ने प्रकट होकर उनसे बोले कि लक्ष्मण हमारे प्रसाद से तुम्हारा सब पाप छूट गया, इस स्थान में एक बार स्नान करने से मनुष्य तीन करोड़ व ब्रह्म हत्या से विमुक्त हो जायगा तुमने तो मुनिहंता पापी राक्षस को मारा है तुम्हारा रोग अब छूट गया, अब से यह स्थान तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होगा और हम लक्ष्मणेश्वर नाम से यहाँ स्थित रहेंगे मेरे दर्शन से पापियों का भी मोक्ष हो जायगा। शिवजी के अन्तर्द्धान हो जाने पर लक्ष्मण जी अपने पूर्ण अंश से वहां स्थित हुए और उनके बायें भाग में लक्ष्मणेश्वर शिव (प्रतिमा रूप) विराजमान हैं। जिनके दर्शन करने से सम्पूर्ण पाप छूट जाता है गंगा के पश्चिम तीर पर लक्ष्मण कुण्ड है वहाँ स्नान और जप करने से अनन्त फल लाभ होता है। इसी प्रकार की कथा—

शिवपुराण (८वाँ खण्ड १५वाँ अध्याय) में लिखा है कि कुब्जाम्रक तीर्थ के पास गंगा के बीच सोमेश्वर महादेव हैं। गंगा के पश्चिमी तट पर तपोवन है वहां

ही लक्ष्मण जी ने बड़ा तप किया था और शिवजी की कृपा से पवित्र हो गये।

और शिवजी लिंग के रूप से वहाँ विराजमान हुए इसी से लक्ष्मणेश्वर नाम से विख्यात हुए लक्ष्मण जी भी शेष का शरीर धारण कर उसी स्थान पर स्थित हुए हैं। इसी से इस स्थान का महत्त्व शास्त्रों में बताया है। अब वर्तमान में भी इस स्थान पर बैठने वालों को बड़ी शान्ति प्राप्त होती है।

इससे आगे बद्रीनाथ की यात्रा का मार्ग आरम्भ होता है, और वह इस प्रकार है—

१ गरुड़चट्टी—लक्ष्मण झूला से दो मील की दूरी पर है। यहां पर बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है।

२ फुलवाड़ी—गरुड़चट्टी से दो मील फुलवाड़ी चट्टी है गंगाजी के तट पर है।

३ गूलरचट्टी—फुलवाड़ी से गूलरचट्टी दो मील है नदी पास है तथा आगे हूल नदी में पुल है।

४ महादेवशैण—गूलरचट्टी से दो मील है यहां पर बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है और महादेव

तथा गरुड़ जी का मन्दिर है यहां बाबा काली कमली वाले की ओर से प्याऊ तथा सदावर्त का प्रबन्ध है।

५ नाई मोहन—महादेव रौन से एक मील नाई मोहन चट्टी है यहां से चार मील की चढ़ाई शुरू होती है।

६ छोटी बीजनी—नाई मोहन से एक मील की दूरी पर है।

७ बड़ी बीजनी—छोटी बीजनी से आधा मील है यहां पर प्याऊ का प्रबन्ध है।

८ न्योड़ खाल—बड़ी बीजनी से न्योड़खाल डेढ़ मील की दूरी पर है।

९ कुण्ड चट्टी—न्योड़ खाल से कुण्डचट्टी डेढ़ मील है यहाँ पर बाबा काली कमली वाले की प्याऊ है तथा यहां पर एक बहुत मनोरंजक झरना है और तीन मील सीधी सड़क है।

१० बन्दरमेल—कुण्ड चट्टी से बन्दरमेल तीन मील पर है यहां पर बाबा काली कमली वालों की ओर से प्याऊ का प्रबन्ध होता है, यहां से आगे रास्ता उतराई का है।

११ महादेव—चन्दरमेल से तीन मील महादेव चट्टी है गंगा जी के पार है मार्ग सीधा है।

१२ ओखलाघाट—महादेव चट्टी से ढाई मील की दूरी पर है और बाबा काली कमली वालों की ओर से प्याऊ का प्रबन्ध होता है।

१३ सेमलचट्टी—ओखलाघाट से डेढ़ मील है तथा प्याऊ का प्रबन्ध है।

१४ कांडी चट्टी—सेमलचट्टी से तीन मील की दूरी पर कांडी चट्टी है बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है तथा गोपाल जी का मन्दिर है। धर्मशाला में बर्तन तथा वस्त्रों का प्रबन्ध है।

१५ भैरोंखाल—कांडी से एक मील की दूरी पर है यहां पर प्याऊ का प्रबन्ध है यहां से दो मील उतराई है।

१६ व्यासघाट—भैरों खाल से तीन मील है यहां पर बाबा काली कमली वालों की धर्मशाला है डाकखाना १४१४ फीट जगह है। यहां पर व्यास जी तथा रामेश्वर महादेव का मन्दिर है और व्यास गंगा का पुल है व्यासदेव ने यहां पर तपस्या की थी। इसी नदी में ६ मील पूरब नैय्यरडैम ६ सौ फीट ऊँचा बन रहा है।

१७ मोटा चट्टी—व्यास घाट से एक मील की दूरी पर मोटा चट्टी है।

१८ छालरी—मोटा चट्टी से दो मील की दूरी पर है यहां से ६ मील देवप्रयाग तक सीधा रास्ता है।

१९ उमरासू—छालरी से दो मील की दूरी पर है।

२० सोड़ चट्टी—उमरासू से ढाई मील की दूरी पर है यहां एक सुन्दर झरना है।

२१ देवप्रयाग १। मील है।

देवप्रयाग के नामकरण का इतिहास

सतयुग में देव शर्मा नामक प्रसिद्ध मुनि हुआ, वह देव प्रयाग में जाकर विष्णु भगवान का तीव्र तप करने लगा, जब मुनि ने दस सहस्र वर्ष तक पत्ता खाकर और एक हजार वर्ष एक पाद से खड़ा रह कर उग्र तप किया, तब लक्ष्मी जी सहित विष्णु भगवान प्रकट हुए और बोले कि हे तपोधन! मैं प्रसन्न हूँ तुम इच्छित वर

मांगो देव शर्मा बोले कि हे प्रभो] हमारी निश्चल प्रीति तुम्हारे चरणों में रहे यह पवित्र क्षेत्र कलियुग में सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाला होय, तुम सर्वदा इस इस क्षेत्र में निवास करो और जो पुरुष इस क्षेत्र में तुम्हारा पूजन और संगम में स्नान करें उनको परमगति मिले, भगवान से कहा कि हे मुनि ! ऐसा ही होगा में त्रेतायुग में राजा दशरथ का पुत्र राम नाम से विख्यात होकर रावणादिक दैत्यों को मारूँगा और कुछ दिनों तक अयोध्या का राज भोग कर के इस स्थान पर आऊँगा तब तक तुम इसी स्थान पर निवास करो फिर हमारा दर्शन पाकर तुम परमगति पाओगे तब से इस तीर्थ का नाम तुम्हारे नाम के अनुसार देव प्रयाग होगा, विष्णु भगवाने के चले जाने पर देव शर्मा उस स्थान में रहने लगा, विष्णु त्रेता युग में राजा दशरथ के गृह जन्म लेकर राम नाम से विख्यात हुए उन्होंने रावणबध करने के पश्चात् जाकर देव शर्मा को दर्शन दिया और कहा कि हे मुनीश्वर ! अब से यह तीर्थ लोक में प्रसिद्ध होगा । तुमको सायुज्य मुक्ति मिलेगी । ऐसा कह कर रामचन्द्र जी सीता और लक्ष्मण के सहित उस स्थान पर निवास करने लगे ।

ब्रह्मा जी की तपस्या

ब्रह्माजी ने सृष्टि के आरम्भ में दश सहस्त्र और दस सौ वर्ष समाधिनिष्ठ होकर कठिन तप किया। तब विष्णु भगवान उस स्थान में प्रकट हुए और बोले कि हे ब्राह्मण ! वर माँगो ब्रह्मा जी ने कहा कि हे प्रभो ! मुझको जगत की सृष्टि करने का सामर्थ्य होय और यह स्थान पवित्र तीर्थ हो जाय, भगवान बोले कि तुम सृष्टि करने में समर्थ होगे यद्यपि यह तीर्थ पवित्र है तिस पर भी २८ मन्वन्तर में जब राजा भगीरथ इस मार्ग से गंगाजी को ले जायगा तब से यह तीर्थ अति पवित्र हो जायगा और इस स्थान का नाम ब्रह्मा तीर्थ होगा, अब ब्रह्मकुण्ड के नाम से प्रसिद्ध है।

देव प्रयाग के तीर्थों का महात्म्य

ब्रह्म तीर्थ के निकट महामति वशिष्ठ जी ने निवास किया, जो मनुष्य वहाँ एक बार भी स्नान करता है वह किसी स्थान में मरे अवश्य ब्रह्म में लीन होगा।

गंगा और शान्ता नदी के संगम के पास जिसकी उत्पत्ति दशरथाचल से हुई है शिव तीर्थ है, जहाँ श्री रामचन्द्र जी ने अनेक शिवलिंग स्थापन किये हैं। शिव

तीर्थ के ऊपर के मार्ग में बेताल कुण्ड के समीप बैताल की शिला है बैताल कुण्ड में स्नान और शिला का स्पर्श करके नारायण का ध्यान करने से सर्व यज्ञ, तीर्थ और दान करने का फल प्राप्त होता है उस कुण्ड के प्रभाव से बड़े बड़े बैताल परमगति को पाये हैं उस कुण्ड और शिला पर स्नान दान और पितरों के पिण्ड दान करने का कोटि गुणा फल लाभ होता है।

बैताल तीर्थ से ऊपर एक बाण की दूरी पर सूर्य तीर्थ है जहाँ स्नान करने से मनुष्य कुष्ठ रोग से विमुक्त हो जाता है। पूर्व काल में मेधातिथि नामक ब्राह्मण ने देव प्रयाग में जाकर सूर्य भगवान का तप किया था। सूर्य भगवान ने प्रकट होकर उससे कहा कि वर माँगो। मेधातिथि बोले कि हे भगवान्! तुम्हारे चरणों में सदा मेरी भक्ति होय। तुम हमारे साथ यहाँ निवास करो यह पवित्र कुण्ड और यह तीर्थ तीनों लोकों में विख्यात हो जाय सूय भगवान् ने कहा कि ऐसा ही होगा तब से यह तीथ पवित्र और प्रसिद्ध हुआ। माघ सुदी सप्तमी के दिन सूय कुण्ड में स्नान करने वाला मनुष्य बहुत काल तक सूर्य लोक में निवास करके ब्राह्मण के घर जन्म लेकर वेद वेदान्त पारंगत होता है।



Background info

Total budget

117500 → 125000 [illegible]

[illegible]

तीर्थ पौष्पमाल नाम से प्रसिद्ध होगा, यहां स्नान दान जप होम करने वालों पर मैं प्रसन्न हूँगा, इस स्थान पर पितरों के तर्पण करने से पितर लोग असंख्य वर्ष पर्यन्त स्वर्ग में निवास करेंगे, उसी समय वह किन्नरी शाप से विमुक्त होकर विष्णु धाम को चली गई।

श्री वामन भगवान के चरण स्पर्श से जल धारा

जिस समय वामन जी ने अपने चरण से भूमण्डल को नापा था उसी समय समय उनके चरण की अंगुली के नख से जल की धारा निकली, वह ध्रुव के मण्डल तथा सप्तर्षि मण्डल होती हुई मेरू के शृंग पर ब्रह्मलोक में गिरी, वहां से वह धारा ४ भागों में विभक्त होकर पृथ्वी में आई और क्षीर समुद्र में मिली, उनमें सीता नामक धारा गन्धमादक के शिखर पर गिरी भद्री पूर्व दिशा में भद्राश्ववर्ष में गई चक्षुनाम धारा माल्यवान के शिखर से पश्चिम दिशा में केतुमाल पर्वत पर गई और अलकनन्दा नामक धारा दक्षिण को बहती हुई हिमालय पर आई यहां शिवजी ने उसको अपनी जटा में रख लिया। कुछ दिनो के उपरान्त राजा भगीरथ ने

शिवजी को प्रसन्न करके अपने पितरों के उद्धार के लिए उनसे उस गंगा को मांगा, शिवजी ने गंगा को दिया, गंगा हिमालय से नीचे के शृंग पर गिरी उनके प्रबल वेग से शृंग के दो भाग हो गये, इस कारण गंगा दो धारा होकर भारतवर्ष में आई। उनमें से एक धारा अलकापुरी होकर आई इसलिए उसका नाम अलकनन्दा पड़ा, देवप्रयाग में आकर दोनों धारा फिर एक में मिल गई। संगम से बाणाजा नदी तक देवप्रयाग क्षेत्र है।

संगम के पूर्व भाग में गंगा के दक्षिण तट पर तुण्डीश्वर महादेव हैं अलकनन्दा के किनारे एक पवित्र कुण्ड है जिसके निकट तुण्डी भीलनी ने बहुत काल तक शिव का तप किया था जिससे शिवजी वहां तुण्डीश्वर नाम से स्थित हो गये।

श्री रामचन्द्रजी ने देवप्रयाग में जाकर विश्वेश्वर शिव की स्थापना की। उससे ऊपर क्षेत्रराज भैरव है। जो मनुष्य विश्वेश्वर के बिना दर्शन किये हुए तीर्थ यात्रा करते हैं उनका सम्पूर्ण फल निष्फल हो जाता है क्षेत्रपाल भैरव का यथाविधि पूजन करके तब रामचन्द्र जी के दर्शन करना चाहिये।

देवप्रयाग वर्णन

देवप्रयाग—देवप्रयाग के पास से गंगा उत्तर से आई है और अलकनन्दा पूर्वोत्तर से आकर भागीरथी में मिल गई है, देवप्रयाग के पास अलकनन्दा पर लोहे का पुल है वह पुल दोनों किनारों के पायों के भीतर २५० फीट लम्बा और भीतरी २४ फीट चौड़ा है अलकनन्दा के बायें किनारे पर जिसको वाह कहते हैं में बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है जिसमें सब तरह की दुकानें हैं वे सब दुकानें सन् १८१४ की बाढ़ से बह गई अब वहाँ दो चार मकान बने हैं और एक डाकखाना भी है।

अलकनन्दा के दाहिने और गंगा के बायें संगम के पास समुद्र के जल से २२६६ फीट ऊपर पहाड़ के बगल पर देवप्रयाग बसा है, पुल के पश्चिम चौरस फर्श बीच में रघुनाथ जी का बड़ा मन्दिर है, मन्दिर के शिखर पर सोने का सुन्दर कलश और छत्र लगे हैं भीतर रघुनाथ जी की श्यामरंग की विशाल मूर्ति खड़ी है उनके दोनों चरणों और हाथों पर चाँदी का जड़ाव शिर पर सेनहरा मुकुट हाथों में धनुष बाण और कमर में ढाल

तलवार है, रघुनाथ जी के बायें एक सिंहासन में श्री जानकीजी और दाहिने राम और लछमण की मूर्ति हैं जो रामनवमी और वसन्त पंचमी आदि उत्सवों में बाहर के पत्थ के सिंहासन पर बैठाई जाती है मन्दिर के आगे जगमोहन से बाहर पीतल की बनी हुई गरुड़ की बड़ी मूर्ति बनी हुई है मन्दिर के दाहिने बद्रीनाथ महादेव और कालभैरव महाबीर जी और बायें महादेव हैं लोग कहते है कि यह रघुनाथ जी की मूर्ति शंकराचार्य की स्थापित की है। यहाँ का पुजारी महाराष्ट्र ब्राह्मण है मन्दिर का चोबदार सवेरे के दर्शन के समय एक पैसा लेकर यात्री को मन्दिर में जाने देता है।

रघुनाथजी के मन्दिर से १०० सीढ़ी से अधिक नीचे भागीरथी और अलकनन्दा का संगम है इस संगम पर अलकनन्दा के समय जल के नीचे पड़ गये। अब इनमें कोई स्नान नहीं कर सकता है अब उस स्थान के ऊपर मुण्डन और स्नान होता है और जब कि आटे की १६ गोलियां बनाकर पितरों का पिण्डदान दिया जाता है वहां एक छोटी और एक बड़ी गुफा हैं छोटी गुफा में श्री महादेव स्थित हैं।

सन् १८६४ ई० की बाढ़ के समय रघुनाथ जी के

मन्दिर के नीचे की बस्ती बाजार धर्मशाला और कई देव स्थान बह गये और ऊपर के सब बच गये उस समय ७० फीट ऊँचा पानी चढ़ा था देवप्रयाग के पुराने लोग कहते हैं कि बाढ़ में गंगाजी का पानी जब तक बराबर चढ़ता गया जब तक पानी ने मन्दिर में प्रवेश करके श्री रघुनाथ जी के चरण स्पर्श न कर लिये तदुपरान्त पानी चरण स्पर्श करते ही तुरन्त घटना शुरू हो गया थे श्री रघुनाथजी के चमत्कार का नमूना है इसके बाद दुबारा देव प्रयाग की पूर्व ऊँची जमीन पर नई बस्ती बसी, रघुनाथ जी के मन्दिर के उत्तर एक छोटी धर्मशाला और मन्दिर से करीब २०० सीढ़ी के ऊपर पर्वत पर क्षेत्रपाल का मन्दिर है देवप्रयाग में काली कमली का सदाव्रत है। बद्रीनाथ के पण्डे देवप्रयाग में ही रहते हैं पण्डे लोग वहाँ से या हरिद्वार से ही धनी यात्रियों के साथ बद्रीनाथ तक जाते हैं देवप्रयाग गढ़वाल जिले के पाँच प्रयागों में से एक है दूसरे रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग नन्दप्रयाग और विष्णुप्रयाग उससे आगे मिलेंगे।

संगम के उत्तर स्थान पर गंगा के किनारों पर वाराह शिला बेताल, शिला, पोष्पमाल तीर्थ इन्द्रद्युम्न तीर्थ, सूर्यतीर्थ और भरतजी का मन्दिर है। बेताल

शिला पर पिण्डदान करते हैं।

गंगोत्री के यात्री देवप्रयाग से गंगा के किनारे किनारे टिहरी होकर गंगोत्री जाते हैं देवप्रयाग से लग-भग २४ मील टिहरी और टिहरी से ६६ मील गंगोत्री है यात्री लोग लौटते समय श्रीनगर या त्रियुगीनारायण होकर केदारनाथ और बद्रीनाथ जाते हैं।

केदारनाथ और बद्रीनाथ के यात्रियों को देवप्रयाग से गंगा छूट जाती है उनको वहाँ से अलकनन्दा के बायें किनारे चलना पड़ता है वे लोग लक्ष्मण झूला से देव प्रयाग तक ३० मील गंगा के किनारे किनारे आते हैं लक्ष्मण झूला, फुलवाड़ी चट्टी, महादेवचट्टी, व्यासचट्टी और देवप्रयाग केवल इन्हीं ६ स्थानों में स्नान और जल पान के लिये गंगाजल मिलता है शेष स्थानों से ऊपर से गंगा दीख पड़ती है।

देवप्रयाग में तारघर, डाकखाना, अस्पताल, पुलिस तथा बंगला आदि सभी चीजें हैं, तथा देवप्रयाग की ऊँचाई १५५० फीट है।

देवप्रयाग से केदारनाथ तथा बद्रीनाथ के यात्री अलकनन्दा के बायें किनारे चलते हैं, यहाँ से भागीरथी

छूट जाती है, इस यात्रा में भागीरथी का सम्बन्ध देव प्रयाग तक ही है, इससे आगे मन्दाकिनी पिण्डरचौली अलकनन्दा आदि गंगायें मिलती हैं।

१ धनेश्वर—देवप्रयाग से आधा मील सुरम्य स्थान है।

२ देवानीगाड़ १ मील सीधा रास्ता है।

३ कुलासू २॥ मील सीधा रास्ता है।

४ रानीबाग—४ मील पर है, य.ाँ डाक बँगला है, तथा अच्छी दुकानें हैं, पहले यहाँ धर्मशाला तथा पक्का बाग था जो १८२४ की बाढ़ में बह गया था।

५ रामपुर—रानीबाग से ३ मील है, यहां बाबा काली कमली की ओर से धर्मशाला बनाने की तजवीज है।

६ डिगोली—रामपुर से २ मील पर है।

७ बिल्व केदार—डिगोली से २ मील है। इस बिल्व केदार का ही नाम भीलेश्वर है, और भीलेश्वर नाम कैसे पड़ा।

भीलेश्वर महादेव के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न पौराणिक कथायें

भीलेश्वर

भीलेश्वर मन्दिर के पहले खाण्डव नदी अलकनन्दा से मिल गई है। अलकनन्दा के बायें किनारे पर गुम्बज दार छोटे मन्दिर में अनगढ़ भीलेश्वर शिवलिंग है, उनका तांबे का अर्घा और चांदी का छत्र बना है पहला मन्दिर सन् १८९४ की बाढ़ से बह गया। अब नया मन्दिर बना है शिवलिंग वही है मन्दिर के निकट छोटी छोटी कोठरियाँ हैं इसी स्थान पर भील रूपधारी सदाशिव और अर्जुन का परस्पर युद्ध हुआ था।

दुग्दम नामी एक छोटी नदी उस पार अर्थात् अलकनन्दा के दाहिने आकर उसी में मिलती है जिसपर एक ही मेहराबी का पुल है पुराणों में उस संगम का नाम दुग्दप्रयाग और उसके पास के पर्वत का नाम इन्द्रकील पर्वत लिखा है उस स्थान पर एक नया शिव मन्दिर बना है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा महाभारत वनपर्व (३७वाँ अध्याय) अर्जुन तपस्वियों से सेवित अनेक पर्वतों को देखते हुए हिमालय पर्वत के इन्द्रकील नामक स्थान पर पहुँचे उस स्थान पर तपस्वी के रूप में इन्द्र ने अर्जुन को दर्शन दिया और कहा कि हे तात ! जब तुम शूल-धारी भूतों के स्वामी शिव का दर्शन करोगे तब हम तुमको सब शस्त्र देंगे । अब तुम परमेश्वर शिव के दर्शन का यत्न करो उनके दर्शन होने से सिद्ध होकर स्वर्ग में जाओगे । इन्द्र के जाने पर अर्जुन वहीं बैठकर योग करने लगा (३८वाँ अध्याय) अर्जुन का उग्र तप देख कर मुनीश्वरों ने महादेव के पास जाकर अर्जुन के तप की प्रशंसा की (३९वाँ अध्याय) । तपस्वियों के जाने पर सदाशिव किरात का वेष धारण कर महामेघ की शिखा के समान शरीर बना कर धनुष बाण लिए हुए अपने समान वेषवाली पार्वती और अनेक भूतों के सहित किरात वेषधारिणी अनेक स्त्रियों को संग ले उस वन में जा पहुँचे ।

उसी समय दनु का पुत्र मूक नामक राक्षस का रूप बनाकर मारने की इच्छा से अर्जुन को देख रहा था तब अर्जुन ने गांडीव धनुष लेकर उस राक्षस से कहा

कि मैं अभी तुमको यम के घर पहूँचाता हूँ। उस समय किरात रूपी महादेव ने अर्जुन से कहा कि पहले मैंने इसको मारने की इच्छा की है, तुम इसको मत मारो। परन्तु अर्जुन ने उनका निरादर कर सूअर पर बाण चलाया ठीक उसी समय किरात ने भी सूअर को लक्ष्य करके उस पर बाण चलाया। जब वह मर गया तब यह कहकर कि मेरे ही बाण से यह सूअर मरा है अर्जुन और किरात दोनों परस्पर वादविवाद करने लगे। अनन्तर अर्जुन को महाक्रोध हुआ, वह बाणसे किरात को मारने लगे किरात अर्जुनके बाण को सहने लगा उसके पश्चात् वे दोनों परस्पर एक दूसरे को बाणों से विद्ध करने लगे तब अर्जुन ने किरात पर बाणों की वर्षा की किरात रूपधारी शिव प्रसन्न चित्त से बाणों की वर्षा को सहते हुए पर्वत के समान अचल हो खड़े रहे। उनके शरीर में कुछ भी घाव न लगा। यह देख अर्जुन को सन्देह हुआ कि यह शिव या कोई यक्ष राक्षस अथवा देवता तो नहीं है फिर सोचा कि यदि यह शिव को छोड़कर और देवता या कोई भी यक्ष होगा तो अब मैं इसको कठिन बाणों से मारकर अवश्य यम के घर पहुँचाऊँगा ऐसा विचार कर अर्जुन बाणों की तेज वर्षा करने लगा। शिव उन बाणों से भी अचल रहे जब तोण

भर में अर्जुन के बाण चुक गये तब उन्होंने धनुष से ही किरात का गला फाँस कर वज्र के समान मुक्कों से किरात पर प्रहार किया जब पर्वत के समान किरात ने इनके धनुष को भी ग्रास कर लिया तब तो अर्जुन ने खड्ग को किरात के शिर में मारा परन्तु उसके शिर में लगने से वह उत्तम खड्ग भी टूट गया। तब अर्जुन शिला और वृक्षों से मारने लगा परन्तु किरात उनको भी सहने लगा तब दोनों का परस्पर मुक्कों से युद्ध होने अनन्तर महादेव ने अर्जुन के शरीर में पीड़ा दी और अपने से उनका तेज खींच कर उनके चित्त को मोहित कर दिया तब अर्जुन निश्चेष्ट हो कर पृथ्वी पर गिर पड़ा श्वाँस भी बन्द हो गया। परन्तु क्षणमात्र के पीछे वह चैतन्य होकर उठा और शरण देने वाले भगवान शिव की शरण में गया। उस समय अर्जुन ने शिव की मिट्टी की मूर्ति बना कर उस पर माला चढ़ाई। जब अर्जुन ने वही माला किरात के शिर पर देखी, तब वह किरात के चरणों पर गिर पड़ा। शिव अर्जुन की असाधारण वीरता से प्रसन्न होकर पार्वती के सहित प्रकट हुए, अर्जुन ने शिव की बड़ी स्तुति की। शिव बोले हे अर्जुन पूर्व जन्म में तुम नर नामक ऋषि थे नारायण

तुम्हारे साथी थे। बद्रीकाश्रम में हजारों वर्ष तुमने तपस्या की थी तुम्हीं दोनों से जगत स्थित है पीछे शिव अर्जुन को पाशुपत्य अस्त्र और स्वर्ग जाने की आज्ञा देकर अन्तर्ध्यान हो गये।

खांडव और गंगा अर्थात् अलकनन्दा के समीप शिवप्रयाग हैं उसी स्थान पर महर्षि खांडव ने सदा-शिव का तप किया था उस स्थान पर भक्ति पूर्वक स्नान करने वाले को ब्रह्म-सायुज्य मिलता हैं संगम में स्नान करके महादेव की आराधना करने से मनुष्य तीनों लोकों में श्रेष्ट हो जाता है। उसी स्थान पर महादेव जी ने इन्द्र पुत्र अर्जुन को दर्शन दिया था।

गंगा और खांडवनदी के संगम के आधे कोस पर कालिका नदी का संगम जिसके दर्श करने से सौ यज्ञ करने का फल होता है उससे एक कोस दूर करिपर्वत पर करि नामक भैरव हैं उससे आधे कोस पर वत्सजानामक नदी खांडव में मिली हैं। संगम से ऊपर सिरस्कूट स्थान पर नारायणी नदी का संगम और नारायणी के संगम से दो कोस दूर शालिका नदी का संगम है।

गंगा के उत्तर तीर पर ढुंढप्रयाग तीर्थ है। पूर्व-

काल में हुंडी ने पाँच हजार पांचसौ वर्ष तक पत्ते खाकर तप किया था तभी से वह स्थान हुंडप्रयाग के नाम से प्रसिद्ध हो गया। जो मनुष्य सोमवती अमावस्या को उस तीर्थ में स्नान करता है उसको सब पुण्य और सम्पूर्ण यज्ञ करने का फल लाभ होता है वहा सूर्य और चन्द्र-ग्रहण में स्नान करने से मनुष्य लोक में धन्य-धन्य हो जाता है शिवप्रयाग से पूर्व गंगा के दक्षिण तट पर एक बाण के अन्तर में शिवकुण्ड तीर्थ है जहाँ शिवजी जल में निवास करते हैं।

राजराजेश्वरी पीठ से पावमील पर मनादरी नामक पवित्र नदी है उससे चार बाण ऊपर देववती नदी देववती से ५ बाण ऊपर मधुमती नदी, मधुमतीसे चार बाण ऊपर मनोन्मती नदी, मनोन्मती से दो बाण ऊपर किलकेश्वर महादेव और किलकेश्वर से ऊपर जीवती नामक नदी है जीवती नदी के ऊपर उत्तर दिशा में सब कामनाको देने वाला इन्द्रकील पर्वत है पूर्वकाल में उस स्थान पर दुष्ट दैत्यों के द्वारा इन्द्र कीले गये थे अर्थात दैत्यो के भय से वहाँ छिप कर रहे, इसलिये उस पर्वत का नाम इन्द्रकील हो गया।

श्रीनगर १७०६ फीट बिल्वकेदार से ४ मील है।

श्रीनगर समतल भूमि में बड़ा रमणीक स्थान है पर्वतीय प्रदेशों में यह एक समतल भूमि में बसा हुआ स्थान है, यहाँ का बाजार सुन्दर है, यहां मोटर तारघर, अस्पताल पुलिस-थाना तथा बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है श्रीनगर का शास्त्रों में क्या वर्णन है वह निम्न प्रकार है—

श्रीनगर

संक्षिप्त प्राचीन कथा स्कन्द पुराण केदारखण्ड उत्तर भाग (पहला अध्याय) श्रीक्षेत्र अर्थात् श्रीनगर का स्थूल रूप को लोलमार्ग से कोल कलेवर तक चार योजन लम्बा और तीन योजन चौड़ा सूक्ष्म रूप जीवेन्द्रपुर से सरस्वती नदी तक और अति सूक्ष्मरूप खांडव नदी से शितिपुर तक है। श्रीक्षेत्र में देवता लोग सर्वदा निवास करते हैं। वहाँ मृत्यु होने से जन्म मरण का बन्धन छूट जाता है, वहाँ भगवान शंकर शिव के सहित सर्वदा विद्यमान रहते हैं। पूर्वकाल में तारकासुर ने इन्द्रादिक देवताओं को स्वर्ग से निकाल दिया था तब वे लोग सम्पूर्ण पृथ्वी में भ्रमण करके केदारेश्वर क्षेत्र में जहाँ तारकासुर का भय नहीं था आये इन्द्र ने इन्द्रकील

पर्वत पर निवास किया उसके दक्षिण भाग में कीनास पर्वत पर यमराज ने अपना गृह बनाया इसी प्रकार सम्पूर्ण देवता उसके आसपास अपना अपना निवास स्थान बनाकर रहने लगे कितनेही युगोंके उपरांत वे लोग शिवकी आराधना करके स्वामिकार्तिकको पाकर फिर स्वर्ग में आये और स्वामिकार्तिक को सेनापति बनाकर असुरों को परास्त करके अपने अपने स्थानों को फिर पा गये।

राजा धर्म्मनेत्र ने उत्कालक मुनि से पूछा कि श्री क्षेत्र की उत्पत्ति किस भाँति हुई। मुनि कहने लगे कि सतयुग में सत्यकेतु नामक प्रतापी राजा हुआ वह बहुत काल राज्य करने के उपरान्त अपने पुत्र सत्यसंध को राज्य देकर इन्द्रकील पर्वत पर गया और गुफा में समाधि लगा कर तप करने लगा। उसके पश्चात् राजा का शत्रु कोलासुर आया। राजा सत्यसंध घोड़े पर सवार हो नगर से बाहर निकला। गंगा के उत्तरी तीर पर एक योजन की दूरी पर कुबेर पर्वत के दक्षिण भाग में राजा सत्यसंध और कोलासुर का रोमहर्षण युद्ध होने लगा। बहुत काल तक युद्ध होने के उपरान्त आकाशवाणी हुई कि हे सत्यसंध! तुम उत्कालक क्षेत्र के उत्तर भाग में दो बाण की दूरी पर गंगा के दक्षिण

तीर में भगवती की आराधना करो। उनके प्रसाद से तुम कोलासुर को मार सकोगे। ऐसा सुन राजा सत्यसंघ उस स्थान पर गया और एक शिला पर भगवती का यन्त्र लिखकर पूजा करने लगा। एक सौ वर्ष राजा के तप करने के पश्चात् भगवती ने राजा को दर्शन दिया राजा ने दंडवत् करके जगदम्बा की स्तुति की, भगवती बोली कि हे राजन्! मैं प्रसन्न हूँ तुम मुझसे इच्छित वर मांगो। सत्यसंघ ने कहा कि हे जगदम्बे! कोलासुर हमारे हाथ से मारा जाय। इस पवित्र क्षेत्र का तुम कभी त्याग न करो, और इस क्षेत्र में जो कुछ कर्म किया जाय उसका फल कोटि गुणा हो भगवती बोली कि हे सत्यसंघ तुम्हारे हाथ से कोलासुर का वध होगा। यह क्षेत्र श्रीक्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध होगा यह क्षेत्र सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाला और यहाँ मृत होने वालों को मुक्ति देने वाला होगा। जो मनुष्य इस क्षेत्र में हमारा पूजन करेगा वह थोड़े ही दिनों में हमारे समान समर्थ हो जायगा। मैं शिवजी के इस क्षेत्र में सर्वदा निवास करती हूँ इस स्थान से आधे कोस की दूरी पर गंगा के उत्तर तीर में मैं राजराजेश्वरी के नाम से प्रसिद्ध हूँ पूर्व समय में राजा कुबेर ने यहां मेरी आराधना की

थी, तब से मैं यहाँ निवास करती हूँ अब कुबेर मेरी आराधना करके सम्पूर्ण सम्पत्ति का स्वामी हो गया, तब उसने बीस करोड़ सुवर्ण की वेदी बनाकर उस पर मुझे स्थापित किया तभीसे मेरा नाम राजराजेश्वरी करके प्रख्यात हुआ ऐसा कहकर देवी अन्तर्ध्यान हो गई राजा सत्संघ रणभूमि में जाकर फिर कोलासुर का शिर काट डाला उसके सिर और रुण्ड को अलग अलग फेंक दिया। नैऋत्य दिशा में एक योजन पर कोलासुर का सिर और पूर्व भाग में ३ योजन पर उसका रुंड जा गिरा। यही चार योजन लम्बा और तीन योजन चौड़ा श्री क्षेत्र श्रीनगर का प्रमाण हुआ। अब तक भी उसके सिर का स्थान कोलसिर करके प्रसिद्ध है। और उसके रुंड के देश में कोल नामक पर्वत है (कुइला] इनके मध्य में जो प्राणी शरीर त्याग करता है उसको शिव लोक प्राप्त होता है।

तीसरा अध्याय—कोलासुर के सिर के भाग में मेनका नदी की समीप मैनकेश्वर महादेव हैं उससे एक कोस दूर देवतीर्थ में शुवकुटेश्वर महादेव स्थित हैं उस स्थान पर सूर्य चन्द्र अग्नि तीन धारा देखने में आती हैं। गंगा के उत्तर तीर पर श्यामला नदी बहती है

संगम के निकट शिवतीर्थ में शिवप्रयाग प्रसिद्ध है जिस-में स्नान करने से बहुत फल होता है उससे एक कोस दूर गजवती धारा, गजवती से आधे कोस पर गङ्गा के दक्षिण तट पर पुष्पदन्तिका नदी और पुष्पदन्तिका से एक बाण दूर गङ्गा के निकट भानुमति शिला है जिसके स्पर्श करने से सौन्दर्य प्राप्त होता है अलकनन्दा के समीप इन्द्रप्रयाग है उसी स्थान पर राज्य भ्रष्ट इन्द्र ने तप करके अपना राज्य पाया। उस से दो बाण पर दर्पदती नदी, दर्पदती से आधा कोस पर अहिकण्डिका नदी, उस से दो कोस दूर पर्वत के ऊपर अहिकण्डिका देवी है, गङ्गा के उत्तरी किनारे पर शक्तिजा नदी के तट में गणेश्वर महादेव हैं गणेश्वर से आधे कोस पर श्मशान वासिनी देवी, उस से एक कोस दूर शक्तिजा और शंखवती का संगम, और उस स्थान से शक्तिजा के पश्चिम तट से आधे कोस पर महादेव का मन्दिर है, उसी स्थान में सामवंशीय राजा नुहूस ने कठोर तप कर-के इन्द्र का राज्य पाया था। उस से ऊपर दो कोस प्रमाण का देव पीठ है। शक्तिजा के संगम के ऊपर गङ्गा के दक्षिण तट पर उपेन्द्रा नदी का सङ्गम है उसके ऊपर चार बाण पर इन्द्र के स्थापित किये हुये कन्दु-केश्वर भैरव हैं।

खांडव नदी और गङ्गा के सङ्गम के निकट शिवप्रयाग हैं। भोलेश्वर की कथा में धनुष कोटी तीर्थ से दो बाण की दूरी पर भैरवी तीर्थ में अनेक नाम की भैरवी रहती हैं। उनके दक्षिण भाग में २५ धनुष पर भैरवी पीठ है, पूर्वकाल में सत्यसंघ राजा ने उस स्थान पर देवी का पूजन किया था तब से वहां देवीजी स्थित हो गई गंगा के उत्तरी तीर पर कौबेर कुन्ड है उसी स्थान पर कुबेर ने देवी की आराधना की थी।

(१० वां अध्याय) श्री क्षेत्र में चामुन्डा पीठ, भैरवी पीठ, कंसमर्दिना पीठ, गौरी पीठ, महिष मर्दिनी पीठ, और राजराजेश्वरी पीठ, स्वः प्रभाव को दिखलाने वाले हैं, राजराजेश्वरी और भैरवी पीठ तो मैं कह चुका हूँ अब चामुण्डा पीठ, की उत्पत्ति की कथा सुनो।

पूर्व काल में शुम्भ और निशुम्भ दैत्यों ने सम्पूर्ण देवताओं के अधिकार को छीन लिया था तब देवताओं ने हिमवान् पर्वत पर जाकर पार्वती जी की प्रार्थना की, भगवती पार्वती ने कहा कि तुम सब निर्भय होकर रहो मैं शुम्भ और निशुम्भ को मारूँगी सब देवता जाकर अपने २ स्थान में रहने लगे इस के अनन्तर किसी काल में शुम्भ और निशुम्भ के कर्मचारी चण्ड और

मुण्ड ने देवी को गंगा में स्नान करते हुए देखकर उनके रूप से मोहित हो शुम्भ और निशुम्भ के निकट आकर उनके रूप का वर्णन किया शुम्भ और निशुम्भ ने सुग्रीव नामक दूत को देवी के पास भेजा उसने हिमालय में जा भगवती से कहा कि शुम्भ और निशुम्भ दैत्यों के राजा हैं, यदि तू अपना कल्याण चाहती हो तो उनकी पत्नि बनो ऐसा नहीं करोगी तो वह तुझ को बलात्कारसे ले जायेंगे। भगवती बोली कि हे दूत! तुम उन से कहो कि जो मुझको संग्राम में जीतेगा वही पाणी ग्रहण करेगा सुग्रीव ने शुम्भ और निशुम्भ के निकट आकर देवी के वचन कह सुनाया।

दैत्यराज की आज्ञा से धूम्रलोचन दैत्य चतुरंगिणी सेना लेकर हिमालय पर आ भगवती से बोला कि अब मैं, तुझको बांध कर ले जाऊँगा, देवी जी ने क्रोध कर के अपनी हुँकार ही से उसको भस्म कर दिया। शुम्भ ने धूम्रलोचन की मृत्यु सुन करबड़ी भारी सेना के साथ चन्ड और मुन्ड दैत्यों को भेजा। दैत्य की भयंकर सेना देवी के पास आकर नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्रचलाने लगी उस समय इन्द्रादिक देवताओं की करोड़ों सेना भगवती की सहायता के लिए यहाँ आकर उपस्थित हुई

देवता और राक्षसों का रोमहर्षण संग्राम होने लगा जब चन्ड और मुंड देवीजी के सन्मुख गये तब क्रोध के मारे अम्बिका का मुख श्याम वर्ण हो गया, उस समय उनके ललाट से अपने हाथों में तुरन्त का कटा हुआ सिर, खंग, चर्म भाला, शक्ति-पाश, और धनुष और बाण इत्यादि अस्त्र शस्त्र लिये हुये शिवा प्रकट हो गईं वह दैत्यों का मर्दन करने लगी। कितने दैत्य उसके महानाद से नष्ट हो गये कितने उसकी दृष्टि से मूर्छित हुए कितनों को उसने मार डाला उसके पश्चात् उन्होंने अपने खंग से चण्ड का सर काट डाला डाला और उसके उपरान्त मुंड के कंठ को अपने चरण से दबा कर खंग से काट कर वह दोनों दैत्यों के सर लेकर भगवती के समीप आई भगवती अति प्रसन्न हो बोली कि हे काली तुमने चंड और मुंड को मारा इस कारण अब से तुम लोक में चामुंडा करके प्रसिद्ध होगी उसके पश्चात् चामुंडा ने दोनों दैत्यों के सरों को फेंक दिया श्रीक्षेत्र में चार बाण की दूरी पर गंगा के उत्तर तीर पर ब्रह्मकुंड के निकट मुंड का सर और चार बाण की दूरी पर गंगा के दक्षिण किनारे पर चंडका सर जा गिरा चामुंडा उसी क्षेत्र में निवास करने लगी।

श्रीक्षेत्र में माहेश्वरी पीठ कमलेश्वर पीठ, कटकेश्वर पीठ और कोटिश्वर पीठ, सम्पूर्ण सिद्धि को देने वाले हैं, भैरवी तीर्थ से ऊर्ध्व भाग में दो बाण पर गंगाजी के दक्षिण तट में ब्रह्मा विष्णु और महेश्वर ये तीनों देवता शिलारूप से स्थित है प्रत्येक शिलाओं के नीचे इनके नामों से प्रसिद्ध एक एक कुंड है।

कमलेश्वर की उत्पत्ति इस भांति हुई कि एक समय काशी के रहने वाले ब्रह्मदेव इस तीर्थ में आकर ५ सहस्र ५ सौ वर्ष पर्यन्त शिवजी का तप किया तब भगवान शंकर प्रसन्न हुए। उस समय वहाँ की पृथ्वी फट गई उसके छिद्र से मणियों का समूह निकला। वह अर्ध-रात्रि का समय था किन्तु उनके प्रकाश से मध्यान्ह सा हो गया उन मणियों में मरकतमणि का शिवलिंग दीख पड़ा। उस समय शिल्ह नामक मुनि वहाँ आ गये, वे बोले कि हे विप्र! तुम धन्य हो कि तुम्हारे तप के प्रभाव से यह लिंग प्रकट हुआ उस समय ब्रह्मदेव और शिल्ह मुनि ने बहुत से मुनियों को बुला कर इस लिंग का अभिषेक करवाया, महादेव शिलेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुए। शिल्ह मुनि शिवलोक में गए। उनके पीछे किसी समय श्री रामचन्द्र जी नित्य १०० कमलों से शिव की

पूजा करते थे तब ही से वे लिंग कमलेश्वर नाम से प्रख्यात हो गया, ब्रह्म पर्वत के नीचे के भाग में चार बाण पर कमलेश्वर महादेव हैं उनसे ऊपर एक बाण पर विष्णु तीर्थ और विष्णु तीर्थ से एक कोस की दूरी पर गंगा के दक्षिण तट में नागेश्वर महादेव हैं जहाँ पूर्वकाल में नागों ने शिव का तप किया था। कटकवती के संगम से आधे कोस पर कटकेश्वर महादेव हैं शिवजी के साथ क्रीड़ा करती हुई पार्वती जी का कटक अर्थात् कणं गिर गया इसलिए शिव का नाम कटकेश्वर पड़ा।

कमलेश्वर पीठ से ऊपर दक्षिण दिशा में वन्हि पर्वत है जहाँ अग्नि ने शिवजी का तप करके सम्पूर्ण इच्छित वर पाया था तब ही से वह सब देवताओं का मुख हो गया वन्हि पवत के नीचे वन्हि धारा और वन्हि धारा के ऊपर वन्हि पर्वत के मध्य में अष्टावक्र मुनि का पवित्र तपस्थल है।

कंस को मारने वाली देवी श्रीक्षेत्र में कंसमर्दिनी नाम से निवास करती है, गंगा के दक्षिण तीर पर श्रीशिला है। गंगा से डेढ़ कोस पर वेत्रवती नदी के पश्चिम भाग में चारों ओर एक-एक कोस के प्रमाण से

पुण्यक्षेत्र गौरी पीठ है जहाँ ब्रह्मादिक देवताओं ने परम सिद्धि पाई है। रत्नदीप के रहने वाले शशबिन्दु के पुत्र राजा देवल ने इस स्थान में गौरी का स्थापन किया था तब ही से यह महापीठ हो गया। गौरी के निकट महिष मर्दिनी देवी है उसी स्थान में कालिका देवी का परम पावन पीठ है, प्रथम कालिका का पूजन करना चाहिये श्रीनगर का महत्व आप पढ़ चुके हैं यह सिद्ध स्थान है और शक्ति दुर्गा शिव की जो यहाँ श्रद्धा भक्ति से पूजन अनुष्ठान करता है उसको मन वांछित फल प्राप्त होता है, साधकों के लिए यह सिद्धिप्रद स्थान है। जैन सम्प्रदाय के पार्त और साधकों ने इसी स्थान पर अनेक प्रकार की सिद्धियैं प्राप्त की थीं।

नोट—श्रीनगर से रुद्रप्रयाग तक १६ मील लोरी जाती है लेकिन पैदल यात्रा करने वालो का मार्ग इस प्रकार है—

१—सुकरता—श्रीनगर से ४॥। मील है, यहाँ पर यात्रा के समय श्री बाबा काली कमली वाले की ओर से प्याऊ का प्रबन्ध होता है।

२—भट्टीसेरा—३। मील है, यहाँ पोस्ट आफिस है

तथा बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है, सदावर्त एवं प्याऊ का भी प्रबन्ध है, यहाँ से आगे १। मील चढ़ाई १॥ मील सीधा उतार हैं।

३—खांकरा—२ मील है, यहाँ पर अच्छा स्थान है, आगे मील डेढ़ मील की चढ़ाई है।

४—नरकोटा—२ मील है, चढ़ाई उतार है।

५—गुलाबराय चट्टी—खांकरा से तीन मील है, यहाँ पर एक झरना है, स्थान बड़ा रमणीक है। चढ़ाई उतार है।

६—रुद्रप्रयाग—गुलाबराय चट्टी से सवा मील पर है, यहाँ पर अलकनन्दा और मन्दाकिनी का संगम है, तथा यहाँ पर मोटर-तारघर-डाकखाना, अस्पताल-थाना डाक बँगला आदि सभी चीजें हैं। २००० फीट—यहाँ श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी के उद्योग से संस्कृत विद्यालय, जूनियर हाईस्कूल, कन्या पाठशाला भी हैं।

रुद्रप्रयाग के बाजार के पास २१४ फीट लम्बा ३ फीट चौड़ा अलकनन्दा पर लोहे का एक पुल है, इससे आगे श्री केदारनाथ जी के ठीक रास्ते पर श्री

बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है, बद्रीनाथ जाने वाले यहाँ से सीधा आगे अलकनन्दा के बायें किनारे कर्णप्रयाग, नन्दप्रयाग, चमोली होकर अलक-नन्दा के किनारे किनारे बद्रीनाथ जाते हैं, और केदार-नाथ के यात्री यहाँसे पुल पार होकर रुद्रनाथ के मन्दिर से आगे मन्दाकिनी नदी के किनारे किनारे केदारनाथ पहुँचते हैं। और केदारनाथ से नालाचेट्टी पर लौटकर ऊखीमठ, तुंगनाथ गोपेश्वर और चमौली होकर बद्री-नाथ को जाते हैं, रुद्रप्रयाग से कर्णप्रयाग १६ मील, नन्दप्रयाग २२ मील, चमोली २६ मील, जोशीमठ ६७ मील, बद्रीनाथ ८६ मील हैं। रुद्रप्रयाग से दूसरी ओर मन्दाकिनी के किनारे किनारे २४ मील गुप्त काशी, २६ नारायणकोटि, ४० मील त्रियुगी नारायण, ३६ मील सोनप्रयाग, ४१ मील गौरीकुण्ड और ४८ मील पर केदारनाथ हैं।

अलकनन्दा और मन्दाकिनी नदी के संगम पर एक छोटे गुम्बजदार मन्दिर में रुद्रनाथ शिवलिंग है मन्दिर के आगे जगमोहन की जगह पर एक कोठरी है एक कोठरी नारदेश्वर शिव और दूसरी कोठरी में कामे-श्वर शिवलिंग है, खड़ी सीढ़ियों से उतर कर संगम पर

स्नान होता है, यहाँ जल का वेग तेज है, रुद्रनाथ के मन्दिर के थोड़ी दूर पर मन्दाकिनी नदी पर रस्सों का झूला है। लोहे के लटकाऊ पुल के समान रस्सों का झूला होता है, यह चढ़ने से हिलता है, इसलिये इसे झूला कहते हैं, इसमें लोहे के बरहों के स्थान पर रस्सों पर के बरहे होते हैं। झूले के दोनों बगलों पर लोहे के छड़ों की जगह चन के समान मोटी मोटी रस्सियाँ लगाइ जाती हैं, और पाटन के तख्तों के स्थान पर जंगल की लचकदार लकड़ियाँ लगाई जाती हैं ऐसे झूलों पर यात्री लोग बोझ लेकर नहीं चल सकते, पहाड़ी लोग इनकी वस्तुओं को दूसरे किनारे पहुँचा देते हैं।

रुद्र प्रयाग जो पंच प्रयागों में से ऐक है, देव-प्रयाग के बाद मिलता है, रुद्रप्रयाग ही में श्री महादेव जी ने महर्षि नारदजी को संगीत विद्या की शिक्षा दी थी।

रुद्रप्रयाग

रुद्रप्रयाग के सम्बन्ध में विशेष तौर पर श्रीनारदजी की तपस्या तथा उनकी संगीत का वरदान इसी स्थान से प्राप्त हुआ था जिसका वर्णन नीचे दिया जाता है—

महामुनि नारदजी ने रुद्रप्रयाग में मन्दाकिनी गंगा के तट पर, जहाँ शेषादिक नाग तप करके सदाशिवजी के भूषण बन गये थे, एक चरण से खड़े होकर १०० वर्ष पर्यन्त महादेवजी का कठिन तप किया तब भगवान शिव श्री पार्वतीजी के साथ नन्दी पर चढ़े हुए आये और बोले कि हे नारद ! अब तुम्हारा तप पूर्ण होगया उसी समय श्री महादेव जी ने ६ रागों (संगीतों) को उत्पन्न किया। एक-एक राग की पाँच-पाँच रागनियाँ (स्त्रियाँ) और आठ-आठ पुत्र तथा आठ-आठ पुत्रवधू हुई, नारद जी सदाशिवजी के सहस्र नाम से स्तुति की, महादेव जी ने कहा कि हे नारद मैं प्रसन्न हूँ तुम इच्छित वर माँगो, नारदजी बोले हे वृषध्वज यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझको संगीत विद्या प्रदान कीजिये आप नादरूप हो और नाद आपको परम प्रिय है इसलिए मैं उसको जानना चाहता हूँ संगीत शास्त्र का सर्वस्व मुझको आप सिखलाइये इसका जानने वाला आपके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है। ऐसे नारद के वचन सुनकर शिवजी ने प्रसन्न होकर नाद के शास्त्र का संपूर्ण भेद उनसे कह दिया। महर्षि नारद नादों का सम्पूर्ण भेद और आचरणों को और महादेव जी की दी हुई

पवित्र वीणा को ग्रहण कर ब्रह्मलोक में गये। शिवजी यहाँ ही अन्तर्ध्यान हो गये, नारद जी ने अलकनन्दा और मन्दाकिनी के संगम के निकट रुद्र तीर्थ में स्नान करके परम सिद्धि को प्राप्त किया था इसलिए यह तीर्थ पृथ्वी में श्रेष्ठ है उस प्रदेश में तीन लाख दस सहस्र तीर्थ विद्यमान हैं और नाग पर्वत स्वर्ग के समान है।

गंगा और मन्दाकिनी के संगम के समीप रुद्र क्षेत्र और मन्दाकिनी और लशतर नदी के संगम के निकट सूर्यप्रयाग है।

१-छतोली—रुद्रप्रयाग से ४॥ मील पर है, अलकनन्दा और मन्दाकिनी के बायें किनारे से चलना पड़ता हैं, रुद्रप्रयाग के मन्दिर से आगे २ मील पर पीपल के पेड़ के पास एक छोटा झरना है।

२-तिलवाड़ा तथा मठचट्टी—छतोली से एक एक मील पर है, मठचट्टी के सामने सूर्यप्रयाग है वहाँ से दो मील भणगा में छिन्नमस्ता पीठ और दो मील जैली में कूर्मासना पीठ है।

३-रामपुर—मठचट्टी से ॥ मील पर है, रुद्रप्रयाग

से यहाँ तक का मार्ग सुगम है, यहाँ कई एक पक्की दुकानें हैं, मन्दाकिनी और कई झरनों के संगम हैं।

४-अगस्तमुनि—४ मील है, यहाँ डाकखाना, हाई-स्कूल, मन्दिर है, बाबा करली कमली वाले की धर्म-शाला है। २००० फीट ऊँचाई है।

अगस्त मुनि

अस्गतमुनि के स्नान के सम्बन्ध में कई प्रकार की किंवदन्तियाँ सुनने में आई हैं, कहते हैं कि जब अगस्त जी ने समुद्र का शोषण किया उसके बाद उन्हें ध्यांन आया कि समुद्र शोषण करने से पूर्व क्रोधाभिवेश हुआ और क्रोध आने पर कई प्रकार के दोष उत्पन्न हो जाते हैं। इसलिए अगस्त जी महाराज ने इस स्थान पर आकर बहुत काल तक तप किया था, यहाँ पर अगस्त जी का मन्दिर है अगस्त जी की ताम्रमयी मूर्ति के बगल में कटार और उनके दोनों ओर दो शिष्यों की ताम्रमयी मूर्तियां और पास ही नवग्रह हैं। मन्दिर के आगे जग-मोहन की जगह पर लम्बी कोठरी में गणेशजी महाराज की पुरानी मूर्ति तथा मन्दिर के दाहिने ओर एक कोठरी में शिवलिंग है।

इस मन्दिर में प्रत्येक बारह वर्ष के बाद यज्ञ होना बताते हैं, मन्दिर के आगे अगस्त जी की पीतल की चल-मूर्ति हैं जो उत्सव के समय बाहर निकाली जाती हैं, ऐसे यज्ञ पहले बहुत होते थे महाभारत आदिपर्व के चौथे अध्याय में लिखा है कि लोमहर्षण के पुत्र उग्रश्रवादि नैमिषारण्य में शौनकजी के द्वादश-वार्षिक यज्ञ में गये थे। यहाँ १९९५ में अष्टादश महापुराण समारोह हुआ जो बारहवें वर्ष २००७ में होगा। यहाँ हाईस्कूल भी है।

गंगा मन्दाकिनी के उस पार दो मील पर शीलेश्वर महादेव है लोगों का कहना है कि अगस्त जी ने इसी स्थान पर तप किया था।

अगस्त चट्टी से केदारनाथ की हिमाच्छादित पर्वत श्रेणी दीखती है।

५-सत्यनारायण मन्दिर—अगस्तमुनि से आध मील पर हैं स्थान अच्छा है।

७-सौड़ी चट्टी—मन्दिर से दो मील पर है। यहाँ से ५ मील पहाड़ पर स्वामी कार्तिकनाथ जी हैं यहाँ एक छोटे चौक में हजारों आदमी बैठ सकते हैं।

७-चन्द्रापुरी—सौड़ी से २ मील पर है यहाँ पर अच्छी अच्छी दुकानें हैं चन्द्रशेखर महादेव, दुर्गाजी का मन्दिर है मन्दाकिनी और चन्द्रानदी का संगम है, पुल पार करना पड़ता है स्थान अच्छा है। यहां से दो मील पिच्छु में कर्माजीत का स्थान है सांप का काटा हुआ आदमी इस मन्दिर में रखके मरेगा नहीं।

८-भीरी चट्टी—चन्द्रपुरी से ३॥ मील है, यहाँ पर भीमजी की विशाल मूर्ति है और मन्दाकिनी के ऊपर ७२ फीट लम्बा और ५ फीट चौड़ा लोहे और काठ का पुल है, यहाँ से मन्दाकिनी के बायें किनारे की सड़क ऊखी मठ को और दाहिने की गुप्त काशी होकर केदार-नाथ को गई है, केदारनाथ को यात्री यहाँ से पुल पार होकर मन्दाकिनी के दाहिने किनारे से चलते हैं, यहाँ से १॥ मील फेरकारिशि पर्वत पर श्री दुर्गापीठ है वहीं विद्याधर महादेव जी भी हैं। यहां पर शोणितपुर एक मील है।

९-कुण्ड—३॥ तीन मील पर है, कुण्ड से आगे २ मील गुप्त काशी है और बड़ी चढ़ाई है, कुण्डचट्टी से १ मील आगे से जहाँ भिक्षुक की कोठरी है, पहाड़ के ऊपर २ मील के फासले पर शोणितपुर को एक सड़क

जाती है। शोणितपुर एक महत्वपूर्ण स्थान है इसलिये पाठकों की जानकारी के लिये उसका विवरण दे देते हैं शोणितपुर में बाणासुर के गढ़ की निशानी तथा बाणासुर अनिरुद्ध और पंचमुखी महादेव की मूर्तियाँ है, श्री केदारनाथ जी के पण्डे अधिकतर शोणितपुर में ही रहते हैं।

राजा बलि के रसातल जाने के उपरान्त उसका पुत्र बाणासुर पृथ्वी में शोणिताख्यापुर रच कर दानवों के साथ रहने लगा

श्रीमद्भागवत दशमस्कन्ध ६२वाँ अध्याय राजा बलि के सौ पुत्रों में से ज्येष्ठ पुत्र बाणासुर शोणिताख्यपुर में राज्य करता था शिव जी उसकी ताण्डवगति के नृत्य से प्रसन्न हो उसकी इच्छानुसार अपने कुल समेत उसके घर में स्थित हुए एक समय बाणासुर ने शिवजी से कहा कि आपके अतिरिक्त मुझसे युद्ध करने वाला कोई नहीं। बिना युद्ध किये मेरी भुजायें खुजलाती हैं इसलिए कृपा करके आप मुझसे युद्ध कीजिये तब तो शिवजी क्रुद्ध होकर बोले कि मेरे समान बलवान से जब तेरा युद्ध होगा तब तेरा गर्व टूट जायगा।

बाणासुर की ऊखा नामक कन्या थी स्वप्न में अनिरुद्ध के साथ उसका समागम हुआ। जागने पर वह हे कान्त! तुम कहाँ गये इस प्रकार पुकारती पुकारती सखियों के बीच गिर पड़ी। तब बाणासुर के मंत्री कुमाण्ड की पुत्री चित्ररेखा देवता मनुष्य सबके चित्र लिख लिख कर उसको दिखाने लगी। अन्त में अनिरुद्ध का चित्र देख कर ऊखा ने कहा कि मेरा चित्तचोर तो यही है। तब योगबल से चित्ररेखा आकाश मार्ग से होकर द्वारिकापुरी में जा पहुँची उस समय अनिरुद्ध पलंग पर सो रहे थे उन्हें वह योगबल से उठाकर शोणितपुर में ले आई। वे दोनों गुप्तभाव से घर में रहने लगे। कुछ दिनों के पश्चात् बाणासुर ने पहरेदारों के मुख से यह वृत्तान्त सुना। कन्या के महल में जाकर अनिरुद्ध को देखा और कुछ युद्ध होने के बाद अनिरुद्ध को नागफांस से बाँध दिया।

चार महीने बीत जाने पर नारदजी ने द्वारिका में श्री कृष्णचन्द्र से अनिरुद्ध के कारागार का समाचार सुनाया तब श्रीकृष्णचन्द्र ने बड़ी भारी सेना के साथ बाणासुर के नगर को घेर लिया अपनी सेना लेकर बाणासुर भी पुर से बाहर निकला और

उसकी सहायता के लिए महादेव जी भी अपने गणों के संग रणभूमि में सुशोभित हुए भयानक युद्ध होने के बाद श्रीकृष्णचन्द्र ने जृंभण अस्त्र चलाया जिससे शिव जी जंभाई लेने लगे। तब श्रीकृष्णचन्द्र ने असुर की सब सेना का विनाश करके बाणासुर की चार भुजाओं को छोड़ शेष सबको काट डाला उसके पश्चात् बाणासुर ने श्रीकृष्णचन्द्र को प्रणाम करके ऊषा के सहित अनिरुद्ध को रथ में बिठाल कर विदा कर दिया। श्रीकृष्णचन्द्र अपनी सेना के संग द्वारिका में आये और बाणासुर शिवजी का मुख्य पार्षद हुआ।

शोणितपुर की पश्चिम दिशा में बाणासुर दैत्य ने अजय वरदान पाने के लिए शिवजी को प्रसन्न करने के लिए कठिन तप किया तहां बाणेश्वर महादेव स्थित हो गये बाणासुर ने उनके प्रसाद से सम्पूर्ण जगत को जीत लिया।

गुप्त काशी नाम कैसे पड़ा

गुप्त काशी—शोणितपुर से ४ मील पर है। यहाँ पोस्ट आफिस और बाबा काली कमली की धर्मशाला है, यहाँ मन्दिर में दो चौगान हैं, उनमें से दक्षिण के चौगान में चारों ओर पक्के दो मंजिले दोहरे मकान हैं, जिनमें यात्री टिकते हैं, और उत्तर के चौगान में तीन ओर पक्के दो मंजिले दोहरे मकान तथा धर्मशाला है। पश्चिम की ओर पहाड़ के नीचे विश्वनाथ शिव का पूर्वाभिमुख मन्दिर है, मन्दिर साधारण डौल का है, उसके शिखर पर छोटी बारहदरी तथा सुवर्ण का कलश है, विश्वनाथ शिवलिंग अनगढ़ है, शिव का अर्घा जलधरी का घड़ा और ऊपर का पर्दा (छत्र) चाँदी का है, शिवलिंग के पास चाँदी से बनी हुई उनकी शृंगार मूर्ति और नाक में चाँदी ही से बनी हुई डेढ़ हाथ की अन्नपूर्णा की चतुर्भुजी मूर्ति है, मन्दिर के आगे पत्थर के टुकड़ों से छाया हुआ एक द्वार वाला जगमोहन है, जिनमें नन्दी की पीतल की छोटी मूर्ति और गणेशजी की एक मूर्ति बनी है, यह ४८०० फीट है, यहाँ सेकेण्डरी हाई स्कूल भी है।

शिव मन्दिर के आगे लगभग १५ हाथ लम्बा और इतना ही चौड़ा "मणिकर्णिका कुण्ड है, कुण्ड के पश्चिम की दीवार में एक ही पत्थर पर हाथी का मुख और पीतल का गोमुख बना है, इन दोनों से झरने का जल कुण्ड में गिरता है, और कुण्ड का जल बाहर निकला करता है। हाथी के मुख पर शाका १६६४ सं० १७९९ और गोमुख पर संवत् १९२२ तथा टिहरी के राजा रणवीरसिंह का नाम खुदा हुआ है, कुण्ड के पूर्व की ओर पुराना नन्दी रक्खा हुआ है, और उसके चारों ओर पत्थर का फर्श है।

विश्वनाथजी के मन्दिर के पास ही एक छोटा गुम्बजदार मन्दिर है उसमें मावल पत्थर के बैल पर बैठी हुई गौरीशंकर की मूर्ति है, मूर्ति के दाहिने भाग में शिव तथा वाम भाग में पार्वती दिखलाई पड़ती है, उसके नीचे पत्थर पर सं० १९३२ खुदा हुआ है, मन्दिर के सामने नन्दी की मूर्ति है।

चौगान के उत्तर के एक मकान में पांडवों की प्राचीन मूर्तियाँ हैं, सामने मन्दाकिनी के उस पार ऊखी मठ है।

१-नाला चट्टी—गुप्त काशी से एक मील पर है,

यहाँ पर ललिता देवी का तथा गरुड़ का छोटा मन्दिर है, ललिता देवी के पास ही में शिवजी की मूर्ति है, मन्दिर के पास एक झूला है। नाला से श्री बद्रीनारायण जी को ऊखी मठ होकर सड़क गई है नाला मिलते ही प्रथम मोचियों की दुकानें मिलती हैं ये लोग अव्वल दर्जे के जूते और बूट बनाते हैं आरम्भ में हरिजन बस्ती है हरिजन लोग ताँबा के कंकण बनाते लोहे का तरह तरह का औजार बनाते और कपड़े मिलते हैं साथ ही यह छोटी चट्टी है पानी का तथा ठट्टी पेशाब का कष्ट है।

२-नारायण कोटि तीर्थ—एक मील है। यहाँ ६७० फीट प्राचीन तीर्थ ३६० देवमन्दिर नारायण कुण्ड में दो गोमुख झरनों से गिरने वाला मीठा पानी स्नान करने का माहात्म्य श्री लक्ष्मीनारायण जी की प्राचीन विचित्र मूर्ति का दर्शन इस मूर्ति की कारीगरी और दिव्य आकृति देखते ही चंचल मन आनन्द प्राप्त करता है। यहाँ अनेक देवताओं के मन्दिर और दर्शन हैं। पास में ही एक विचित्र कारीगरी की बावड़ी और गढ़काली के दर्शन हैं। यहाँ पं० बच्चीराम नाम का एक आदमी असने चमत्कारिक गुण से भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों की बातें बतलाता है। नारायण कोटि का नाम मूर्ख और दानव लोग भेता भी कहते हैं

यहाँ भस्मासुर दानव का तपस्थान भी रहा है। भस्मासुर ने अपने तथा अपने अनुचरों के रहने का स्थान बनाने को ३६० देवमन्दिरों में से निकम्मे मन्दिरों को उखाड़ चीर फाड़ कर तपस्थान बनाया। किसी विद्वान् ने उस स्थान को "भेता" अर्थात् नाश किया हुआ कहा।

दैत्य नारायण नाम लेते ही नहीं थे अतः भेत या भेता कहने लगे, जिसे उनके अनुगामी अब तक भी कहा करते है, नारायण कोटि बड़ी भारी चट्टी है। यहाँ हर प्रकार का माल बहुत सस्ता मिलता है इसे सस्ती चट्टी भी कहते हैं। यहाँ बड़े-बड़े मकानात मुकाम करने कुरने को, कपड़ा धोने का, साग सबजी का सुभीता, यात्रियों का सामान लौटने तक मुफ्त रखने का प्रत्येक दुकानदार का बढ़िया इन्तजाम है, यहाँ कई पनचक्कियाँ ताजा आटा पीसने वाली है। नारायण कोटि में प्रसिद्ध-विशाल कार्यालय में हर प्रकार की पुस्तकें, तीर्थों के माहात्म्य, फोटो, चँवर, कस्तूरी शुद्ध शिलाजीत, शुद्ध ऊन का टिकाऊ माल और हर प्रकार की दवाइयाँ सस्ते दामों से हर वक्त मिल सकती हैं।

नारायण कोटि से दो मील 'कालीमठ पीठ' है। यहाँ से तीन मील उत्तर गया रणमण्डना देवी और रुक्छेश्वर महादेव हैं। कालीमठ से पूर्व तीन मील पहाड़ पर मरांग शिला (काली शिला) है और पाँच मील

आगे श्री राकेश्वरी देवी के दर्शन है। चन्द्रमा का क्षय-रोग इन्ही देवीजी के तप से दूर हुआ था। राकेश्वरी से आठ मील मध्यमेश्वर द्वितीय केदार के दर्शन हैं। यहाँ से पन्द्रह मील ऊखी मठ है।

नारायणकोटि से एक मील पश्चिम पहाड़ पर जाख (यक्ष) देवता है। मेष संक्रान्ति के दूसरे दिन यहाँ मेला लगता है और यह जाख देवता एक आदमी पर आता है। जो एक बड़ी भारी आग की ढेरी में तीन बार कूदता है लेकिन पैरों के बाल तक नहीं जलते।

३-ब्यूंगतल्ला दो मील है यहाँ पर काठ के बर्तन बनते हैं लेकिन यह बर्तन यात्रियों के पास फूट जाते हैं।

४-ब्यूंगमला—पाच मील पर हैं चढ़ाई है कुल चढ़ाई डेढ़ मील की है जो सहज में ही कट जाती है।

५-मैखण्डा—यह स्थान ५५०० फीट है यहां चढ़ाई समाप्त है।

महिष मर्दिनी देवी की कथा

महिष मर्दिनी देवी का मन्दिर है देवी का चित्र एक फीट ऊँचा आठ भुजा वाला श्रेष्ठ धातुका बना हुआ है। इसी के पास अन्य भी कई मूर्तियाँ हैं। मन्दिर के बाहर बीस हाथ लम्बे दो खम्भ गड़े हैं. जिन पर चैत्र तथा

आश्विन में देवी की चल मूर्ति झुलाई जाती है इस झूले में कई यात्री भी झूला करते हैं।

केदार के दक्षिण भाग में महिषखंड है पूर्वकाल में श्री देवीजी ने महषासुर को काटकर उसके शरीर के टुकड़े इसी स्थान पर फेंक दिये थे इसलिए यहां पर देवी महिष-मर्दिनी नाम से विख्यात हो निवास करने लगी जिसका दर्शन करने से मनुष्य शिव लोक को प्राप्त करता है इसके दक्षिण भाग में कुंभिका धारा है।

६-फांटा चट्टी—मैखण्डा से डेढ़ मील है यहाँ दुकानें अच्छी हैं रास्ता अच्छा है डाकखाना है यहाँ से थोड़ी दूर डाक बँगला है। पास ही दो फर्लांग पहाड़ पर जमदग्नि ऋषि का आश्रम और जमेश्वर महादेव हैं।

७-बादलपुर तीन मील रास्ता चढ़ाई उतार का अच्छी चट्टी है।

८-रामपुर—दो मील है यहाँ भी बाबा काली कमली की धर्मशाला है और यात्रियों को पट्टू तथा कम्बल भी दिये जाते हैं यहाँ से डेढ़ मील पाटी गाड़ नदी का पुल है यहाँ से त्रियुगी नारायण के लिये चढ़ाई आरम्भ होती है। दो मील पर शाकाम्भरी देवी है।

शाकाम्भरी

६—कोठरी के सामने एक छोटे मन्दिर में ताँबे के के पात्र में देवी की मूर्ति है, उसी के पास इसी तरह से

पत्तों पर बनी हुई देवियों की बहुत सी मूर्तियाँ हैं।

तीनों लोकों में विख्यात शाकाम्भरी देवी का स्थान है, वहाँ हजारों वर्षों तक प्रति वर्ष में एक मास शाक मात्र खाकर तप किया था, देवी की भक्ति से पूरित मुनीश्वर वहाँ आये, देवी ने उसी शाक से उनका भी सत्कार किया, उसी दिन से उस देवी का नाम शाकाम्भरी हुआ, यहाँ पर तीन दिन शाकाहार करने का महत्व है। आगे एक मील सीधा रास्ता त्रियुगी नारायण का है।

त्रियुगी नारायण

[शिव पार्वती के विवाह का वर्णन]

—:o:—

१०—त्रियुगी नारायण—रामपुर से साढ़े चार मील मील है, डेढ़ मील पाटी गाड का पुल है, तीन मील चढ़ाई का रास्ता है, सेठ हजारीमल जी दूध वाले ने इस मार्ग को सात हजार धन से बना कर यात्रियों को बड़ी सुविधा दी हैं, यहाँ बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है।

त्रियुगी नारायण में ब्रह्मकुण्ड नामक एक चतुष्कोण कुण्ड है, उसके पास ही एक छोटा रुद्रकुण्ड, रुद्रकुण्ड के निकट गोलाकार विष्णुकुण्ड हैं ब्रह्मकुण्ड तथा रुद्रकुंड में भी लोग स्नान करते है और विष्णुकुंड का जल पीते हैं, इसके पास ही एक सरस्वती कुंड है इसमें पंडे लोग यात्रियों को तर्पण कराते हैं, चारों कुण्डों में झरने का जल आता है और ब्रह्मकुण्ड से बाहर निकल जाता है, कुण्डों के पास नारायण का मन्दिर है जिसमें नारायण की मूर्ति धातु की बनी हुई है और लक्ष्मी, अन्नपूर्णा, सरस्वती आदि की मूर्तियाँ हैं, मन्दिर के आगे एक चतुष्कोण कुण्ड है जिसमें निरन्तर अग्नि जलती रहती है, लोग कहते हैं कि यह शिव पार्वती के विवाह की अग्नि है, इसी स्थान पर शिव पार्वती का विवाह हुआ था यह कुण्ड वैवाहिक कुण्ड हैं, कई यात्री लकड़ी मोल लेकर कुण्ड में डालते हैं और भस्म ले जाते हैं, नारायण के मन्दिर में अन्धकार प्रायः रहता हैं इसलिए अखंड दीप जलता है मन्दिर के पास अन्य छोटे-छोटे गरुड़ आदि देवताओं के मन्दिर हैं।

गंगोत्री के यात्री जो ऋषिकेश देवप्रयाग में गंगोत्री जाते हैं पगडंडी से यहाँ आकर केदारनाथ की राह लेते हैं।

केदारमंडल में त्रिविक्रमा नदी से तट पर डेढ़ कोस

के फासले पर यज्ञ पर्वत में नारायण क्षेत्र है, जहाँ पर ही ब्रह्मादिक देवताओं ने हरि का यज्ञ किया था। यहाँ सदा अग्नि विद्यमान रहती है, वहीं पर गौरी से श्री शंकरजी का विवाह हुआ था, यहाँ पर दश रात्रि वास करने वाला बैकुंठ का अधिकारी हो जाता है जो प्राणी वहाँ पर बहती हुई सरस्वती धारा का जल पान करता है वह कोटिशः पापों से मुक्ति हो जाता है, वहाँ का भस्म धारण करने वाला सर्वदेवमय हो जाता हैं।

शिव पार्वती का विवाह तृतीया को हुआ इसलिए तृतीया का दिन उनको प्रिय हैं।

१—सोनप्रयाग (सोमद्वार) त्रियुगी नारायण से ढाई मील पर है, शाकाम्भरी से सोनप्रयाग तक उतराई है, यहाँ जोर से मन्दाकिनी का जल ऊपर से नीचे गिरता है, वासुकी गंगा और मन्दाकिनी का संगम यहाँ होता है, यहाँ से बारह मील वासुकी तालाब है। सोनप्रयाग के पास अनेक विकासों का स्थान है, इस देश के लोग माँगना छोड़कर ही इन्सान बन सकते हैं। सोनप्रयाग में मन्दाकिनी का जल शुक्ल तथा वासुकी गंगा का जल हरित देख पड़ता हैं। वासुकी गंगा पर १७० फीट लम्बा पुल है।

कालिका नदी जिसमें वासुकी आदि नाग नित्य

स्नान करते हैं गंगाजी के अंग से उत्पन्न हैं। जहाँ सरोवर में शेषेश्वर महादेव स्थित हैं, नदी के निकास स्थान पर कालिका देवी का मन्दिर है, मन्दाकिनी और त्रिविक्रमा नदी के संगम पर कालीश नामक शिव विराजते हैं।

सोनप्रयाग से आगे आध मील पर मुंड कटा गणेश का स्थान है।

मुण्ड कटा गणेश

[सर्व प्रथम पूजा का कारण]

यहाँ एक कोठरी में बिना सिर की श्री गणेशजी की मूर्ति है उसके दाहिनी ओर पार्वती जी और बायें एक शिवलिंग स्थापित है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्द पुराण (केदारखंड प्रथम भाग ४२वाँ अध्याय) गौरी तीर्थ से एक कोस दूर विनायक द्वार पर गणेशजी स्थित हैं। जिनको पार्वती जी ने स्नान करते समय अपने अंगराग से बना कर द्वार पर बैठा दिया था और शिवजी ने उनका सिर काट डाला पीछे महादेव जी ने हाथी का सिर जोड़ कर गणेशजी को जिला दिया तब से वह गजानन हो गये, जो मनुष्य गणेशजी का पूजन करते हैं उनको शिवलोक मिलता है।

शिवपुराण—(ज्ञान संहिता ३२वाँ अध्याय) एक समय श्री पार्वती जी स्नान कर रही थी नन्दी द्वार पर स्थित था श्री शंकरजी ने अन्दर जाने के लिये अन्दर पग रक्खा कि नन्दी ने अन्दर जाने से रोक दिया इससे क्रुद्ध होकर श्री शंकरजी ने उसका सिर काट डाला और अन्दर चले गये इससे क्रुद्ध होकर पार्वती जी ने अपने प्रताप से सहस्रों नन्दी उत्पन्न कर दिये और शंकरजी से युद्ध करने को कहा वह शक्तियाँ क्रुद्ध होकर श्री शंकर जी तथा सभी देवताओं को पकड़ कर अपने मुख में डालने लगीं भय के मारे ब्रह्मादि देवता पार्वती जी से क्षमा माँगने लगे पार्वती जी ने कहा कि यदि मेरा पुत्र जीवित हो जाय और उसका पूजन सभी देवताओं से पूर्ण होने लगे तब यह शक्तियाँ शान्त हो सकती हैं, सभी देवता उस शरीर का विधिवत् पूजन कर उत्तम दशा की ओर चल पड़े मार्ग में सर्व प्रथम उन्हें एक दाँत वाला हाथी मिला देवताओं ने उसका सिर काटकर बालक के शरीर से जोड़ दिया जिससे कि वह बालक जीवित हो गया और इसकी पूजा सबसे पहले ब्रह्मा विष्णु तथा शिव तीनों ने मिलकर की तभी से इनका पूजन सर्व प्रथम होने लगा।

मुंड कटा गणेश से दो मील पर एक झरना है सोनप्रयाग से गौरी कुंड तक मन्दाकिनी के निकट पहाड़

और उसकी घाटी बड़े बड़े वृक्षों के हरे जंगल से ऐसी भरी हैं कि दूर से पर्वत के पत्थर नहीं देख पड़ते और करारे के ऊपर से बहुतेरी जगह मन्दाकिनी का जल नहीं देख पड़ता।

त्रियुगी नारायण से श्री केदारनाथ जी १२॥ मील है उसका रास्ता इस प्रकार है।

त्रियुगी नारायण से सोनप्रयाग (सोमद्वार) तीन मील सीधा रास्ता है।

सोमद्वार से गौरीकुंड २॥ मील है।

गौरी कुण्ड

२—गौरीकुंड में बाबा काली कमली की धर्मशाला है अच्छी अच्छी दुकानें हैं, डाक बँगला है।

यहाँ एक गरम जल का झरना है जिसका कुछ पानी मन्दाकिनी में तथा कुछ गोमुख होकर तप्त कुंड में गिरता है, तप्तकुंड १७ फीट लम्बा और इतना ही चौड़ा है इस झरने का जल इतना गर्म है कि मनुष्य अन्दर घुस कर ठहर नहीं सकता, तप्त कुंड से आगे खारे जल का कुंड है इसी का नाम गौरीकुंड है यात्री सर्व प्रथम इसी में स्नान करते हैं।

कुंड से दक्षिण की ओर ६ हाथ लम्बी उमा

महेश्वर नामक शिला है, इसी के पास एक छोटे मन्दिर में गौरी-महादेव-राधाकृष्ण ज्वाला भवानी की मूर्तियाँ हैं मन्दिर के पीछे मीठे जल का अमृत कुण्ड है।

केदारेश्वर से तीन कोस दक्षिण की ओर मन्दाकिनी के किनारे सभी सिद्धियों को देने वाला गौरीकुण्ड है, वहीं पर श्री महादेवजी पार्वती सहित निवास करते हैं, जो मनुष्य वहाँ स्नान करके वहाँ की मिट्टी को अपने मस्तक पर चढ़ाता है वह श्री महादेव को बड़ा प्रिय होता है, उसके दक्षिण स्थित गौरखाश्रम तीर्थ में सिद्ध गोरखनाथ नित्य निवास करते हैं। वहाँ का जल सर्वदा तप्त रहता है।

गौरीकुण्ड से डेढ़ मील पर चीरवासा है, यहाँ भैरव का मन्दिर है और चढ़ाई का रास्ता है इससे कुछ आगे आधा मील पर जंगलचट्टी है आगे दो मील पर रामबाड़ा है यहाँ का शीतप्रधान वायु बड़ा खतनरनाक है, प्रायः यहाँ कई यात्री चलते चलते मूर्छित हो जाते हैं इसलिए यहाँ पर यात्री को मुँह में बादाम मिश्री आदि रखना चाहिये और थोड़ा थोड़ा चलना चाहिये।

श्री केदारनाथ जी

५—केदारनाथ रामबाड़ा से सवा तीन मील पर है यह तीन मील बड़ी कठिनता से यात्री पार करते हैं

श्वांस फूलता है दम घुटता है, पोस्ट आफिस डाकबँगला तथा काली कमली वाले की धर्मशाला है।

यहाँ पर सरस्वती-मन्दाकिनी-दूध गंगा स्वर्गद्वारी और महोदधि इन पाँच नदियों का संगम है, जिसमें सभी यात्री स्नान करते हैं इसके पास ही संगमेश्वर महादेव हैं केदारनाथ के यात्री रुद्रप्रयाग से १८ मील मन्दाकिनी के बायें किनारे और इसके आगे दायें किनारे चलते हैं।

केदारपुरी जाड़े के दिनों में बर्फ से ढकी रहती है, मेष (वैशाख) संक्रान्ति से पन्द्रह दिन पीछे मन्दिर के पट खुलते हैं और (वृश्चिक) अगहन संक्रान्पि के आस पास बन्द होते हैं, उस समय वहाँ के पण्डे पुजारी अपने अपने घर चले जाते हैं और केदारनाथ भगवान की पूजा ऊखीमठ में होती है यात्रा के समय में भी यहाँ के रावल (पुजारी) बाहर रहते हैं, यह मन्दिर इस वर्ष से यू० पी० सरकार ने अपने प्रबन्ध में ले लिया हैं जिससे काफी आय हुई हैं।

केदारपुरी के चारों ओर बर्फीले पहाड़ हैं केदारनाथ के पहाड़ की सबसे ऊँची चोटी समुद्र से २२८५० फीट और साधारण ११ हजार फीट ऊँची है। वैशाख ज्येष्ठ में भी भूमि पर जगह जगह बर्फ रहती है, सर्दी अधिक होने के कारण यहाँ यात्री अधिक नही रह सकता।

केदार में शिव की भैंसाकृति मूर्ति

—::०::—

(शिव पुराण) पाण्डव लोग अपना गोत्रवध का पाप छुड़ाने के लिए केदारेश्वर दर्शनाथ केदार तीर्थ में गये तब श्री शिव जी भैंसे का रूप धार वहाँ से भाग गये पाण्डवों ने प्रार्थना की कि हे नाथ ! कृपा करके हम लोगों के पाप दूर करो और इस स्थान पर स्थित हो जाओ तब प्रसन्न हो श्री शंकर जी अपने पिछले धड़ से वहाँ स्थित हुए। यह स्थान ११७६० फीट है।

केदारपुरी के उत्तर छोर पर श्री केदारनाथ जी का मन्दिर है, मन्दिर के ऊपर बीस द्वार को चट्टी है सबसे ऊपर सुनहरा कलश है मन्दिर के ठीक मध्य में श्री केदारनाथ जी की स्वयंभु मूर्ति हैं उसी में भैंसे के पिछले धड़ की भी आकृति है यात्रीगण श्री केदारनाथ का स्पर्श करते हैं मन्दिर के आगे पत्थर का जगमोहन बना हुआ है, जगमोहन के चारों ओर द्रौपदी सहित पाँचों पांडवों की मूर्तियाँ हैं इसके मध्य में पीतल का छोटा नन्दी और बाहर दक्षिण की ओर बड़ा नन्दी तथा छोटे बड़े कई प्रकार के घंटे लगे हैं, द्वार के दोनों ओर दो द्वारपाल हैं दस पन्द्रह अन्य देवमूर्तियाँ हैं, श्रीकेदारनाथ

जी की शृङ्गार मूर्तियाँ पंचमुखी हैं, यह हर समय वस्त्र तथा आभूषणों से सुसज्जित रहती हैं।

मन्दिर के पीछे दो तीन हाथ लम्बा अमृतकुंड है जिसमें दो शिवलिंग स्थित हैं, पूर्वोत्तर भाग में हंसकुंड तथा रेतस कूंड है, रेतस कुंड में जंघा टेक कर तीन आचमन बायें हाथ से तीन आचमन दाहिने हाथ से लिये जाते हैं, यहीं पर ईशानेश्वर महादेव हैं पश्चिम में एक सुबलक कुंड है, केदार मन्दिर के सामने एक छोटे अन्य मन्दिर में लम्बा उदक कुंड है इसमें भी रेतसकुंड की तरह आचमन किया जाता है, इस मन्दिर के पीछे मीठे पानी का एक और कुंड है इसका ही पानी पिया जाता है।

केदार महात्म्य का वर्णन

संक्षिप्त प्राचीन कथा--व्यास स्मृति (चौथा अध्याय) केदार तीर्थ करने से मनुष्य सब पापों से छूट जाता है।

महाभारत शल्य पर्व—(३८वाँ अध्याय) संसार में सात सरस्वती हैं (१) पुष्कर में सुप्रभा (२) नैमिषारण्य में कांचनाची, (३) गया में विशाला (४) अयोध्या में मनोरमा (५) कुरुक्षेत्र में ओघवती (६) गंगाद्वार में सुरेण (७) हिमालय में विमलोद का (शान्ति पर्व ३५वाँ अध्याय) महाप्रस्थान यात्रा अर्थात् केदाराचल पर

गमन करके प्राण त्याग करने से मनुष्य शिवलोक को प्राप्त करता है। (वनपर्व ८३वाँ अध्याय) केदार कुंड में स्नान करने से सब पाप नष्ट हो जाते हैं, कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन शिव के दर्शन करने से स्वर्ग मिलता है।

लिङ्ग पुराण—(९२वाँ अध्याय) जो मनुष्य संन्यास लेकर केदार में निवास करता है वह शिव के समान हो जाता है।

वामन पुराण—(३६वाँ अध्याय) केदार क्षेत्र में निवास करने से तथा डींडी नामक रुद्र का पूजन करने से मनुष्य अनायास ही स्वर्ग को जाता है।

पद्म पुराण—(पा० खं० ६१वां अध्याय) कुम्भ राशि के सूर्य तथा बृहस्पति हो जाने पर केदार का दर्शन तथा स्पर्श मोक्षदायक होता है।

कूर्म पुराण—(३६वाँ अध्याय) महालय तीर्थ में स्नान करने से केदार के दर्शन करने से रुद्र लोक मिलता है।

गरुड़ पुराण—(८१वाँ अध्याय) केदार तीर्थ सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाला है।

सौर पुराण—(६९वाँ अध्याय) केदार शंकरजी

का महातीर्थ है जो मनुष्य यहाँ स्नान करके शिव जी के दर्शन करता है, वह गणों का राजा होता है

ब्रह्म वैवर्त पुराण—(कृष्ण जन्म खंड १७वाँ अध्याय) केदार नामक राजा सतयुग में सप्तद्वीप का राज्य करता था, वह वृद्ध होने पर अपने पुत्र को राज्य दे वन में जा तप करने लगा, जहाँ उसने तप किया वह स्थान केदार खंड प्रसिद्ध हुआ। राजा केदार की पुत्री वृन्दा जो कमला का अवतार थी अपना विवाह नहीं किया घर छोड़कर तप करने लगी, उसने जहाँ तप किया वह स्थान वृन्दावन प्रसिद्ध हो गया।

शिव पुराण—(ज्ञान संहिता ३८वाँ अध्याय) शिव जी के १२ ज्योतिर्लिंग विराजमान हैं, उनमें से केदारेश्वर लिंग हिमालय पर्वत पर स्थित है, इसके दर्शन करने से महापापी भी पापों से छूट जाता है, जिसने केदारेश्वर लिंग के दर्शन नहीं किये उसका जन्म निरर्थक है।

स्कन्द पुराण—(केदार खंड प्रथम भाग ४०वाँ अध्याय) युधिष्ठिर आदि पांडव गण ने गोत्र हत्या तथा गुरु हत्या के पाप से छूटने का उपाय श्री व्यासजी से पूछा व्यास जी कहने लगे कि शास्त्र में इन पापों का प्रायश्चित नहीं है, बिना केदार खंड के जाये यह पाप

नहीं छूट सकते, तुम लोग वहाँ जाओ निवास करने से सब प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं, तथा वहाँ मृत्यु होने से मनुष्य शिवरूप हो जाता है, यही महापथ है।

गंगा द्वार से लेकर बौद्धाचल तक पचास योजन लम्बा और तीस योजन चौड़ा स्वर्ग का मार्ग केदार मंडल है, जिसमें निवास करने मात्र से मनुष्य शिवरूप हो जाता है केदार मंडल के अनेक तीर्थ है सैकड़ों शिव लिंग सुन्दर वन नाना प्रकार की नदियाँ, तथा पुण्यपीठ विद्यमान हैं।

हिमालय पर गढ़वाल जिले में ५ केदार हैं (१) केदारनाथ (२) मध्यमेश्वर (३) तुङ्गनाथ (४) रुद्रनाथ (५) कल्पेश्वर।

केदारपुरी में जाने की इच्छा करने वाला भी मनुष्य लोक में धन्य है, उसके २०० पीढ़ियों तक के पितर शिव लोक में चले जाते है केदार क्षेत्र सब क्षेत्रों में उत्तम है।

केदार शिवजी की दक्षिण दिशा में रेतस कुंड है इसका जल पीने से मनुष्य शिवरूप हो जाता हैं, इससे उत्तर में स्फटिक लिंग है जिसके पूर्व सात पद पर वन्हि तीर्थ में बर्फ के बीच में तप्त जल है इसी स्थान पर भीम-

सैन ने मुक्ताओं से श्री शंकरजी की पूजा की थी, इससे आगे महापथ है, वहाँ जाने से मनुष्य आवागमन से छूट जाता है।

मधु गंगा और मन्दाकिनी के संगम के पास क्रौंच तीर्थ है, क्षीर गंगा और मन्दाकिनी के संगम पर ब्रह्म तीर्थ है, उसके दक्षिण में बुदबुदाकार जल देख पड़ता है शिवजी के वाम भाग में इन्द्र पर्वत है। यहीं पर इन्द्र ने तप किया था। यहाँ एक शिव लिंग है। केदारनाथ से दस दण्ड पर हंस कुंड है जहाँ ब्रह्मा ने हंस रूप में रेत पान किया था। जो मनुष्य केदारनाथ के दर्शन कर रेतस कुंड का जल पीता हैं उसके हृदय में श्री शंकरजी स्थित हो जाते हैं। चाहे वह कितना भी पापी क्यों न हो किसी स्थान में किसी समय मरे किन्तु शिवलोक में निवास करेगा।

यहाँ श्राद्ध तथा तर्पण करने से पितर लोग परमपद को प्राप्त हो जाते हैं। 'केदारपुरी से भीमशिला तक महादेव जी की शैय्या है। इस केदार क्षेत्र में वर्षा काल में कमल और पुष्प होते हैं, श्रावण मास में यात्री उन कमलों द्वारा ही शिव जी का पूजन करते हैं। केदारनाथ जी से दो फर्लांग भुकुण्ड भैरव और आधा मील चन्द्र शिला तथा डेढ़ मील चोराबाड़ी ताल है। केदारनाथ से

तीन मील एक बड़ा भारी बासुकी ताल है। श्रीकेदार-नाथ जी सम्वत् २००६ की आय सेक्रेटरी श्रीनारायण-दत्त बहगुणा के प्रबन्ध से ७५ हजार के रही है।

ऊखी मठ

—:*:—

केदारनाथ से वापसी का रास्ता नाला चट्टी तक वही है। नाला चट्टी से एक रास्ता गुप्त काशी को चला जाता है, और दूसरा ऊखीमठ को नाला चट्टी से ऊखी मठ ३ मील के लगभग है, पहले उतराई है और पुल से ऊखी मठ तक कड़ी चढ़ाई है।

ऊखी मठ और गुप्त काशी के मध्य में गंगा नदी बहती है पहाड़ की चोटियों से दोनों स्थान दिखाई देते हैं, ऊखी मठ में डाक बंगला, हस्पताल, पोष्ट ओफिस और बाबा काली कमली की धर्मशाला है।

मन्दाकिनी के दक्षिण तट पर उत्तराखंड विद्यापीठ जनता की ओर से स्थापित है इस में संस्कृत तथा आयुर्वेदादि सब पढ़ाई होती है। यात्री लोग इस में विशेष दान देते हैं।

गुप्त काशी के विश्व नाथ मंदिर के समान ऊखी मठ में भी एक शिखर दार मंदिर है उसका द्वार दक्षिण की ओर है मंदिर में ओंकार शिव लिंग है उनके पूर्व राजा मान्धाता की बड़ी मूर्ति और आस-पास कई मूर्तियाँ हैं तीन सिंहासनों पर क्रमशः बद्रीनाथ, केदारनाथ तथा तुंगनाथ की मूर्तियां हैं, मन्दिर से पूर्व उत्तर मुख की कोठरी में ऊषा और अनुरुद्ध की मूर्तियां हैं, धातु के पत्र पर चित्ररेखा मूर्ति है, कोठरी से बाहर प्राचीन मूर्तियां हैं।

ओंकार के मन्दिर से पश्चिम की ओर दो-मंजिला मकान है, उसके नीचे की मंजिल में केदार नाथ गद्दी है, गद्दी के पास सुनहरे सिंहासन पर पंचमुखो महादेव हैं, जिनका एक मुख सोने का है, इनका छत्र चाँदी का है, शिव के पास में वस्त्र और आभूषणों से सजी हुई पार्वती की मूर्ति हैं, दूसरे कमरे में कुन्ती और द्रोपदी की मूर्तियाँ और युधिष्ठिर आदि पाँचों पांडवों की मूर्तियाँ हैं। यह स्थान ४५०० फीट है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्द पुराण (केदार खंड उत्तर भाग २४ वां अध्याय) गुप्त काशी के पूर्व मन्दाकिनी नदी के दूसरे पार राजा नल ने तप और राजेश्वरी देवी का पूजन किया था, वहाँ के नल कुण्ड

में स्नान करने से जन्म भर के पाप नष्ट हो जाते हैं सूर्यवंशी राजा युवनाश्व के पुत्र मान्धाता ने उस स्थान पर तप करके परम सिद्धि प्राप्त की थी।

मध्यमेश्वर

पंच केदारों में से एक मध्यमेश्वर ऊखी मठ से लगभग १५ मध्यमेश्वरका मन्दिर पक्का बना हुआ है, मन्दिर के निकट धर्मशाला है मार्ग में खाने पीने का सामान नहीं मिलता, साथ में ले जाना उचित है।

शिवजी के ५ क्षेत्र हैं, (१) केदार नाथ (२) मध्यमेश्वर (३) तुंगनाथ (४) रुद्रालय (५) कल्पेश्वर इनमें से केदारेश्वर का वर्णन हो चुका केदारपुरी से २ योजन दक्षिण मध्यमेश्वर क्षेत्र है, जिसके दर्शन मात्र से मनुष्य स्वर्ग में निवास करता है।

पूर्व समय में गौड़ देश का एक ब्राह्मण दर्शन की इच्छा से गंगा द्वार में गया, वह वहाँ से अनेक मुनियों को नमस्कार व दर्शन करता हुआ शिव क्षेत्र में पहुँचा फिर वहाँ से मध्यमेश्वर जाकर तीन रात्रि जागरण कर सरस्वती में स्नान तथा पितरों का तर्पण किया, आते समय मार्ग में उस ब्राह्मण के दर्शन मात्र से एक राक्षस शिवरूप होकर कैलाश में चला गया, ब्राह्मण ने अन्त में ब्रह्म सायुज्य पाया।

ऊखी मठ से ५।। मील दूर ग्वालिया बगड़ में पुल तक सीधा है, इसके बाद चोपता तक सात मील की सख्त चढ़ाई है, इस सात मील की चढ़ाई के अन्दर कई स्थानों पर तो बहुत ही कठिन चढ़ाई है, यहाँ से इस चढ़ाई के खत्म होने पर चमोली तक उतराई हैं कहीं कहीं सीधा भी रास्ता हैं इस मंजिल में निम्नलिखित चट्टियाँ आती हैं। ऊखी मठ से चमोली २७ मील है और तुङ्गनाथ १५ मील बनियां कुंड १२ मील है, गणेशचट्टी (कंथा) ऊखी मठ से ३।। मील है। ग्वालिया बगड़ गणेश चट्टी से दो मील है।

दैढ़ा ग्वालिया बगड़ से १ मील है।

गोद दैढ़ा से आधा मील है।

पोथी बासा, गोद से डेढ़ मील है।

दोगल भीटा, पोथी बासा से सवा दो मील है।

बनियां कुंड, दोगल भीटा से आधा मील है, बनियां कुंड में बाबा काली कमली की धर्मशाला है।

चोपता, बनियां कुंड सवा मील है।

चोपता से एक रास्ता तुङ्गनाथ जी को जाता है तुङ्गनाथ की दो मील की चढ़ाई है। तुंगनाथ की ऊँचाई १४ हजार फुट है यहाँ बाबा काली कमली वाले

की धर्मशाला है, तुंगनाथ की सड़क रा० ब० हजारीमल जी दूध वाले ने बनवाई है ।

तुङ्गनाथ

यह पंचकेदारों में से तीसरा है यहाँ के पर्वत पर सर्दी अधिक होने के कारण पेड़ भी पैदा नहीं होते हैं, पर्वत के शिखर के पास तुंगनाथ का मन्दिर है मन्दिर के शिखर पर से चन्द्रशेखर का मन्दिर दीख पड़ता है ।

मन्दिर के पश्चिम का द्वार पत्थरों का बना है, मन्दिर के शिखर पर १६ द्वार की बारहदरी के अन्दर ही मन्दिर का गुम्बज है तुंगनाथ अनगढ़ प्राकृतिक शिवलिंग है लिंग के सामने दो हाथ ऊँची शंकराचार्य जी की मूर्ति है मन्दिर के सामने एक और छोटा शिव मन्दिर है । जाड़े के दिनों में यहाँ के पुजारी पट बन्द करके १२ मील पर नीचे मक्कूमठ चले जाते हैं मन्दिर के आस पास धुआँ के से बादल हर समय देख पड़ते हैं, मन्दिर के पास ही एक गुफा है जिसमें वर्षा के समय यात्री बच सकते हैं, यहाँ से एक मील दूर चन्द्रशेखर का मन्दिर है, तुंगनाथ में बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है ।

मान्धाता क्षेत्र (ऊखी मठ) से दक्षिण की ओर दो योजन लम्बा और दो योजन चौड़ा तुंगनाथ क्षेत्र है जिसके दर्शन से मनुष्य सब पापों से छूट जाता है। प्रथम भैरव को नमस्कार फिर क्षेत्र में प्रवेश करना उचित है वहाँ ब्रह्मादिक देवता हर समय महेश्वर की स्तुति करते हैं वहाँ जितने कण जल चढ़ाया जाय उतने सहस्त्र वर्ष तक मनुष्य शिव लोक में निवास करता है बिल्व पत्र से पूजा करने वाला आवागमन से छूट जाता है।

तुंगनाथ क्षेत्र में आकाश गंगा के तीर पर पितरों का तर्पण करने से २१ कुल शिवलोक में निवास करते हैं शिव जी की मूर्ति के पास ही स्फटिक मणि का बना हुआ शिव लिंग है उससे दक्षिण की ओर गरुड़ तीर्थ है। उससे सवा कोस पर मानसर नामक सरोवर है इससे आगे श्री मर्कटेश्वर शिव लिंग हैं, जिनके दर्शन मात्र से मनुष्य शिव लोक में निवास करता है उसके दक्षिण भाग में मृकण्ड ऋषि के आश्रम में महेश्वर देवी विराजती हैं।

भुलकनाचट्टी दो मील उत्तर है।

जंगल चट्टा दो मील पर हैं इसको पांगरवासा भी कहते हैं।

मण्डल चट्टी—पांगरवासा से ३।। मील है रास्ता जंगल का है यहाँ बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है डाक बँगला बड़ा सुन्दर मैदान है चट्टी अच्छी है।

मण्डल गाँव

मण्डल चट्टी बालखिला में पुल है, दूसरी नदी अनसूया और अमृतकुण्ड से आकर मंडल के पास बालखिला नदी में मिल गई है, यहाँ के संगम को व्योम प्रयाग कहते हैं यहाँ पर राजा सगर ने अश्वमेध यज्ञ किया था, पहले वहाँ बहुत मन्दिर थे अब एक देवी का मन्दिर है, इसको मंडल तीर्थ भी कहते हैं।

कथा बाल्मीकि रामायण (बालकांड) सूर्यवंश में राजा असित हुए जिनको हैहय तालजंघ और शशिबिन्दु इन तीन राजाओं ने मिलकर निकाल दिया था तब राजा अपनी पत्नियों सहित हिमवान पर्वत पर रहने लगे वहाँ भाग्यवश दो रानियाँ गर्भवती हुईं एक ने द्वेषवश दूसरी का गर्भ विष देकर गिराना चाहा लेकिन उसने च्यवन ऋषि की सेवा से पुत्र लाभ प्राप्त कर अपना गर्भ सुरक्षित रख लिया, समय पाकर उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसक नाम सगर रक्खा गया।

सगर के भी कोई सन्तान न हो सकी, इससे सगर ने १०० वर्ष तक तप किया फिर भृगु मुनि ने उनसे प्रसन्न होकर पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया जिसके कारण सगर की ज्येष्ठ रानी एक पुत्र तथा छोटी रानी के साठ हजार पुत्र हुये।

रुद्रनाथ

यह पाँच केदारों में से चौथा है मंडल गाँव वाले पुल के पास से होकर एक पहाड़ी रास्ता गया है मंडल गाँव से रुद्रनाथ का मन्दिर १२ मील पर है कोई बिरला यात्री ही यहाँ जाता है।

सदाशिव जी रुद्रालय का कभी त्याग नहीं करते इस क्षेत्र के दर्शन मात्र से मनुष्य का जन्म सफल हो जाता है पूर्वकाल में देवताओं ने अन्धकासुर से पराजित हो हिमालय पर रुद्रालय में जा शिवजी से अपना दुःख कह सुनाया और उनसे यह वर माँगा कि तुम सर्वदा यहीं निवास करो श्री शिवजी ने कहा कि मैं अन्धकासुर को मारकर यहीं निवास करूँगा, इसके पश्चात् सभी देवता अपने स्थान को चले गये।

यहां पितरों को तारने वाली बैतरिणी नदी बहती है वहाँ पिण्डदान करने से गया के समान फल मिलता है।

पूर्वकाल में युधिष्ठिर आदि पाँडवगण गोत्रहत्या के पाप से छुटकारा पाने को रुद्र क्षेत्र में आये और महादेवजी के दर्शन कर पापों से छूट जाता है।

वैरागना चढ़ती दो मील सीधा रास्ता है।

गोपेश्वर

गोपेश्वर—२॥ मील है, गोपेश्वर का शुद्ध नाम गोस्थल है, गोपेश्वर का मन्दिर एक बड़े चौगान के मध्य में खड़ा है, चौगान के चारों ओर मकान धर्मशालायें हैं, यह मन्दिर ३० फुट लम्बा और इतना ही चौड़ा है, मन्दिर के शिखर पर २४ द्वार की बारहदरी है, गोपेश्वर शिवलिंग के पास में चाँदी की शृंगार मूर्ति है, पश्चिम की ओर पार्वती की मूर्ति है। मन्दिर के बाहर पश्चिमोत्तर में वृक्ष पर लपटी हुई कल्पलता है जो बहुत पुरानी है और प्रत्येक ऋतु में फूल देती है मन्दिर से बाहर चौगान में ६ हाथ ऊँची कई धातुओं का बना हुआ त्रिशूल खड़ा है। त्रिशूल के समीप गंगीजी की छोटी मूर्ति है।

अग्नि तीर्थ के पश्चिम भाग में गोस्थल नामक स्थान है जहां पार्वती सहित श्रीमहादेवजी निवास करते हैं उस स्थान में त्रिशूल बड़ा आश्चर्यजनक है। वह बलपूर्वक हिलाने से भी नहीं हिलता उस स्थान में पाँच रात्रि निवास कर जप करने से देव दुर्लभ सिद्धि प्राप्त होती है जहाँ से पूर्व की ओर चपकेत नामक महादेव हैं, पूर्वकाल शिव जी ने इसी स्थान पर काम को भस्म किया था और फिर कामदेव की स्त्री रति ने भगवान शंकर की आराधना की थी तभी उस स्थान पर रतीश्वर नाम से प्रसिद्ध हो निवास करने लगे, यहाँ रतिकुण्ड है इसमें स्नान करने से शिवलोक मिलता हैं।

चमोली—गोपेश्वर से २॥ मील है, चमोली इस यात्रा में प्रधान स्थान है, यहां डाकखाना, तारघर, थाना, अस्पताल और कचहरी है. डाक बँगला आदि सभी आवश्यक सामग्री यहाँ पर है। ३१५० फीट है। पक्का बाजार है जो यात्री गोपेश्वर से आते हैं और सीधे ही बद्रीनाथ जी जाना चाहते हैं वह अलकनन्दा के किनारे किनारे सीधे मठचट्टी चले जाते हैं। जो यात्री चमोली में अन्दर जाना चाहते है उनको अलकनन्दा का लोहे का पुल पार करना होता है, पुल के उतरते ही ५० गज के फासले पर श्री काली कमली

वाले की धर्मशाला है, चमोली से नन्द प्रयाग ७ मील है और कर्णप्रयाग २० मील है, कर्णप्रयाग से नन्द प्रयाग तक मोटर लोरी चालू है।

चमोली से ४ मील के फासले पर विरहि नदी के किनारे गोहना गाँव है, १८९३ ई० की ६ सितम्बर को गोहना गाँव के पास पर्वत का ४०० गज ऊँचा शृंग (खण्ड) विरही नदी में गिर गया था, उसी के गिरने से नदी का प्रवाह रुक गया, जो एक किनारेसे दूसरे किनारे तक प्रायः १॥ मील लम्बा और एक मील चौड़ा मिटी का ढेर हो गया था और पानी के रुक जाने से एक बड़ा तालाब बन गया, कोई बिरही ताल और कोई गोहना ताल इसे कहते हैं। सन् १८९४ ई० की २५ अगस्त शनिवार को १२॥ बजे रात को ८५० फुट ऊँची डाट अर्थात् पानी का रुकाव होने के कारण ३२० फुट बह गई, पानी विकराल रूप से आगे बढ़ा, पानी बढ़ने से अलकनन्दा की धारा १२ मील तक हो गई एक घंट में लगभग २० मील पानी की रफ्तार हो गई। जिससे अलकनन्दा के दोनों किनारों पर बसने वाले कई गाँव व कस्बे बह गये जिनमें पुराना श्रीनगर भी शामिल है हजारों व काफी मनुष्यों की क्षति हुई।

कथा इस प्रकार लिखी है :—

नन्द प्रयागसे एक योजन शिवलिंग है, उससे उत्तर की ओर ब्रिहि नदी है, इसमें स्नान करने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं, इससे आगे बिरही नदी है, इसके तट पर पूर्वकाल में सती के विरह से संतप्त होकर श्रीमहादेव जी ने तप किया था, फिर चण्डिका ने प्रसन्न होकर कहा था कि हे देवेश ! मैं हिमवान् गृह में जन्म लेकर आपकी पत्नी बनूँगी उसके उपरान्त महादेवजी कैलाश चले गये, किन्तु उस स्थान पर विरहेश्वर नाम से स्थित हो गये, यहाँ स्नान करने का बड़ा महात्म्य है ।

चमोली से बद्रीनाथ ४८ मील है और पहले मठ चट्टी आती है ।

मठचट्टी—चमोली से २। मील पर है, चट्टी बहुत सुन्दर वाटिका व वृक्ष सुन्दर हैं ।

छिनका चट्टी—मठचट्टी से १॥ मील पर है ।

सियासैण (सीताशयन) चट्टी ३ मील पर है । इस पहाड़ी पर ३ मील दूर एक सुन्दर पत्थर पर श्रीरामचन्द्र जी के चरणचिन्ह हैं इस सीता शयन चट्टी पर गंगा किनारे महादेवजी का मन्दिर है । जो ता० ४ अगस्त ४६ की रात के महारोड़े से बचा है ।

हाट चट्टी—सियासैण से एक मील पर है ।

पीपल कोटी—हाट चट्टी से तीन मील पर है और चढ़ाईहै। हाट से आधा मील अलकनन्दा का पक्का पुल है फिर पीपल कोटी की चढ़ाई शुरू होती है यहाँ पर डाक बँगला-डाकघर-टेलीफोन-अस्पताल आदि हैं। बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है।

नोट—चमोली से जोशीमठ तक मोटर की सड़क पीपल कोटी होकर बनाई जा रही है।

गरुड़गंगा—पीपलकोटी से ३॥ मील गरुड़गंगा है, गरुड़गंगा में बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है गरुड़गंगा की धारा पर्वत से नीचे जोर शोर से गिरती है जिसमें यात्री स्नान करते हैं, सर्प के भय से बचने के लिए इसके छोटे२छोटे पत्थरों के टुकड़े यात्री अपने घर ले जाते हैं, यहाँ पर गंगा के किनारे छोटा सा गरुड़ का मन्दिर है यात्री लोग गरुड़जी को पेड़ा चढ़ाते हैं, और यात्रीगण मार्ग की सफलता के लिये गरुड़ जी का प्रसाद भी बाँटते जाते है महाभारत के शान्तिपर्व अध्याय ३२७ में लिखा है कि हिमालय पर्वत पर गरुड़जी सदा निवास करते हैं यहाँ खड़ी पहाड़ी गुफा है और कोठरी में दाहिने गरुड़ और बायें विष्णु की मूर्ति है गंगा पर पुल बना है।

टंगन चट्टी—२ मील पर है चढ़ाई है।

पाताल गंगा—२ मील पर है पाताल गंगा का रास्ता बड़ा भयानक है बड़ी सावधानी से चलना होता है, वर्षा होने पर रास्ता टूट जाता है ऊपर से पत्थर गिरते रहते हैं नीचे से पैर फिसल जाता है नीचे कच्चा पहाड़ है बद्रीनाथ की यात्रा में यह रास्ता बड़ा भयानक है ।

गुलाब कोटी—दो मील है यहाँ डाक बँगला है । हैलंग (कुम्हार चट्टी) गुलाब कोटी से दो मील पर ६००० फीट है, यहाँ बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है जगह अच्छी है । पूरब की ओर पहाड़ पर श्री राजराजेश्वरी पीठ है यहाँ नवरात्र में मेला होता है हैलंग के पास डुंगरी गाँव में नारायणसिंह रावत लोगों को ठगने में बड़ा निपुण है अतः इस ठग से बचना चाहिये ।

आदि बद्री

कुम्हार चट्टी से ६ मील पश्चिमोत्तर अलकनन्दा के उस पार ऊर्गम गांव है जहां अर्जमुनि ने तप किया था, उसी स्थान पर पंचबद्री में से आदि बद्री विराजते हैं, अजमुनि की कथा मंडल गांव की कथा में देखे ।

कल्पेश्वर

आदि बद्री से २ मील आगे पंच केदारों में से कल्पेश्वर महादेव का मन्दिर है, कुम्हार चट्टी से आदि बद्री और कल्पेश्वर का दर्शन करके फिर कुम्हार चट्टी पर लौट कर जाना होता है यहाँ कोई कोई यात्री जाते है।

शिवजी के पाँच स्थानों में से पांचवां स्थान कल्प-स्थल नाम से प्रसिद्ध है उसी स्थान पर देवराज इन्द्र ने दुर्वासा जी के शाप से श्रीहत होने के पश्चात् महादेव जी का पूजन किया था और कल्पवृक्ष प्राप्त किया था तभी से शिवजी यहाँ कल्पेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुये कथा निम्न प्रकार है—एक समय इन्द्र ऐरावत हस्थी पर चढ़ कर कैलाश में गया, वहाँ पर महर्षि दुर्वासा ने एक स्त्री से फूलमाला मँगा कर इन्द्र को दी इन्द्र ने अभिमान के कारण उस माला को हस्थी के सिर पर रख दिया तब दुर्वासा ने अपना तिरस्कार समझ कर शाप दिया कि तुमने लक्ष्मी से प्रमत्त हो मेरा तिरस्कार किया है इसलिये तुम श्रीहीन हो जाओ तब इन्द्र ने प्रार्थना की कि हे प्रिय! मैंने अज्ञान से तुम्हारा अपमान किया है अतः क्षमा करो दुर्वासा बोले कि हे दुर्बुद्धि इन्द्र मेरा शाप अमोघ है तुम महादेव जी की आराधना करो

फिर अपना पूर्व पद प्राप्त कर सकोगे, इसके पश्चात् इन्द्र ने अपने शत्रुओं से पराजित होकर राज्य भ्रष्ट हो गया और उसकी लक्ष्मी नष्ट हो गई जंगल में हाहाकार मच गया, तब इन्द्र के सहित सभी देवताओं ने श्री महादेव जी की स्तुति की और कल्पवृक्ष पाकर पुनः अपनी लक्ष्मी प्राप्त की।

इन्द्र ने दस हजार वर्ष तक शिव जी की आराधना कर अपने शाप की व्यथा सुनाई इससे प्रसन्न हो महादेव जी ने कहा कि मेरे तृतीय नेत्र का जल समुद्र में गिरा कर पुनः मन्थन करो, इससे लक्ष्मी पुनः प्रकट होगी, इन्द्र सहित सभी देवताओं ने इसी प्रकार किया और लक्ष्मी तथा कल्पवृक्ष को प्राप्त किया जिस स्थान पर इन्द्र ने तप किया था वह कल्पस्थल नाम से प्रसिद्ध हुआ।

कल्पस्थल में शिवलिंग के दक्षिण की ओर कपिल लिंग है, जिसके दर्शन मात्र से मनुष्य शिवलोक में पूजित होता है, उसके नीचे हिरण्यवती नदी बहती है, इसके तीर पर श्री भृङ्गेश्वर महादेव हैं, इस क्षेत्र का विस्तार २ कोस है।

केदार, मध्यमेश्वर, तुंगनाथ, कल्पेश्वर और महा-

लय रुद्रनाथ के यह पाँच महा स्थान है, जो मनुष्य भक्ति भाव से ज्ञान से अज्ञान से इन क्षेत्रों में जाते हैं और दर्शन मात्र से ही पापी मनुष्य भी पवित्र हो जाते हैं और इस लोक में सुन्दर भोगों को भोग कर अन्त में मोक्ष पाते हैं।

वृद्ध बद्री

कुम्हारचट्टी से एक पगडंडी गई है यहाँ पर दो मकान और वृद्ध बद्री का मन्दिर है। दाहिने ओर पहाड़ पर पैनी गाँव है, और कई गुफायें यहाँ पर पहाड़में पाई जाती हैं, इस स्थान के देखने से पता चलता है कि पूर्व-काल में यहाँ साधु महात्मा तप करने वाले रहते रहे हैं।

खनोटी चट्टी—हैलंग से १ मील पर है।

भरकुला—खनोटी से २॥ मील पर है।

सिंह धार—२ मील है, यहाँ से जोशीमठ तक तमाम बस्ती और दुकान मकानात ही हैं।

जोशीमठ—सिंहधार से १ मील ७५०० फीट है।

जोशी मठ

जोशी मठ का नाम ज्योतिष्पीठ है श्री आदि भगवान शंकराचार्य जी ने यहाँ पर अपना मठ स्थापित किया इसी लिये यह जोशीमठ प्रसिद्ध हुआ यहाँ पर

भगवान शंकराचार्य ने मठ की स्थापना की थी यहीं पर शंकर गुफा हैं जहाँ बैठ कर उपनिषद् और शांकर भाष्य लिखा गया हैं कहा जाता है कि जो शहतूत का पेड़ वहाँ है यह आद्य शंकराचार्य के समय का है जिसको २४ सौ वर्ष के लगभग होते हैं बहुतकाल तक मठ की प्रक्रिया यहाँ से चलती रही और धर्म प्रचार का कार्य होता रहा और बद्रीनाथ के मन्दिर की सब व्यवस्था इस मठ के आधीन रहती चली आई और पूजा का प्रबन्ध मठ द्वारा ही होता रहा।

बड़े हर्ष का विषय है कि १० वर्ष से इस मठ में अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती जी हैं और अब इस मठ का कार्य आप के द्वारा हो रहा है ज्योतिष्पीठ के मठ में किसी प्रकार का चढ़ावा भेंट आदि कुछ न ली जाती है इस ज्योतिष्पीठ मठ को किसी प्रकार की किसी की दी हुई कोई आमदनी नहीं है यह एक महापुरुष की दैवी शक्ति का विकास है ज्योतिष्पीठ में बड़ा सुन्दर स्थान बना हुआ है और श्री पूर्णागिरि देवीका मन्दिर है और पीठाश्रम में ब्रह्मचर्याश्रम संस्कृत विद्यालय की स्थापना हो चुकी है।

जोशीमठ में डाकखाना, तारघर, शफाखाना, पुलिस, डाकबँगला आदि सभी स्थान हैं बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है बड़ी अच्छी सुन्दर बस्ती है शीत-

काल में श्री बद्रीनाथ की पूजा और चल मूर्ति यहां पर रहती है और मन्दिर का कार्यालय दीपमालिका के बाद पट खुलने तक यहीं रहता है। यहाँ पर नृसिंह जी का मन्दिर तथा वासुदेव मन्दिर है। नृसिंह जी के मन्दिर में राम लक्ष्मण बद्रीनाथ और चण्डी की मूर्तियाँ हैं।

वासुदेव के मन्दिर में भगवान कृष्ण की श्याम मूर्ति व बलदेव की मूर्ति हैं, दोनों मूर्तियाँ बहुत पुरानी हैं लोगों का कहना है कि इनकी स्थापना भगवान शंकराचार्य ने की थी, इस मन्दिर में गणेश जी की ८ भुजा की विचित्र मूर्ति है, ६ दुर्गाओं की ६ मूर्तियाँ हैं एक स्थान पर शिव पार्वती की मूर्ति है, जिसको लोग तांडव शिव मूर्ति कहते हैं, मन्दिर के बाहर चबूतरे पर पीतल की गरुड़ की मूर्ति है।

ज्योतिर्मठाम्नाय

इस आम्नाय का नाम ज्योतिर्मठ है जो उत्तर में है। इसका दूसरा नाम श्रीमठ है। सम्प्रदाय आनन्दवार है। अंकित पद का नाम गिरि, पर्वत तथा सागर है, क्षेत्र का नाम बदरिकाश्रम है, देवता का नाम नारायण है, देवी का नाम पूर्णागिरी है, आचार्य का नाम तोटक है, तीर्थ का नाम अलकनन्दा है, ब्रह्मचारी का नाम

'आनन्द' है, महावाक्य 'अयं आत्मा ब्रह्म' वेद अथर्व है, गोत्र भृगु है, कुरु, काश्मीर, काम्बोज, पांचाल देश जो उत्तरीय भाग में है वह ज्योतिर्मठ के अन्तर्गत हैं, इस मठ का निर्माण ग्यारह वर्ष की आयु में जगद्गुरु भगवान शंकराचार्य ने कलिसम्वत् २६४२ में किया था इस मठ के जगद्गुरु तोटकाचार्य (त्रोटकाचार्य) शंकराचार्य हुए।

जगद्गुरु श्री आद्य शंकराचार्य

वैशाख शुक्ल पंचमी आचार्य शंकर की जयन्ती की तिथि है। उसी तिथि को आचार्य इस धराधाम पर अवतीर्ण हुए थे। धर्म की मर्यादा तथा वैदिक धर्म की रक्षा के लिए हमारे शंकर ने जितना अनमोल काम किया है उसके लिये हमें उनका परम कृतज्ञ होना चाहिए। आचार्य द्वारा प्रतिष्ठित अद्वैत मार्ग सारे संसार का व्यावहारिक धर्म है।

आज से लगभग तेरह सौ वर्ष पूर्व शङ्कर का जन्म केरल प्रान्त के कालटी ग्राम में नम्बूदरी ब्राह्मण शिवगुरु (केशव भट्ट) की धर्मपत्नी सती देवी के गर्भ से हुआ था। उनके जीवन की घटनाओं में से एक ही श्लोक यहाँ काफी होगा। 'अष्ठ वर्षे चतुर्वेदी द्वादशे

सव शास्त्रवित् । षोडशे कृतवान् भाष्यं द्वात्रिंशे मुनि-रभ्यगात्' ॥ १ ॥ आठवें वर्ष में उन्होंने चारों वेदों का अध्ययन समाप्त कर दिया, बारहवें वर्ष में सब शास्त्रों के पण्डित बन गये, सोलहवें साल में उन्होंने भाष्योंकी (ब्रह्मसूत्र, गीता तथा उपनिषदों पर भाष्यग्रन्थों की) रचना की ओर बत्तीसवें वर्ष वे कैलाशवासी हो गये। इन बत्तीस वर्षों के अन्दर उन्होंने वह कार्य कर दिखाये जो आज भी हमें आश्चर्य चकित कर देते हैं।

भारत के प्रसिद्ध सुधारक आचार्य शंकर व्यवहार-कुशल यथार्थवादी थे। यही तो उनकी भारी विशेषता है। ऊँचे अध्यात्मवेत्ता होने पर भी वे अत्यन्त व्यवहार-कुशल हैं। वेद तथा धर्म के रक्षण कार्य को भविष्य में सुचारु रूप से चलाने के लिये उन्होंने परोप-कार परायण सन्यासियों को संघरूप में संघटित किया तथा भारत के चारों धामों में उन्होंने चार मठों की स्थापना की—शृङ्गेरीमठ (दक्षिण भारत मैसूर में) गोवर्धन मठ (जगन्नाथपुरी में) शारदा मठ (द्वारिका में) तथा ज्योतिर्मठ (बदरी-नारायण में) इन दोनों संस्थाओं ने आचार्य के उद्देश्यों की पूर्ति अच्छे ढंग से की है।

भविष्य बद्री

जोशी मठ के शफाखाने के पास से एक मार्ग जाता है वहाँ से ६ मील तपोवन है, इस तपोवन के सम्बन्ध में महाभारत शान्तिपर्व ३२७वें अध्याय में लिखा है कि व्यासदेव हिमालय की पूर्व दिशा को अवलम्बन करके यहाँ आये थे और अपने शिष्यों को वेद पढ़ाते थे और उनके पुत्र सुकदेव भी इस आश्रम में आये। इस तपोवन से ५ मील आगे धोली गंगा के निकट पंच बद्री में से भविष्य बद्री का मन्दिर है जिसको तप बद्री भी कहते हैं।

विष्णु प्रयाग

जोशी मठ से विष्णु प्रयाग ३ मील ४५०० फीट है, बद्रीनाथ को जाते हुए बड़ी उतराई है और आते हुए बड़ी चढ़ाई है, नीचे जाकर धौली गंगा का १२० फुट लम्बा काठ का पुल है जब यात्री पुल पर चलते हैं तो पुल हिलता है। यहाँ पर उत्तर की तरफ से अलकनन्दा आई है और पूर्व की नीची घाटी से धौली गंगा आई है जिसको लोग विष्णु गंगा भी कहते हैं यहाँ पर अलकनन्दा और धौली गंगा का संगम है।

इसके सम्बन्ध में यह लिखा है कि विष्णु प्रयाग में १० प्रधान तीर्थ हैं ब्रह्मकुण्ड, शिवकुण्ड, गणेशकुंड, भृङ्गीकुण्ड, ऋषिकुण्ड, सूर्यकुण्ड, दुर्गाकुण्ड, धनद और प्रह्लादकुण्ड हैं। महर्षि नारद ने इस प्रयाग में विष्णु की आराधना की सर्वज्ञत्व लाभ किया तभी से यह विष्णुकुण्ड या प्रयाग प्रसिद्ध हुआ शेष ८ कुण्ड इसके थोड़े फासले पर हैं लेकिन आना जाना कठिन है।

बलदौड़ा चट्टी—विष्णु प्रयाग से १॥ मील है यहाँ बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है रास्ता साधारण चढ़ाई का है।

घाटचट्टी—बलदौड़ा से ३ मील पर है रास्ता साधारण चढ़ाई का है।

पाण्डुकेश्वर नाम कैसे पड़ा

—:*:—

पांडुकेश्वर—घाटचट्टी से दो मील ६००० फीट है यहाँ पर डाकबँगला, पोस्ट आफिस तथा बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है। पूर्वकाल में राजा पांडु ने मृग रूपी मुनि के शाप से दुखी होकर इस स्थान पर तप किया था तभी से वह स्थान पाण्डु स्थल नाम से प्रसिद्ध हो गया, उस समय विष्णु भगवान प्रकट होकर बोले कि हे पाण्डु ! तुम्हारे येन्न धर्मादिकों के अंश से बलवान् पुत्र उत्पन्न होंगे, ऐसा कह विष्णु भगवान अन्तर्ध्यान हो गये, उस स्थान पर पाण्डवीश्वर महादेव विराजते हैं।

योग बद्री

पाण्डुकेश्वर में योग बद्री का शिखरदार मन्दिर है यह बहुत प्राचीन होने के कारण जर्जर हो गया है, योग बद्री पाँच बद्रियों में से एक है।

बासुदेव का मन्दिर—योग बद्री से आगे पास ही सामने इसी के आकार का एक बासुदेव जी का मन्दिर है।

शेष धारा

शेष धारा—पाण्डुकेश्वर से १ मील पर था और वहाँ पर शेषजी का मन्दिर व रामानुज कोट की धर्मशाला थी किन्तु सम्वत् १६६८ की बाढ़ में सब कुछ बह गया अब किसी स्थान का भी पता नहीं है। यह शेष की तपस्या का स्थान था। अब पास ही में धर्मशाला बन गई है।

हनुमान चट्टी—यह बद्रीनाथ से चार मील पर है। यहाँ पर आमने सामने नई और पुरानी धर्मशालायें हैं, और हनुमान जी का बड़ा दिव्य मन्दिर है पहले यहाँ पर हनुमान जी निवास करते थे, महाभारत में उसकी बड़ी रोचक कथा है, जब पाण्डव वनवास के दिनों में गन्धमादन पर्वत पर विचरण कर रहे थे तब बद्रीनाथ (अलकापुरी) जाते समय भीम यहाँ से जा रहे थे रास्ते में उन्हें एक पतला दुबला बन्दर पड़ा दिखाई दिया, उसकी पूँछ बड़ी थी, रास्ते को रोके पड़ा था भीमसैन को बल का बड़ा गर्व था इन्होंने कहा ओ बन्दर रास्ते को रोके हुए क्यों पड़ा है पूँछ हटा ले बन्दर ने विनीत भाव से कहा—भैय्या मैं बूढ़ा हो गया हूँ, मुझमें इतनी शक्ति नहीं रही थोड़ा तुम ही कष्ट करो, मेरी पूँछ को हटा कर उधर कर दो भीम ने उपेक्षा से एक हाथ से पूँछ

को हटाना चाहा लेकिन पूँछ नहीं उठ पाई, फिर भीम ने पूरी शक्ति लगाई, मगर पूँछ टस से मस नहीं हुई, भीमसैन के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, दोनों पवन पुत्र थे, परिचय पाकर दोनों गले लगे भीमसैन की प्रार्थना पर हनुमान जी ने अपना असली रूप दिखाया जिसे देखते ही भीम चकित हो गया, वहाँ अब भी हनुमान जी की मूर्ति है।

वैखानस मुनि का स्थान

हनुमान चट्टी के पास अलकनन्दा के उस पार पर क्षीर गंगा और घृत गंगा का संगम है उस स्थान पर वैखानस मुनि ने तप किया था लोग कहते हैं कि यहाँ पर किये गये यज्ञ की भस्म अब तक पाई जाती है, राजा मरुत ने भी यज्ञ इसी स्थान पर किया था।

संक्षिप्त प्राचीन कथा स्कन्द पुराण केदारखंड (५८ वाँ अध्याय) बद्रीकाश्रम से २ कोस पर वैखानस मुनि का आश्रम और यज्ञ भूमि है। जिस स्थान पर देवताओं को यज्ञ की आहुति दी गई थी, उसे आजकल 'औत' कहते हैं यह गाँव ८—१० घर का है। जिसके पास विन्दुमती नदी बहती है, यहाँ पर अब तक भी जले हुए यव (जौ) तिल तथा अङ्गार देख पड़ते हैं। उससे

आगे पर्वत पर योगेश्वर नामक भैरव है, उसका पूजन सर्व-पाप-भञ्जन है।

राजा मरुत के यज्ञ में बृहस्पति सहित सम्पूर्ण देव हिमालय पर्वत पर एकत्रित हुए थे, युधिष्ठिर आदि पाण्डव गण व्यासदेव जी की आज्ञानुसार राजा मरुत के यज्ञस्थल में रत्न लाने के लिये अपनी सेनाओं सहित एकत्रित हुए और भेंट में ऊँट घोड़ों हाथियों एवं रथों में भर कर नाना प्रकार के रत्न हस्तिनापुर को ले गये। यह स्थान वैखानस तीर्थ ही है।

हनुमान चट्टी से १ मील घोर सिल पुल और उससे आगे १ मील चढ़ाई से रडंग का लोहे का पुल है आगे १ मील चल कर सीधा रास्ता है। यहाँ पर एक चाय की दुकान मिलती है आगे आधा मील पर कांचन गंगा की चढ़ाई है यहाँ से श्री बदरी नारायण पुरी के दर्शन होते हैं। श्री बद्रीकापुरी के दर्शन करते ही सारे पहाड़ों की थकान दूर हो जाती है और मन प्रफुल्लित हो जाता है। आगे आधी मील पुरी है। पहले अलकनन्दा का पुल पार कर ऋषि गंगा का पुल लांघते ही श्रीबदरी विशाल पुरी जो १०२४४ फीट है और नर नारायण पर्वतों के बीच अलकनन्दा के दक्षिण तट पर २ फर्लांग लम्बी है जिसके आखीरी हिस्से में भगवान् का मन्दिर

है। उस पुरी में अनेक जन्मों के पुण्य उदय होकर आप पहुँचे हैं एक बार प्रेम से बोलिये भगवान बदरी विशाल की जय।

श्री बद्रीनाथ

बद्रीनाथ में अलकनन्दा नदी उत्तर से आई है, यहाँ चारों तरफ पर्वतों के ऊपर बर्फ जमी है, जाड़े के दिनों में भूमि और मकानों पर सर्वत्र बर्फ का ढेर लगा रहता है, बद्रीनाथ की सबसे ऊँची चोटी समुद्र की सतह से २३२०० फुट है।

बद्रीनाथ का मन्दिर—इसके शिखर पर दोहरी चकूटी है, इसमें चार द्वार हैं, मन्दिर के अन्दर सामने ही एक हाथ ऊँची बद्रीनारायण की द्विभुजी श्यामल मूर्ति है, बहुमूल्य वस्त्र आभूषण तथा विचित्र मुकुट से सुशोभित ध्यानमग्न बैठे हैं, इनके ललाट पर हीरा लगा हुआ है, ऊपर सोने का छत्र है, बद्रीनारायण के पास लक्ष्मी जी, नर, नारायण, नारद, गणेश, गरुड़, कुबेर, तथा उद्धव जी की मूर्तियाँ हैं, कुबेर का मुख मण्डल मात्र है, कहा जाता है कि बद्रीनाथ जी पहले गुप्त थे लगभग ८वीं शताब्दी में भगवान श्री शङ्कराचार्य जी ने इनकी

मूर्ति को नदी में पाया और मन्दिर बनवा कर स्थापित किया।

कूर्म पुराण ब्राह्मी संहिता २९वें अध्याय में लिखा है कि नील लोहित शङ्कर भक्तों के हितार्थ और तथा स्मार्त मत की प्रतिष्ठा के लिये सकल वेदान्त सार ब्रह्मज्ञान तथा वास्तविक सनातन धर्म का उपदेश अपने शिष्यों को देंगे। शिव पुराण सातवें खण्ड के प्रथम अध्याय में श्री शंकराचार्य जी को शिव का अवतार माना है।

बद्रीनाथ जी के पट नियत समय पर दिन में चार बार खुलते हैं, यात्री लोग किसी समय बीच वाले दालान में जाकर, और किसी समय जगमोहन में रहकर दूर ही से दर्शन करते हैं। साधारण यात्री अनेक भाँति के मेवे और चने की दाल, वस्त्र, भूषण, रुपये पैसे भी बद्रीनाथ जी के अर्पण करते हैं कुछ यात्री सोने, चांदी या ताम्बे के पतरों पर लिखी हुई प्रतिमा को बद्रीनाथजी से स्पर्श करके अपने साथ घर ले जाते हैं, भगवान् बद्रीनाथ जी का प्रातःकाल जलपान एवं मध्यान्ह के समय २ मन का भोग लगता है, जिसको यात्री जाति-भेद विचार के बिना बड़े प्रेम तथा श्रद्धा के साथ खाते हैं, पूर्व समय की अपेक्षा अब मार्ग सुगम हो गया है, यहाँ प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में यात्री आते हैं।

बद्रीनाथ के मन्दिर के पीछे धर्मशाला नाम की एक शिला है, बायें ओर एक कुण्ड है, उत्तर की ओर एक कोठरी में घंटाकर्ण की बिना धड़ की मूर्ति है इन्हें भगवान का द्वारपाल या कोतवाल कहते हैं इनकी कथा हरिवंश पुराण ७६वें अध्याय से १३ अध्याय में बड़ी सुन्दर वर्णित हैं और पूर्व मैदान में पाषाण की गरुड़ की मूर्ति है, मन्दिर के आस पास अन्य कई मूर्तियाँ हैं। मन्दिर से दक्षिण की ओर एक गुम्बजदार लक्ष्मीजी का मन्दिर है, इसमें लक्ष्मीजी की श्याम वर्ण मूर्ति वस्त्र व आभूषणों से सुसज्जित है मन्दिर के पास ही एक बड़ा भंडार है जिसमें श्री बद्रीनाथ जी के प्रसाद स्वरूप ३ मन भात पकते हैं।

पंच तीर्थी—बद्रीकाश्रम में ऋषगंगा, कूर्मधारा, प्रह्लाद धारा, तप्त कुंड और नारद यह पाँच पावन कुंड हैं इन्हीं का नाम पंच तीर्थी है। (१) ऋषिगंगा—यह बद्रीनाथ के मन्दिर से सवा मील पर है और थोड़ा आगे अलकनन्दा में मिली है इसमें यात्री स्नान व मार्जन करते हैं जल साफ है। कूर्म धारा—बद्रीनाथ मन्दिर से कुछ दूर दक्षिण की ओर एक दीवार में कूर्म का मुख बना है, (२) प्रह्लाद धारा—कूर्म धारा से उत्तर की ओर एक चबूतरे के नीचे एक नल के द्वारा पानी

गिरता है, इसको प्रह्लाद धारा कहते हैं। (४) तप्तकुंड—बद्रीनाथ मन्दिर के सामने ६५ सीढ़ियों के नीचे १५ हाथ लम्बा १२ हाथ चौड़ा एक कुंड है, इसमें जल हर समय गरम रहता है, इसी का नाम तप्त कुंड है। (५) नारद कुंड—तप्त कुंड के पास ही पूर्वोत्तर के कोने पर अलकनन्दा में नारद कुंड है, यहीं पर एक नारद शिला है, जिसके नीचे अलकनन्दा का पानी बड़ी संकीर्ण गुफा से गिरता है, इस जगह भी यात्री स्नान या मार्जन करते हैं।

पंचशिला—बद्रीकाश्रम में नारद शिला, बाराह शिला, मार्कण्डेय शिला, नृसिंह शिला, और गरुड़ शिला यह पाँच शिला प्रसिद्ध हैं।

मातामूर्ति २। मील है।

बसुधारा—बद्रीनाथ से २। मील उत्तर मानां गावाँ बस्ती और २। मील पर बसुधारा तीर्थ है, आषाढ़ और श्रावण के महीनों में बर्फ कम होने पर कोई कोई यात्री बसुधारा में स्नान करने जाते हैं, यहाँ पूर्वकाल में अष्ट बसुओं ने तप किया था, यहाँ ऊंचे पहाड़ से यह धारा गिरती है। पुरी के पीछे चरणपादुका और पुरी के सामने अलकनन्दा पार शेष नेत्र है यहाँ तारघर, डाकखाना, अस्पताल धर्मशाला, सदावर्त है।

ब्रह्मकुंड से मातामूर्ति तक—ब्रह्मकुंड मां ब्रह्मतीर्थ, अग्नि अनसूया तीर्थ, इन्द्रपद तीथ या इन्द्रधारा, धर्मक्षेत्र या मातामूर्ति।

मातामूर्ति से सतपथ या स्वर्गारोहण यात्रा

मातामूर्ति से इसी ओर—लक्ष्मीवन, सहस्रधारा (१) पञ्चधारा तीर्थ (२) द्वादशादित्य तीर्थ (३) चतुःश्रोत तीर्थ और आगे सत्यपद, सत्पथ या संतपथ तीर्थ १०० गज लम्बा स्वच्छ सुन्दर सरोवर है। आगे सोमकुंड, सूर्यकुंड, विष्णुकुंड, श्रीराम गुफा, बसुधारा, और अलकापुरी है।

नीचे आने में तिब्बत से उतर कर सरस्वती गंगा अलकनन्दा से आकर मिलती है। यह 'केशव प्रयाग' है। पास ही सम्याप्रास तीर्थ भगवान् वेद व्यास जी का स्थान है, व्यास गुफा, गणेश गुफा, मुचुकुन्द गुफा कलाप ग्राम, चतुर्वेद धारा, और शेषनेत्र होते हुए श्री पुरी में पहुँचे, बोलो बद्री विशाल लाल की जय।

मन्दिर की आय—प्राचीन राजाओं के भेंट किये गाँव गढ़वाल, कमायूँ तथा टिहरी में हैं जिनकी वार्षिक आय २० हजार के लगभग है, इसके अलावे चढ़ावा भगवान की भेंट, पूजा, अटका, भोग, गद्दी भेंट, नित्य

भोग, जीर्णोद्धार कोष, सहस्त्रार्चन, अष्टोत्तरी, कपूर आरती, बड़ी आरती, बाल भोगादि कई जरिये आमद के हैं।

रावल (पुजारी) श्री बदरी नारायण जी की पूजा दक्षिणी नम्बूद्री ब्राह्मण करते हैं, गत १५० वर्ष तक इनका ही एक मात्र आधिपत्य इस स्थान पर रहा लेकिन इन लोगों के कुप्रबन्ध के कारण ही एक नया कानून बना और अब प्रबन्ध से उनका कोई मतलब नहीं रहा वे सिर्फ तनख्वाह पाकर भगवान की पूजा के अधिकारी ही रह गये हैं।

(विशेष व्यवस्था का वर्णन पुस्तक के प्रारम्भ में देखें)

पेस्तर श्री बदरी नारायण मन्दिर श्री शंकराचार्य के ज्योतिर्मठ के मठाधीशों के प्रबन्ध में ही रहता था वे ही इसकी पूजा आदि की व्यवस्था करते थे। महाराजा टिहरी नरेश के किसी पूर्वज महाराज अजयपाल ने पन्द्रहवी सदी में जो ३७वें राजा थे, अनेक छोटे छोटे गढ़वाली ठाकुरों को जीत कर विशाल राज्य स्थापित करके कई गाँव जागीर भोग पूजा के लिये लगादी।

सम्वत् १५०० से १५५७ तक ज्योतिर्मठ के मठाधीश या श्री बदरीनाथ के रावल, श्री बालकृष्ण स्वामी रहे हैं इनके बाद २१वें मठाधीश श्री रामकृष्ण

स्वामी सम्वत् १८२२ से १८३३ तक आचार्य रह कर सं० १८३३ में देहान्त हुए तो वहाँ न कोई दूसरा सन्यासी ही था और न कोई ब्रह्मचारी ही सिर्फ केवल था तो उस समय उनका रसोइया गोपाल नामक नम्बूद्रि ब्राह्मण ही था। टिहरी गढ़वाल नरेश महाराज प्रदीप शाह जो ५१वें राजा थे वे उस समय यात्रा करने को पुरी में पहुँचे थे, उनके सामने यही प्रश्न आया तो उन्होंने रसोइये को पूजा का अधिकारी नियुक्त कर दिया।

मन्दिर श्री बदरीनाथ जी के आधीन ३० मन्दिर हैं उनमें से (१) श्री वासुदेव मन्दिर जोशीमठ (२) भविष्य बदरी सुभाई (३) सीतामठ चाँई (४) ध्यान बदरी उर्गम (५) श्री वृद्ध बदरी अणिमठ (६) श्री नृसिंह जी दाड़मी (७) श्री नृसिंह जी पाखी (८) श्री लक्ष्मीनारायण डिम्मर (९) श्री लक्ष्मीनारायण कुलसारी इन नौ मन्दिरों की पूजा डिमरी लोग करते हैं।

बदरी पाँच हैं।

(१) श्री बदरी विशाल (२) नृसिंह बदरी, जोशीमठ (३) वृद्ध बदरी, अणिमठ (४) भविष्य बदरी तपोवन (५) आदि बद्री

प्रयाग पाँच है।

(१) देव प्रयाग (२) रुद्रप्रयाग (३) कर्णप्रयाग (४) नन्दप्रयाग (५) विष्णु प्रयाग (प्रयागराज)।

केदार पाँच हैं।

(१) श्री केदारनाथ (२) मध्यमेश्वर (३) तुङ्गनाथ (४) रुद्रनाथ (५) कल्पेश्वर।

काशी तीन हैं।

(१) गुप्त काशी (२) उत्तर काशी (३) काशी–वाराणसी।

पुरी सात हैं।

(१) अयोध्या (२) मथुरा (३) मायापुरी (हरद्वार) (४) काशी (५) काञ्ची (६) अवन्ती (उज्जैन) (७) द्वारकापुरी।

कुछ प्रसिद्ध दर्शनीय स्थान

—:०:—

हेमकुण्ड (लोकपाल) पाण्डुकेश्वर और घाट चट्टी के बीच एक धर्मशाला और एक कच्चा पुल है उस पुल को पार कर साधारण बटिया द्वारा नदी के किनारे २ मील पर पुन गाँव मिलता हैं। वहाँ से आगे भ्यूंडार गाँव ४ मील है इस घाटी में यही आखिरी गाँव है। भ्यूंडार से घांगरिया ३ मील यहाँ पर एक धर्मशाला है यहाँ से दो रास्ते फटे हैं, बायें हाथ वाला हेमकुंड (लोकपाल) को जाता है। दाहिना नदी किनारे फूलों की घाटी को गया है। घांघरिया से १ मील नाराथोर गुफा है इससे १ मील लोकपाल (हेमकुंड) है। हेमकुंड १४२०० फीट की ऊँचाई पर है रास्ता कड़ी चढ़ाई का है, यह सिक्खोंका तीर्थ स्थान है। गुरु गोविन्दसिंह ने २० वर्ष यहाँ तप किया था। जिस समय भारत पर औरंगजेब का राज्य था और उसने हिन्दुओं पर बहुत कुछ अत्याचार किये, उसी वक्त गुरु गोविन्दसिंह का पुनर्जन्म हुआ और उन्होंने खालसा पन्थ चलाया। अपनी आत्मकथा में गुरु गोविन्दसिंह ने इस स्थान का वर्णन किया है। सिक्ख जाति इसकी खोज कर रही थी अन्त में सोहन-

सिंह आदि लोगों ने सन् १६३६ में इसका पता लगा ही दिया। यहाँ एक गुरुद्वारा एक धर्मशाला बन गई अब सड़क भी शीघ्र बनने वाली है। हेमकुंड १ मील लम्बा चौड़ा है इसके चारों ओर बर्फ के पहाड़ हैं। इस कुंड के जल में कोई वस्त्र डाल कर जिस ओर आप जायँगे वहीं वह वस्त्र भी जाता रहेगा। यह स्थान अति सुन्दर है। किन्तु रास्ता बहुत ही कठिन है। गुरु गोविन्दसिंह का जन्म १६६१ ई० में पटने में हुआ था, १७०८ ई० में गोदावरी के तट पर नादर स्थान में ४८ वर्ष की अवस्था में धोखे से पठानों द्वारा मारे गये, खालसा अरबी शब्द है इसका अर्थ पवित्र एवं विमुक्त माना गया है।

फूलों का स्वर्ग

इसी भ्यूंडार और घांघरिया से बायें हाथ को दो मील द्वारी नामक जगह पर कच्चा पुल पार कर इस १ मील लम्बी चौड़ी ढलुवा भूमि के दर्शन होते हैं। यहाँ हजारों तरह के रंग बिरंगे फूल खिले रहते हैं। सन् १६३१ में एफ० एस० स्माईथ साहब कामेट पर्वत पर चढ़कर भोटियों के गाँव गमसाली आये और धौली नदी को पार कर भ्यूंडार काँठा पार कर इस फूलों के स्वर्ग को देख दंग रह गये। बारिस होने पर भी वह कुछ

फूल तोड़ कर विलायत ले गये। बाद सन् ३७ में स्माईथ, इडिनबरा–बोटा निकल गार्डन की ओर से आकर ३ महीने वहाँ रहकर २५० किस्म के फूलों के बीज विलायत ले गये इन बीजों की सफलता देख कर सन् ३६ में क्यूबोटे निकल गार्डन की ओर से कुमारी जोनलेग फूलों के बीज लेने आई उसने सोखता कागज पर सभी तरह के फूलों को विलायत भेजा आखीर एक फूल के निकालने में वह पहाड़ से गिर कर देह त्याग गई उसकी कब्र वहीं बनाई गई। अब वह स्थान अंग्रेजों का तीर्थ भी हो गया। यह स्थान संसार में ख्याति प्राप्त है प्रसिद्ध पर्यटक हर साल यहाँ आते ही रहते हैं किन्तु रास्ता कठिन है।

नन्दादेवी–२५६४५ फीट यह भारत में सबसे ऊँची चोटी है सन् १६३६ में दो अमेरिकन इस चोटी पर चढ़कर बहुत दिनों की आकांक्षा पूरी कर सके।

२–कामेट—२५४४७ फीट है। सन् १६३१ में मि० एफ० एस० स्मिथ और उनके साथी इस पर्वत पर चढ़े।

३–त्रीशूल—२३३६० फीट है, सन् १६०७ में डा० लौंगस्टाफ और १६३३ में कैप्टन ओलीवर इसकी चोटी तक चढ़े।

४—दुनागिरी—२३१८४ फीट है, सन् १९३९ में स्वीस आरोहणदल इसकी चोटी तक पहुँचा।

५—माना चोटी २३८६० फीट है, सन् १९३७ में मि० स्मिथ इसकी चोटी तक सफलता पूर्वक पहुंचे।

६—अचीगामिन २४१८० फीट चौखम्भा २३४२० केदारशृङ्ग २२७७० हाथीपर्वत २२७७० गौरीपर्वत २२०७७ रानावन २०१०० फीट हैं।

हिन्दू धर्म पर श्रद्धा

स्व० कर्नल ईट्स ब्राउन ने भारत पर कई रोचक पुस्तकें लिखी हैं, हाल की एक पुस्तक "मार्शल इण्डिया" में उन्होंने कई प्रकार के पराक्रमों का वर्णन किया है। वे लिखते हैं कि जिस धर्म में पच्चीस करोड़ हिन्दुओं का विश्वास है उसके सिद्धान्त भारत में—मोटर या हवाई जहाज से यात्रा करने या बड़े-बड़े होटलों में विशिष्ठ भारतीयों से बातचीत करने से समझ में नहीं आ सकते। शिक्षित युवक भले ही कहें कि जनता पर अब धर्म का प्रभाव नहीं पर यह बात सत्य नहीं है, जो अपने को नास्तिक कहते हैं, यदि उनके कपड़े उतारे जायँ तो उनके गले में भी जनेऊ देखकर आश्चर्य होगा। पुनर्जन्म के विश्वास से हिन्दू धर्म की बहुत सी बातें

स्पष्ट हो जाती हैं और करोड़ों मनुष्यों को सन्तोष प्रदान किया है। हिन्दू धर्म में बहुत कुछ सहानुभूति और भ्रातृभाव है जो लगभग साढ़े तीन हजार वर्ष से अबतक चला आ रहा है और जिससे उच्च दर्शनों का प्रादुर्भाव हुआ है।

सत्यपथ यात्रा

बद्रीनाथ से तेरह मील है

—:०:—

यह मार्ग केवल आषाढ़ और श्रावण मास में खुलता है। बद्रीनाथ से आगे दो मील तक सीधा है। फिर पाँच मील कुछ कठिन मार्ग से चलकर लक्ष्मीवन तथा अलकनन्दा नदी का अल्कापुरी से बर्फ के अन्दर आने के पश्चात् सबसे पहले भूमण्डल में प्रवाह स्वरूप में प्रकट होने का अच्छा मनोरंजक और चित्ताकर्षक दृश्य है। इससे आगे कुछ और विकट मार्ग से होकर चार मील की चढ़ाई चढ़कर नर-नारायण पर्वत से गिरती हुई शतधाराओं का दर्शन करते हुए चक्रतीर्थ पहुँचते हैं। यह वर्तुलाकार बहुत बड़ा मैदान है। वहाँ पहुँचते ही चित्त प्रकृति देवी के सौन्दर्य की पराकाष्ठा को प्राप्त कर

ऋषिभावों को अनुभव करता है और इस निर्जन स्थान में भी चित्त स्वतः स्थायी निवास करने को चाहता है फिर सीधी आध मील की चढ़ाई चढ़कर सामने के बड़े पत्थर के समीप पहुँचना पड़ता है, वहाँ से डेढ़ मील सीधे पश्चिम की ओर चलकर बर्फ की बांकों पर से होकर चलना पड़ता है। सामने काले पहाड़ की तरेटी में सत्यपथ (सतोपंथ) सरोवर डेढ़ मील के घेरे का त्रिकुटी के आकार का शुद्ध, निश्चल जलपूर्ण है। इससे आध मील आगे चन्द्रकुण्ड, चन्द्रकुंड से आगे एक मील आगे सूर्यकुंड है। सामने हिमालय के शृङ्गों की श्रेणी सीढ़ियों की तरह दिखलाई देती है जिसे स्वर्गारोहण कहते हैं। वास्तव में यह स्थान स्वर्ग तुल्य ही है और यदि शीत न सतावे तो साक्षात् बैकुण्ठ ही प्रतीत होवे।

चक्र तीर्थ प्रातःकाल जाना चाहिये। वहाँ लकड़ी नहीं होती है, साथ में खटाई का बनाया हुआ शुष्क भोजन, ले जाना चाहिये। टिकने के लिए गुफायें हैं, किन्तु वे वर्षा में टपकती भी हैं।

वापिसी यात्रा

बद्रीनाथ जी से वापिसी का रास्ता—चमोली तक वही है, जिस रास्ते आप यात्रा कर चुके हैं।

चमोली वापिसी ४७ मील ।

कुहेड़ चट्टी—दो मील पर है ।

मैठाना—दो मील पर है ।

नन्द प्रयाग तीन मील पर है, यहां डाकबँगला, पोस्ट आफिस, तारघर, टेलीफोन आदि सभी चीजें हैं, बाजार अच्छा हैं, यहाँ से कर्णप्रयाग तेरह मील है ।

नन्द प्रयाग से पंच प्रयागों में से एक है, नन्द प्रयाग बस्ती से आध मील नीचे नन्दाकिनी नदी पूर्व की ओर से आकर अलकनन्दा में मिली है, नन्दा के बायें बालू का मैदान है, नन्दा नदी पर १५५ फुट लम्बा लोहे का पुल बना है ।

सोलना चट्टी—तीन मील पर है । यहाँ इन्सपेक्शन बँगला है ।

लंगासु—तीन मील पर है ।

जयकंडी—दो मील पर है ।

उमट्टा—दो मील पर है ।

कर्ण प्रयाग—तीन मील पर है, यहाँ पर पोस्ट आफिस, डाकबँगला, पुलिस चौकी, तारघर, टेलीफोन, लारी सरविस तथा बाबा काली कमली वाले की धमशाला है ।

अलकनन्दा पूर्वोत्तर से आकर पश्चिम रुद्र प्रयाग को गई है, पिंडारकनदी, जिसको कर्ण गंगा भी कहते हैं दक्षिण नन्दा कोटी से आकर कर्ण प्रयाग बाजार से आध मील उत्तर अलकनन्दा में मिल गई है, पिंडारक नदी का पानी हरित एवं साफ है, नदी पर लोहे का पुल था, लेकिन अब टूट गया है।

कर्ण गंगा के दाहिने किनारे पर कर्ण का मन्दिर संगम पर कर्ण शिला।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्द पुराण (केदारखंड प्रथम भाग ८१वाँ अध्याय) महाराज कर्ण ने कैलाश पर्वत पर नन्द पर्वत के निकट शिव क्षेत्र में सूर्य का बड़ा भारी यज्ञ किया और वह शिवजी की आराधना करके देवीजी के भवन में स्थित हुआ, सूर्य भगवान ने "सूर्य अभेद्य" कवच, अक्षय तूणीर तथा अजेय धनुष कर्ण को दिया, और उस क्षेत्र का नाम कर्ण प्रयाग रक्खा तब से ब्रह्मवादी मुनि वहाँ स्थित हुए, उनके नामों से बहुत से कुंड प्रसिद्ध हुए, जिनमें स्नान करने से सूर्यलोक मिलता हैं, यहाँ सूर्य कुंड है जिसमें स्नान करने से चारों वर्ग मिलते हैं, यहाँ पर उमा नाम की देवी तथा उमेश्वर नामक महादेव स्थित हैं, जब कर्ण ने वहाँ शिवजी की आराधना की थी तभी से यहाँ पर कर्णेश्वर नाम से

स्थित हुए, इनकी पूजा करने से सौ यज्ञ का फल मिलता है, यहाँ रक्तवर्ण विनायक शिला है, जिसका स्पर्श तथा प्रदक्षिणा करने से विघ्नों का नाश होता है, जो मनुष्य कर्ण प्रयाग में शरीर त्याग करते हैं, वह एक कल्प तक शिव लोक में निवास करते हैं।

नोट—कर्ण प्रयाग से एक रास्ता पैदल का रामनगर व काठगोदाम को जाता है, पहले यात्री इस रास्ते से भी जाया करते थे, अब इस रास्ते के विवरण की जरूरत नहीं है, यात्री बहुत कम जाते हैं।

वापसी के मार्ग तो बहुत हैं, किन्तु इन सब में सुगम और सुलभ मार्ग हरिद्वार ऋषिकेश का ही है, क्योंकि कुली डंडी आदि करने में सहूलियत रहती है, और कम खर्च करना पड़ता है, रास्ते में चढ़ाई कम पड़ती है, मार्ग देखा हुआ रहता है, और शास्त्रानुसार उत्तराखण्ड के तीर्थ—यमुनोत्तरी, गंगोत्तरी, केदारनाथ और बद्रीनाथ की यात्रा हरिद्वार ऋषिकेश से आरम्भ कर फिर वापिस ऋषिकेश हरिद्वार को ही लौट आने से पूरी यात्रा और 'परिक्रमा' होती है, मोटर की सवारी कर्ण प्रयाग से श्रीनगर और कीर्तिनगर से ऋषिकेश तक चालू है।

गौचर—६ मील पर है, यहां काली कमली वाले

की धर्मशाला है, यह बड़ा सुन्दर समतल मैदान है, यहाँ पहले हवाई जहाज भी उतरता था, डाकघर है। नवम्बर में मेला लगता है।

नगरासु—चार मील है, डाकबँगला है।

शिवानन्दी—तीन मील है।

रुद्र प्रयाग—सात मील है।

नोट—रुद्र प्रयाग से श्रीनगर का वही पूर्वोक्त रास्ता है, जो यात्री श्रीनगर से पोड़ी होकर कोटद्वार जाते हैं, वह सीधे चले जाते हैं, श्रीनगर से कोटद्वार ५६ मील है, कोटद्वार में रेल मिल जाती है, यहां से यात्री अपने-अपने घर चले जाते हैं, कुछ यात्री कोटद्वार से नजीबाबाद होकर वापिस हरिद्वार आ जाते हैं।

गंगोत्री यमुनोत्री यात्रा मार्ग

गंगोत्री यमुनोत्री के ऋषिकेश से दो मार्ग हैं। कुछ यात्री देव प्रयाग स्नान श्राद्ध करके टिहरी आ जाते हैं, देव प्रयाग होकर यमुनोत्री १५२ मील होती है, ऋषिकेश से देवप्रयाग ४४ मील है, देव प्रयाग से रास्ता इस प्रकार है।

खरसाड़ा—देव प्रयाग से १० मील, यहाँ पर धर्मशाला है।

कोटेश्वर—चार मील है।

मंडरीया—६ मील है।

क्यारी—८ मील है।

टिहरी—क्यारी से ६ मील है। यह रियासत का प्रधान स्थान है, यहाँ बद्रीनाथ, केदारनाथ जी के विशाल मन्दिर हैं, टिहरी राज्य अब मर्ज हो गया है। इस रियासत ने वीरनर श्री देवसुमन को जो एक होनहार नेता थे, बुरी तरह जेल में मारा जो दो महीने की भूख हड़ताल के बाद शहीद हुए।

ऋषिकेश से टिहरी

नोट—जो यात्री ऋषिकेश से टिहरी जाते हैं, ऋषिकेश से टिहरी ५१ मील है, उसका रास्ता इस प्रकार है—ऋषिकेश से लारी टिहरी तक जा ी है, और अब धरासु तक भी सड़क बनने लगी है।

नरेन्द्र नगर—ऋषिकेश से ६ मील दूर है, मोटर के रास्ते ६ मील है, यह टिहरी स्टेट की वर्तमान राजधानी रही है, यहाँ डाकखाना, तारघर, डाकबँगला, मोटर सरविस, पुलिस थाना, अस्पताल आदि सभी स्थान हैं।

हिण्डोला चट्टी—नरेन्द्र नगर से ५ मील पर है।

यहाँ पर भगवती को हिण्डोला झुलाया जाता था इसका नाम हिण्डोला पड़ गया। यहां दायें हाथ पहाड़ की चोटी पर कुंजापुरी देवी का मन्दिर, यह सिद्ध देवी है, यहाँ मनोकामना पूर्ण होती है, ऐसा यहाँ की जनता का विश्वास है।

आगर खालचट्टी—३ मील पर है।

फकोट चट्टी—२ मील है, यहाँ रेञ्ज क्वार्टर है।

जाजल—५ मील है।

नागनी—५ मील है।

चमुंआ—५ मील है। यह स्थान सबसे ऊँचा है यहाँ से केदारनाथजी के पीछे वाले पर्वत का हिमाच्छादित शिखर दिखाई देता है, यहाँ से एक रास्ता टेहरी को जाता है और एक रास्ता भलड़ियाना को जाता है, यहाँ डाकखाना भी है। एक रास्ता टिहरी को भी जाता है।

टिहरी—१२ मील है।

गोदी सराय—५ मील है।

भलड़ियाना—६ मील है।

छाम—५ मील है।

नगुन—५ मील है।

धरासु—५ मील है।

नोट—धरासु से एक रास्ता लालूरी होकर मंसूरी जाता है और दूसरा चापड़ा होकर भी मंसूरी जाता है और एक रास्ता सीधा उत्तर काशी को जाता है, धरासु से ही एक रास्ता यमुनोत्री को जाता है, धरासु से यमुनोत्री ४८ मील है, उसका विवरण निम्न प्रकार है

कल्याणी ४ मील है, यह चढ़ाई उतराई का रास्ता है, पानी का कष्ट है।

ब्रह्मखाला—(गंऊँला) ५ मील है, मार्ग सीधा है।

सिल्कयारी—५ मील है, यहाँ से आगे चढ़ाई शुरू होती है, यहाँ बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है, जल का यहाँ भी कष्ट है, पगडण्डी का मार्ग कठिन है इसलिये सड़क के रास्ते जाना चाहिए।

राड़ीधार (खाला) पाँच मील है, यहाँ से एक सड़क बड़कोट और चकरोती को जाती है और एक सड़क उत्तर काशी को भी जाती है।

डंडाल गाँव—२ मील है, यहाँ पानी नहीं है।

सिमली—२ मील है, यमुनोत्री के यात्री जब वापिस गंगोत्री जाते हैं तो सिमली आकर ही उत्तरकाशी का रास्ता मिलता है।

गंगानी—२ मील है, यहाँ काली कमली वाले की धर्मशाला है। थोड़ी दूर पर तिलवाड़ी नामक स्थान है जहाँ पर अपने अधिकारों की मांग करने वाली प्रजा को ३० मई सन् ३० को टिहरी की सामन्तशाही ने भारी तादाद में मौत के घाट उतारा था।

जमना चट्टी—६ मील है, यहाँ भी काली कमली वाले की धर्मशाला है

ओजरी चट्टी—दो मील है।

डडोड़ी—२॥ मील है।

राणा गाँव—२ मील है।

हनुमान चट्टी—२ मील है।

खरसाली—४ मील है। यहाँ काली कमली की धर्मशाला है।

यमुनोत्री (जमनोत्री)

जमुनोत्तरी के मार्ग में चढ़ाई उतराई दोनों ही हैं, अब सेठ चांदमल जी 'गोयन्का' क्लोथ मारकेट देहली वालों ने सड़क बनवा दी है यमुनाजी का मन्दिर है और यह स्थान समुद्र की सतह से १०००० (दस हजार) फुट ऊँचा है, यमुनोत्री में खौलते हुए गर्म जल के स्रोत हैं, जहाँ आटा, चावल आदि डाल देने से स्वयं उचित समय पर

सिद्ध हो जाते हैं, दूसरे ऐसे भी श्रोत हैं, जहाँ यात्री लोग स्नान कर सकते हैं।

यमुनोत्री से वापिसी मार्ग सिमली होकर वही है, जहां होकर अभी गये थे।

सिंगोट—७॥ मील है।

नाकोरी—३॥ मील है।

उत्तर काशी—६ मील है; यहाँ पर डाकघर, तार-घर, पुलिस, मजिस्ट्रेट की कचहरी आदि स्थान हैं। यहाँ विश्वनाथ जी का मन्दिर है। तथा परशुरामजी का मन्दिर, शक्ति मन्दिर अन्नपूर्णा तथा काली आदि के मन्दिर हैं, बाबा काली कमली वाले की ओर से धर्मशाला और घाट बने हुए हैं।

विश्वनाथ जी का मन्दिर

विश्वनाथजी के मन्दिर के सम्बन्ध में इस प्रकार की किंवदन्ती है, कि किसी समय टिहरी नरेश को स्वप्न आया कि तुम उत्तर काशी में मन्दिर बनवाओ, जब राजा ने मन्दिर बनवाना प्रारम्भ किया तो उस समय विश्वनाथ लिंग जमीन से कुछ ऊपर था, ज्यों ज्यों लिंग के पास चबूतरा बनता गया त्यों-त्यों लिंग ऊँचा होता गया, इस प्रकार १० फुट तक लिंग की ऊँचाई हो

गई, तब पुनः स्वप्न आया कि चबूतरा इससे आगे ऊंचा न किया जाय, इस पर फिर उस पर मन्दिर चिना दिया गया, यहाँ पर रात्रि जागरण करने से नि सन्तानों को पुत्र लाभ होता है।

श्री परशुराम जी का मन्दिर

पच्चीस तीस साल पहले यहाँ कोई भी चत्री राजा दर्शन को परशुरामजी के भय से नही आते थे. लेकिन अब यहाँ त्योहार पर्व आदि पर सभी लोग एकत्रित होते हैं, अभी भी कई दफा श्वेत घोड़े पर सवार हुये परशुराम जी के दर्शन होते हैं।

शक्ति मन्दिर

यह मन्दिर विश्वनाथ जी के मन्दिर के सामने है, इसमें एक शक्ति शस्त्र है, यह अष्ट धातु का बना हुआ तथा १५ फुट लम्बा हैं, इसकी मूठ घड़े के आकार की है, इसकी मोटाई ७ फुट चौड़ी है, इसके विषय में यह किंवदन्ती है कि यह शक्ति देवासुर संग्राम में आकाश से गिरी थी और जमीन में गड़ गई उसी समय से यहाँ स्थापित है। इसके सम्बन्ध में एक और किंवदन्ती है कि दो सौ साल पहले राजा नैपाल ने टिहरी नरेश पर चढ़ाई कर दी, इनकी सेना बढ़ती-बढ़ती उत्तर काशी तक

चली गई, वहाँ नैपाल महाराज ने उस शक्ति को देखकर नैपाल ले जाना चाहा लेकिन खुदाई करने पर उसका कोई अन्त नही आया, जिससे महाराज हार मानकर चले गये।

इसके अतिरिक्त यहाँ बिड़ला की धर्मशाला है तथा घाट हैं, यहाँ थोड़ी दूर तक गंगा उत्तरमुखी बहती है, यहाँ से २॥ मील आगे वरुणानदी ह, यहाँ से तीन मील पर मय डंडा के शिखर पर विमलेश्वर महादेव हैं, इनके पास ही एक बड़ी गुफा है, यहाँ से २२ मील आगे एक बड़ा ताल है, जिसको डूंडी ताल कहते हैं, यहीं पर गणेश जी का जन्म हुआ बतलाते हैं।

संक्षिप्त पौराणिक कथा—स्कन्द पुराण में लिखा है कि पूर्वकाल में जमदग्नी की पत्नी रेणुका जल लेकर आश्रम की ओर जा रही थी, उसका रास्ते में कीर्तवीय को रास्ते में सजधज के साथ जाते देख कर मन लाला-यित हो गया, यह जान कर जमदग्नि महाराज ने क्रुद्ध होकर अपने बड़े पुत्रसे अपनी माता के शिर काट देनेको कहा, इस पर उसने अस्वीकृति करी, उसको ब्रह्म राक्षस हो जाने का शाप दिया, यह प्रस्ताव अपने छोटे पुत्र परशुराम जी के सामने रक्खा, उन्होंने इसको स्वीकार कर अपनी माता का शिर काट लिया, इस पर प्रसन्न

होकर जमदग्नी ने वर मांगने को कहा, परशुराम जी ने कहा भगवन् ! मेरी माता पुनः जीवित हो जाय. यही वर दो। प्रसन्न हो जमदग्नि ने कहा कि हे पुत्र ! तुम बड़े सौम्य हो, आज से यह स्थान तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होगा, उसी समय से यह स्थान सौम्य काशी या उत्तर काशी नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसके अतिरिक्त डूंडाचट्टी से ११ मील नीचे, गंगा पर उद्दालक मुनि ने तपस्या की थी, इस स्थान का नाम उद्दालका है उद्दालक का पुत्र नचिकेता ने १० मील के फासले पर तप किया था उस स्थान का नाम नचिकेता तालाब है, इस नचिकेता तालाब से धनारी नदी निकलती है और धनारी नदी निकलती है, और धनारी का जहाँ गंगा से संगम हुआ है उसके दायें भाग को उद्दालका तथा बायें भाग को शृंगेरी कहते हैं, उत्तर काशी से ५ मील नीचे नाकोरी से १ मील ऊपर कपिल मुनि का स्थान है, इस प्रकार यह उत्तर काशी क्षेत्र ऋषियों की तपोभूमि का स्थान रहा है।

नोट—उत्तर काशी से गंगोत्री ५७ मील है, उसका मार्ग इस प्रकार है। उत्तर काशी से गंगोरी ३ मील है, यहाँ पर डोडीताल से निकली हुई उसी गंगा भागीरथी में मिलती है, यह मार्ग सुप्रसिद्ध डोडीताल को करीब १६-१७

मील चला जाता है, यहाँ २ मील के घेर का ताल है बर्फानी पहाड़ों के बीच में है, इसका दृश्य बड़ा मनोरंजक है ।

मनेरी—उत्तर काशी से १० मील है, चढ़ाई है तथा यहाँ बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है ।

भटवाड़ी—८ मील है, चढ़ाई उतराई है, डाकबंगला है, काली कमली वाले की धर्मशाला है ।

गंगनानी—६ मील है चढ़ाई है, काली कमली कमली वाले की धर्मशाला है ।

सुखी—६ मील है, यहाँ काली कमली वाले की धर्मशाला है तथा उतराई है ।

झाला—३ मील है, यहाँ काली कमली वाले की धर्मशाला है ।

हरसिल (हरिप्रयाग)—२ मील है, धर्मशाला है डाकबंगला है ।

धराली—२॥ मील धराली है, यहाँ काली कमली वाले की धमशाला है । यहाँ धरियाल लोग बसते हैं, जो कि नैलङ्ग घाटी से तिब्बत में व्यापार करते हैं । इस मार्ग से कैलाश और मानसरोवर इन लोगों की सहायता से जा सकते हैं, धराली के आसपास साधुओं की कुटियाँ हैं और अच्छे प्रसिद्ध महात्मा निवास करते

हैं, गंगाजी के दूसरी तरफ मुखी मठ है, यहां पर गंगोत्री के पंडे लोग रहते हैं।

यहाँ पर १ मील आगे मार्कण्डेय जी का स्थान है, शरद ऋतु में ६ मास तक श्री गंगाजी की पूजा इसी स्थान पर होती है।

जाँगला—४ मील है, यहाँ डाकबंगाला है। भैरोघाटी २॥ मील है गंगोत्तरी ६॥ मील गोमुख १८ मील कठिन रास्ता बस यहीं गंगा महारानी के दर्शन कर पुण्य लूटिये।

नोट—गंगात्री से यात्री श्री केदारनाथ जी को जाते हैं, गंगोत्री से ४०मील वापिस उसी रास्ते जाना होता है जिस रास्ते से उत्तर काशी से आये थे, मनेरी चट्टी और भटवाड़ी चट्टी के मध्य में एक मल्लाचट्टी नामक स्थान है, वहाँ से श्री केदारनाथ जी का रास्ता जाता है और मार्ग इस प्रकार है—

यहाँ बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है।

क्यालु—२ मील पर है, मार्ग कठिन चढ़ाई का है।

छूंयाचट्टी—२ मील है, १ मील चढ़ाई का है तथा बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है।

मेलख—४ मील है चढ़ाई कठिन है।

पंगराना—५ मील है, उतार तेज है।

भल्लाचट्टी—४ मील है।

बूढ़ा केदार—५ मील है, बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला तथा शिवजी का दर्शन स्थान अच्छा है।

ताला चट्टी ४ मील है, कुछ चढ़ाई है।

भैरव चट्टी—२॥ मील है, यहाँ भैरवजी का मन्दिर है तथा हनुमान जी के भी दर्शन हैं।

मोटा चट्टी—२ मील है, साधारण चढ़ाई है।

घुत्तु चट्टी—७ मील है, मार्ग चढ़ाई उतार का है यह भिलगांना नदी के किनारे पर है, बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है।

गंभाना—१ मील पर है।

गुमांडा—३ मील है, रास्ता चढ़ाई का है।

दुफन्दा—२ मील है, यहाँ की चढ़ाई प्रसिद्ध है।

पंवाली—३ मील है, बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है।

मग्गु चट्टी—१० मील है, पंवाली से मई, जून में

४ मील तक बर्फ पर चलना होता है यह स्थान ११ हजार फुट की ऊँचाई पर है बाबा काली कमली की धर्मशाला है।

त्रियुगी नारायण—मग्गु से ५ मील है, यहाँ बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है, हरिद्वार से सीधे जो केदारनाथ को जाते हैं उसमें यह मिल गया है, जिसका वर्णन दिया जा चुका है।

चारों धाम की यात्रा का विधान

जो यात्री चारों धाम की यात्रा करते हैं वह ऋषिकेश से जमनोत्री और जमुनोत्री से उत्तर काशी होते हुए गंगोत्री जाते हैं, और श्री गंगोत्री से श्री केदारनाथ जी और केदारनाथ जी से श्री बद्रीनाथजी और बद्रीनाथ जी से वापिस नन्द प्रयाग, कर्णप्रयाग होते हुए ऋषिकेश आ जाते हैं। इस तरह से ५०० मील के लगभग इस हिमाचल प्रदेश की परिक्रमा हो जाती है।

कैलास मानसरोवर के लिए ११ रास्ते

(१) अल्मोड़ा, धौलबीना, बेरीवाग, असकोट, धार-चुला, काला पानी, लिपुलेख, गोरी, थड़िधार मान-सरोवर २३७ मील है जिसकी परिक्रमा ३२ मील है। कैलाश और मानसरोवर दोनों की परिक्रमा ३२-३२ मील के है।

(२) अल्मोड़ा से धर्मघाटी होकर २२३ मील (३) अल्मोड़ा से उठाधुरा घाटी होकर २०६ मील (४) जोशी मठ से गुलाबिती होकर २०२ मील (५) जोशीमठ से दमजन निती होंकर १६३ मील (६) जोशीमठ से होती नीती घाटी होकर १६० (७) बद्रीनाथ से—माणा घाटी होकर २४० मील (८) गंगोत्री मुखबासे-जेलूखागा घाटी होकर २४५ मील (९) शिमला से ४४५ मील (१०) शिमला से थुलिंग होकर ४७५ मील (११) काश्मीर (श्रीनगर) से लदाख गढ़तोक होकर ६०३ मील है।

चोटी, पास, घाटी, धुरा, जोत, कोठा, आदि नाम

यह नाम उन स्थानों के हैं जहाँ से आदमी पर्वत (हिमालय) लांघते हैं। कैलाश को जाने वाले लोग बद्रीनाथ से २८ मील माणा पास होकर भी जाते हैं लेकिन यह रास्ता अव्वल तो महा कठिन है दूसरे दूर भी है।

नीति के रास्ते अलपत दूर कम हैं किन्तु नीती पास १६६२८ फीट होने से यह रास्ता भी भारतवासियों को कष्टप्रद ही है।

इसलिये भारतीय यात्रियों को सबसे अच्छा और सुगम रास्ता अल्मोड़ा होकर ही है जो उटाधुरा पूलेक) के नाम से प्रसिद्ध है, इस रास्ते घाटी सबसे कम ऊँची है रास्ता अच्छा है और नजदीक भी है।

पर्वतीय दृश्य

गर्मियों में जब भारत की मैदानी जगह ताँबे की कढ़ाई के समान तपने लगती है तब साधारण मनुष्य की इच्छा भी पहाड़ों की यात्रा करने को होती है इसलिये लोग काश्मीर, बद्रिकाश्रम, कैलाश आदि स्थानों की यात्रा करने आ जाते हैं।

कैलाश, मानसरोवर जाने को—काठगुदाम रेलवे स्टेशन द्वारा २२ मील ७ हजार फीट नैनीताल झील और सुन्दर बस्ती की शोभा देखने में आती है यहाँ से पैदल ६ मील भुवाली ५५०० फीट क्षयरोग के निवारण का अस्पताल है, यहां से ४ मील भीमताल है जहाँ एकान्त स्थान है। इसके किनारे सुन्दर निवास स्थान बना हुआ है जो ४५०० फीट है यह स्थान हवादार अच्छा

स्वास्थ्यवर्धक है यहाँ से २ मील नल दमयन्ती नामक ताल है यह स्थान बहुत अच्छा है यहाँ से १ मील की चढ़ाई पर सात ताल, पन्नाताल, रामसीता ताल, गरुड़ ताल, पास पास में एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर हैं, पन्ना-ताल के किनारे प्रसिद्ध ईसाई पादरी डा० स्टनले जौन्स का प्रार्थना स्थान है। यह तालों का प्रदेश है जहां कुल मिलाकर ६० ताल हैं, भीमताल से ७ मील चढ़ाई और दो मील उतराई में रामगढ़ सेब के पेड़ों का बाग नदी किनारे आर्यसमाज के नेता श्री नारायण स्वामी जी का आश्रम है, रामगढ़ से ६ मील मुक्तेश्वर नाम का नैनी-ताल जिले का ऊँचा शिखर है लेकिन यहां अत्यन्त ठंडा होने पर भी अच्छी बस्ती बसी हुई है, यहाँ भारतीय जानवरों के रोगों की खोज की प्रयोगशाला है, इस संस्था में सारे भारत के पशु चिकित्सक ज्ञानवृद्धि को आते हैं। यहाँ से श्वेताम्बरधारी हिमालय पंक्ति का दर्शन होता है, यहां से १४ मील अल्मोड़ा प्रसिद्ध नगरी है। यह विकास का केन्द्र ५००० फीट स्वास्थ्य-वर्धक है।

अल्मोड़े से उत्तर दिशा में ८ मील ३००० फीट बाराछीना बड़ी गर्म जगह है आगे ६ मील चढ़ाई से ६००० फीट धौलछीना बहुत अच्छा स्थान है, यहाँ से

५ मील उतारमे कनारीछीना स्थान है आगे सीधा रास्ता द्वारा ५ मील सीरा घाट अत्यन्त गर्म स्थान है, यह स्थान सरयू नदी के तट पर सुन्दर मनोरम है, यहाँ से ३ मील चढ़ाई चढ कर नरवाघोल जल का कष्ट है आगे ३ मील की उतार से गर्णाई अच्छा स्थान है यहाँ डाकखाना, स्कूल, डाकबँगला है। आगे ६ मील चढ़ाई, उतराई से जाकड़ी गांव के पास एक दुकान बड़ी मनोहर आसाम प्रान्त की याद दिलाती है इसे बास पटान भी कहते हैं आगे ६॥ मील की दूरी चढ़ाई से ७ हजार फीट की चढ़ाई उतर कर ६ हजार फीट बेरीनाग सुन्दर नगर मिलता है, यहाँ डाकखाना, सफाखाना, स्कूल और डाकबँगला है यहाँ सब किस्म की दुकानें मिलती हैं लेकिन पानी की कमी है आगे २॥ मील गढ़तल (गढ़तीर) स्थान हैं यहाँ से ७॥ मील रामगंगा के किनारे 'थल' नामक स्थान ३ हजार फीट है, यहाँ भी स्कूल, डाकखाना आदि अच्छा स्थान है।

वन, जंगल, पर्वत, हिम आरम्भ

इन पहाड़ों (पर्वतों) पर ३ हजार फीट से ६ हजार फीट तक चीड़ का जंगल है, ६ हजार से ६ हजार तक देवदार ६ हजार से १२ हजार तक भोजपत्र के पेड़ हैं १२ से १५ हजार तक नंगे पर्वत हरी घास कहीं

कहीं पर उगी हुई है आगे बर्फानी चोटियाँ हैं बर्फ के पिघलने के बाद अनेक रंगों के फूल तथा जड़ी-बूटियाँ इन स्थानों पर प्राप्त होती है। थल से ३ मील चढ़ाई और ७ मील सीधा मार्ग द्वारा दीदी हाट ५५०० फीट पर है इस मार्ग में बांझ वगैरह का घोर जंगल है जिसमें बाघ, भालू आदि वन्य जीवों की पैदायश भी है, यहाँ डाकखाना, पाठशाला और अच्छी दुकानें हैं, यहाँ से ७ मील अच्छे मार्ग द्वारा ५ हजार फीट असकोट सुन्दर नगर है यहाँ डाकखाना, सफाखाना, स्कूल, डाक-बंगला, धर्मशाला बाजार आदि सुलभ स्थान हैं यहाँ राजवंशी, रजवार, सुशिक्षित सम्पन्न लोग रहते हैं जो तमाम कैलाश यात्रियों की हर प्रकार मदद करते और अपना अतिथि मानते हैं। अब यहाँ से ३ मील उतार उतर कर गोरि गंगा का पुल मिलता है आगे ९ मील बलवा कोट है इससे आगे मामूली चढ़ाई उतार के बाद काली नदी के किनारे "कालिका" नामक स्थान है यहाँ मामूली दुकानें हैं यहाँ से १० मील सीधा रास्ता से धारचुला अच्छा स्थान है, यहाँ डाकखाना, स्कूल तथा बाजार भी है।

कठिन रास्ता

धारचूला से २ मील रूमादेवी का स्थान आगे

८ मील 'खेला, ४५०० फीट पर चढ़ाई के रास्ते से है, खेला से २ मील सीधी उतार उतर कर नदी पार करके ३ मील कठिन चढ़ाई से पांगू गाँव मिलता है यहाँ स्कूल में सुन्दर विश्राम स्थान है। यह भूटिया राजपूतों की बस्ती है ये ऊन का व्यापार तथा खेती करते हैं, यह मंगोलियन जाति के हिन्दू हैं, इनका रंग गोरा, मुँह चौड़ा, नाक चपटी होती है, कद के छोटे और पुष्ट होते हैं। धारचुला से इनकी बस्ती लग जाती है यह लोग पेश्तर ईमानदार होते थे लेकिन अब इनमें कई लोग व्यापार करने बाहर जाते हैं। पाँगू गाँव से २ मील चढ़ाई द्वारा ६ हजार फीट "तिथल" बड़ा ठंडा स्थान है। यहाँ से १॥ मील का उतार उतर कर चढ़ांग व तेजा ग्राम होकर सिरखाँ ग्राम जो खेला से ६ मील है मिलता है यहाँ अच्छे रईस लोग बसते हैं स्कूल में ठहरने को सुन्दर स्थान है यहाँ सब प्रकार की खेती होती है। यहाँ से २ मील उतार उतर कर रास्ता बाँभ के घोर जंगल होकर २॥ मील चढ़ाई ३ मील उतराई से ५॥ मील का गया है जहाँ बाघ भालू का डर है। आगे २॥ मील अच्छे रास्ते द्वारा जिप्ति गाँव ८ हजार फीट है यहाँ एक दुकान और ठहरने को सुन्दर स्थान है। अब आपका आधा मार्ग रह गया है।

इससे आगे रास्ता और भी कठिन है। रास्ता नदी के किनारे ही गया है जो ७ मील मालपा एक बड़े गन्दे गाँव में पहुँचता है। यहाँ मच्छर, मक्खियाँ, भेड़, बकरियों की दुर्गन्ध का घर है। मालपा से बुधी ७ मील रास्ता सरल है यहाँ काली नदी फिर मिल गई है। बुधी से ३ मील खड़ी चढ़ाई व १ मील मामूली उतार से "गर्ब्याङ्ग" डाकखाना, डाक बँगला है यह स्थान १०५०० फीट पर है जो भारत सरकार की आखीरी सीमा का गाँव है यहाँ से कैलाश को कुली बदलने और सारा इन्तजाम करना पड़ता है अब आगे डेरा के लिये तम्बू या छोलदारी और भोजन आदि का तमाम प्रबन्ध करना पड़ता है।

इस यात्रा के लिये अमीर या फकीर यही दोनों समुदाय अच्छी तरह जा सकते हैं। औसत दर्जे के लोगों को या अकेले दुकेले जाने वालों को डाकुओं का बड़ा भय है कम से कम १२ दिन का खाने पीने का सामान सूखे फल, चटनी, मेवा, सत्तू ओढ़ने बिछौने और पहनने को काफी गर्म कपड़े, रबड़ के बूट, बरसाती टौर्च, स्टोव, दूरबीन, कैमरा, बन्दूक साथ में रखना जरूरी है १५ जून तक अल्मोड़े से चल देना चाहिये इन दोनों भोटिया व्यापारी हर रोज तिब्बत जाते रहते

हैं इनके साथ जाने से सुभीता रहता है गर्ब्याङ्ग से एक दुभाषिया तिब्बत और भारतीय बोली का जानने वाला पथप्रदर्शक साथ ले जाना चाहिये । इस यात्रा में जितना भय और कष्ट पहले था वह अब नहीं रह गया दिन-प्रदिन रास्ता ठीक हो रहे हैं और अब तरह तरह से सुभीता हो रहा । लेकिन बन्दूक पास न हो तो गर्ब्याङ्ग या तकला कोट से किराये पर ले जानी चाहिये । कैलाश प्रान्त की बोली एक अजनबी है कुछ थोड़े से शब्द आप लोगों के समझने को यहाँ रख रहा हूँ, देखियेगा ।

कैलाश—मानसरोवर

संक्षेप में कैलाश प्रान्त (भोट) में जो बोली, बोली जाती है वह यों है—गिनती १ को चिक, २ को नी. ३ को सुम, ४ को जी, ५ को गां, ६ को दू, ७ को दुन, ८ को ग्यद, ९ को गु, १० च्यु २० को नीस्, ३० को सूंज्यू ४० को ज्यूपच्यू, ५० ङपच्यु, ६० डुकच्यू, ७० दुनज्यू, ८० ग्यूज्यूं, ९० गुपच्यु, १०० ग्या थाम्बा १००० त्वंग, लाख-ठी, करोड़-सुम, चाँदी को फुल, १) रु० गोरमो, ॥) टंका, ।) गो, ज्यों ≈) आना, ≡) ज्यो, ।≈) टांका, सोना-सर, ताँबा-ज्या, पीतल-रगन, लोहा-च्यक, कांसी-ली, वर्तन-नोद, कागज-शिशु, स्याही-नकुंग, कलम-निगु, दिन को निमा, रात-

छान, आग को मै, तारा-डकार, वस्त्र-गोलाक, हाथ-लक्या, पाँव-काम्बा, शिर-गो, आंख-मिक, नाक-ना, दांत-स, बाल-टा, डाढ़ी मूछ-खप्पू, पेट-डोटपा, घोड़ा-ता, वर्षा-छरपा, गाय-मलांग, बैल-लौं, खच्चर-टे, बकरी-लुक चँवर, गाय-यक, धूप-पो, गुगुल-गुलगुल, माचिस-चकटा, महादेव को माने, देवी-डोरमाल्हा, चावल को डा, आटा-बकपी, गेहूँ-डो, घी-मार, दाल-ठलमा, लाल-मस, काला-लगु, निमक-छा, मिर्च-छोदमरू, मठा-दरा, केशर-गुरगुम, जौ-स्बा, देवता-ल्हा, दूध-होमा, दीपक-क्युबार, कपड़े को रा, जरी कपड़ा-गासरा, तम्बु-गुर, रास्ता-ग्रेलम, पानी-तीछू, लकड़ी-सीग, सत्तु-चम्फा, गुड़-गुरम भेली, चाय-ज्या, कस्तूरी-लरछी, गोला-भेरा, तैल-मरकू, मिश्री-करा, शक्कर-जीमाकरा, छुवारा-खसुर, बादाम-व्यरखर तरका, ऊराम-मैं, कैलाश-डारेयो, खसजाम-नमस्कार, खेरा काना डोम कहां जाते हो, खरांपना दूगे-तुम्हारे पास है, खरांगलो छो छी छोद-तुम्हारे पास क्या सौदा है, ओं मणि पद्मे हुँ-महादेव पार्वती, इसी मंत्र को तिब्बती लोग जपा करते हैं।

गर्ब्यांङ्ग—चौदास और दारमा में भोटिये लोग बसते हैं इनमें सिर्फ दो ही जातियां हैं १-राजपूत २-डोम डोग अछूत जाति प्रायः सारे उत्तराखण्ड में काफी संख्या

में है। भूटियों का धर्म रीति रिवाज एकसा है यह लोग गोवला नामक और क्याग रंग चुम जो कि एक ही में संयुक्त स्त्री पुरुष हैं पूजा करते हैं प्रत्येक ग्राम का एक विशेष देवता भी इनका होता है, नागजुंग भी इनका एक आराध्य शक्तिशाली देवता है, यह तिब्बत के बौद्ध मठों में भी श्रद्धा से पूजा पाठ करते हैं।

काला पानी—गर्ब्याङ्ग से ११ मील है बीच में २ मील पर चांगरू २॥ मील पर कनवा नामक ग्राम नैपाल की सरहद में आते हैं बाकी सब निर्जन वन ही दीखता है यहां एक छोटी धर्मशाला है यह स्थान १२००० हजार फीट है मछांग घाटी से आने वाली वेगवती 'कुटीयाङ्की' नदी इस स्थान के आगे 'काली' नदी नाम से पुकारी जाती है जो ७५ मील चलकर जौलजीवी में गौरी गंगा से मिल कर पांचेश्वर में अपनी सहायक सरयू नदी से भेंट करती है।

शंगचुम—काले पानी से ६ मील १४६०० फीट चढ़ाई का रास्ता है यह भारत का अन्तिम पड़ाव है।

लिपुलेख घाटा—शंगचुम से ३ मील चढ़ाई द्वारा १६७५० फीट को पार कर एक अनोखे देश तिब्बत में प्रवेश कर मामूली उतार द्वारा ४ मील पाला में पहुँचते हैं यहां पर दो विश्राम घर हैं जहां एक चौकी-

दार भी रहना बताया जाता है पर रहना नहीं है। आगे १॥ मील पर "होपी गांग" नामक ग्राम में हरे भरे अन्न के खेत दिखाई देते हैं आगे मतंग और छुड़तन जो कि लम्बी लम्बी दीवारों और छोटे छोटे चौकोर मठों के रूप में गेरूये रंग से रंगे हुए तिब्बती लोगों के पूजन का ज्ञान कराते हैं। पाला से ४ मील-तक ताक्लाकोट या पुरांग मण्डी करनाली नदी के तट पर सुन्दर नगरी के समान है जहाँ चारों ओर अनेक रंग बिरंगे भँडे भँडियाँ फहरा रहे हैं।

लामाओं के देश तिब्बत का हाल

भारत के उत्तर में सबसे बड़ा पहाड़ हिमालय है उसमें तिब्बत बड़ा अजीब देश है। वहाँ हजारों मील लम्बा चौड़ा पठार है वह जितना ऊंचा है उतना ही ठंडा भी है। प्रायः बारहों महीने वहाँ के नदी नालों और झीलों का पानी जमकर बर्फ बना रहता है। हड्डियों तक को कंपाने वाली वहां की ठंड में, बीच, बीच में जमीन को फोड़कर गर्म पानी के फब्वारे उठते रहते हैं। यह मानो पृथ्वी माता की तपी हुई स्नेह धारा है। इस पथरीले देश में न तो बहुत घास उगती है और न हरे-भरे मैदान ही हैं। हमारे देश की तरह वहाँ जंगल नहीं हैं, वहाँ तो छोटे बड़े पहाड़ ही हैं। तिब्बत के मनुष्यों की

शकल सूरत का कहना ही क्या है सिर पर गोल टोपी शरीर पर पाँच-छः ढीले-ढाले लटकते हुए कुर्ते और पैरों में अजीब शकल का बूंट जूता। नतो वहाँ के लोग नहाते धोते हैं और न दांत ही मांजते है। उनकी देह पर मैल की मोटीसी तह जमी रहती है। तिब्बतियों के बदन से ऐसी बदबू निकलती है कि दूसरे देश का कोई आदमी उनके पास खड़ा नहीं ठहर सकता। वे जितने गन्दे रहते हैं उतने ही भाग्यवान् समझे जाते हैं। तिब्बती भूत प्रेतों से बहुत डरते हैं और भूतों को भगाने की अच्छी तरकीबें भी जानते हैं। तिब्बत में जौ के सिवाय खाद्य अन्न होताही नहीं है, इनका मुख्य भोजन जौ, सुखाया हुआ कच्चा माँस चाय और मक्खन है, पुराना मक्खन तो यहाँ तारीफ करनें लायक होता है। दूध से वे बड़ी नफरत करते हैं। चाय भी उनकी विचित्र ही बनती है वे चाय, सोडा, मक्खन, नमक इनको एक साथ उबा-लकर आँखें मूँद-मूँद बड़े आराम से गर्म चाय पीते हैं।

तिब्बत के लोग बौद्ध मत को मानते हैं। लामा या पुरोहित लोग ही देश के कर्त्ता धर्त्ता हैं। इन पुरोहितों के मुखिया को दलाई लामा कहते हैं। दलाई लामा लासा में रहते हैं इसलिये लासा शहर तिब्बत की राज

धानी (लामा धानी) है। यह सब होते हुए भी ये लोग स्वाधीन है, देशभक्त हैं, अपने देश की रक्षा करने के लिये चारों ओर गुप्तचर दिन रात चौकसी करते रहते हैं। यहाँ पुलिस व सेना नाम मात्र को नहीं है। यहाँ का शासन भी सब अनियमित और अनियंत्रित है। यद्यपि शासन कठोर और एक तंत्र है दण्ड विधान बहुत ही निर्दयता से प्रयुक्त किया जाता है। यहाँ मृत्यु दण्ड तक भी सिर्फ कोड़े मारकर दिया जाता है और नाक कान भी कटवा दिये जाते हैं। व्यभिचार को तो यहाँ भयानक अपराध माना गया है। मृत्यु दण्ड की सजा १ हजार रुपये देकर हटादी जाती है। तिब्बत राज्य केवल धार्मिक भावनाओंसे ही पोषित होकर पुष्टि पाताहै। राज्य की सारी शक्ति प्रजाकी अन्ध धर्म भक्ति में ही है।

लासाका दलाई लामा तिब्बत का सर्वमान्य धर्म गुरू और सर्वोच्च राज्याधिकारी है। उसीके अधीन सर्व राज्य और सम्पूर्ण धार्मिक संगठन का संचालन होता है यहाँ धर्म और राज्य एक ही व्यक्ति में केन्द्रित और एकही संगठन के अधीन है।

तिब्बत का बौद्ध मत या लामावाद एक विशेष ही धर्म है। यहां पर अन्य रूढ़ी, रीति रिवाज आचार और व्यवहार, धार्मिक तथा सामाजिक कृतियां भारतियों

से सर्वथा भिन्न ही हैं। यहांपर भारतीय रुपया नोट आदि सिक्का प्रचलित नहीं। इनके अपने सिक्के तनखा आधा तनखा तथा चीनी और नैपाली रुपये प्रयोग में आते हैं। इन सब बातों की भिन्नता होने पर भी तिब्बत और भारत का आपस में अच्छा सम्बन्ध है।

तकला कोट के पास अल्मोड़े के महात्मा गांधी जी के भक्त सच्चे कांग्रेसी राष्ट्रीय साधु आनसिंह की समाधि है उनकी स्मृति में वहाँ पर एक जल धारा बनी हुई हैं। तकला कोट से २ मील टोकी नामक स्थान से काश्मीर नरेश गुलाबसिंह के वीर सेनापति जोरावरसिंह की समाधि के दर्शन होते हैं, इस वीर ने लद्दाख के धावे में अपनी सेनाओं से तिब्बत पर चढ़ाई की और सेना को छोड़ अपनी धर्मपत्नी को लद्दाख भेजकर तकलाकोट आती बार तिब्बती सेना ने रास्ते में ही घेर लिया और अन्त में बड़ा निर्दयता तथा अमानुषिकता के साथ मार डाला, परन्तु उनके नाम का भय अब तक भी तिब्बत के बच्चे बच्चे को इसी समान है जिस प्रकार कि नैपोलियन का भय अंग्रेजों को, इस वीर योधा का शिर काट कर उसके टुकड़े टुकड़े कर तिब्बत के घर, घर में बांटा गया जिसको भावी सन्तान के हृदयों में भय और साहस पैदा कराके के लिये यादगार सुरक्षित रखते हैं। यहाँ से आगे निर्जन मार्ग से ८ मील एक छोटा सा रुंगुंग ग्राम

है यहाँ गाय, चंवरीगाय का दूध मिलजाता है यह स्थान १४४०० फीट है। यहाँ से आगे मार्ग सीधा सरल और समतल है। गोरि ओडियार और बलडाक या गुरला पास पास करते समय कुछ थोड़ा चढ़ाई उतराई है शेष मार्ग एकसा है। यहां प्रातःकाल का शीत मध्यान्ह का सूर्यताप और साम के वक्त बर्फ का पड़ना मामूली बात है वर्षा यहाँ नाम मात्र को होती है। रुँगुंग ग्राम से ...मील राक्षस ताल के पास—रहसंग १४८५० फीट है यहाँ से राजा मान की तपस्या का श्वेत पर्वत मानधाता का रमणीय स्थाम दिखाई देता है इसी राजा मान के नाम से 'मानसरोवर' भी है। इस स्थान की किसी भी पहाड़ी पर चढ़कर पवित्र मानसरोवर के दर्शन होते हैं। साथ अन्य पहाड़ियोंसे राक्षसताल के भी दर्शन होते हैं।

रहसंग से साधारण उतराई चढ़ाई करते ८ मील मानसरोवर के पश्चिमी किनारे डेरा डालने का स्थान है, प्रायः इस प्रान्त में डाकू यात्रियो को अवसर पाकर लूट लेते थे लेकिन इस सन् १९४९ ई० यानी २००६ विक्रमी को खम्पें डाकुओं का प्रसिद्ध मुखिया 'नाक छाड डाकपो पाँच साथियों' के सहित गरपन लोगों ने मार डाला, हथियार, धन, सम्पत्ति और काफी तादाद में जानवर भी डाकुओं से मिले, अब डाकुओं का भय दूर हो गया है।

मानसरोवर के चारों ओर बौद्ध मठ हैं जिन्हें गुम्फा अर्थात् एकान्त स्थान कहते हैं। मानसरोवर के किनारे आठ गुम्फायें हैं।

वर्खा से ७ मील बुन्दु स्थान दरचन के पास ही है, यही से कैलाश परिक्रमा आरम्भ होती है और दर्शन भी होते हैं। इधर के सभी श्रंगों से कैलाश ऊँचा अर्थात् २२६८० फीट ऊँचा है, यह त्रिकोणाकार मन्दिर की तरह है एक ओर बर्फ की सीढ़ियां जैसी मालूम देती है। कैलाश की परिक्रमा में पाँच प्रसिद्ध बौद्ध मठ पड़ते हैं एक दरचन जंगड़ा, शिर लुंग, छुकड़म, और न्यी गुम्फा होकर ही कैलाश परिक्रमा की जाती है। कैलाश के उत्तर में सिन्धु नदी अर्थात् सिंह चुम-कम्बा कहते हैं, पूरब में सीपों या ब्रह्मपुत्र है, इसे तमजक-कम्बा कहते हैं, पश्चिम में सतलज है जिसे लाचु-कम्बा कहते हैं, दक्षिण में करनाली नदी जिसे मात्तु-कम्बा कहते हैं, इनमें से तीन नदियाँ भारत में प्रवेश करती हैं और करनाली तिब्बत में ही बिहार करती है। कैलाश परिक्रमा के पहले देवालय (गुम्फा) में सोना, चाँदी, ताम्बा, पीतल, अष्टधातु आदि की अनेक देव मूर्तियां हैं और महादेव, पार्वती की संगमरमर की दिव्य मूर्तियाँ हैं. यहाँ पर अखण्ड दीपक घृत के जला करते हैं पुजारी,

लामागुरु सत्यवादी और दीर्घजीवी हुआ करते हैं। पहली गुम्फा में ४ हाथ लम्बे २ दांत हाथी के गुमा-यशी हैं अन्य गुम्फाओं में भी इसी तरह सब जगह दर्शन हैं हां चौथी गुम्फा में विशेष इन्तजाम हैं, इन मठों में पाली भाषा के पुस्तकालय भी हैं और लामा लोग हर वक्त ॐ मने पद्मे हुँ का जप करते रहते हैं डेरफु गुम्फा में ४ हाथ लम्बे भैंस के सींग हैं, जुमलफू गुम्फा में स्फटिक शिला मूर्ति है। ग्यांग-टांग गुम्फा में १५ हाथ लम्बी शेर की खाल है। कैलाश की परिक्रमा २५ मील की है जो २ दिन में अच्छी तरह हो सकती है। जो लोग खुद परिक्रमा नहीं कर सकते वे लामाओं को मजदूरी देकर उनसे करा लेते हैं लामा एक ही दिन में परिक्रमा कर देते हैं।

लामाओं को पञ्चशील बनाया जाता है जैसे पु० शा० शेङ् (किसी जीव की हिंसा न करना) पु-ताउ-तो (चोरी से विरत रहना) पु-सेहं-इन (व्यभिचार न करना (पु-बैड-यि० (झूठ न बोलना) पु-यिन-चिउ (मदिरा आदि से विरत रहना) और पूर्ण दीक्षित होने के लिये पांच शिक्षापद और भी ग्रहण करने होते हैं जो यों हैं—हुआ-यिङ् (गन्ध पुष्पमाला आदि से विरत रहना) को-चैङ् (नृत्य गीत से विरत रहना) ता-

चुआङ् (उच्चासन या महासन से विरत रहना) के-शिह-शिह (विकाल भोजन से विरत रहना) चो-सै-पाओ (सोना चाँदी ग्रहण करने से विरत रहना) ये लोग अपनी उन्नति के छ मार्ग मानते हैं- १ आरोग्य, २ शील, इसका मतलब सदाचार से है। खाना खाते वक्त १५ बातें इनकी जरूरी हैं इसी तरह टट्टी पेशाब आदि आदि सब जगह शिष्टाचार। ३ वृद्धों की अनुमति, ४ श्रुत अर्थात् नाना प्रकार की विद्याओं को जानकर जीवन सुखमय बनाना, ५ धर्माचरण तीन कायिक कुशल कर्म चार वाचिक कुशल कर्म तीन मानसिक कुशल कर्म यह दश कुशल कर्म सबके लिये इस लोक परलोक की उन्नति के सूचक हैं। ६ अनालस्य आलस्य रहित मनुष्य ही सच्ची उन्नति कर पाता है। तिब्बती लामा देखने में भयानक एवं गन्दे हैं किन्तु वह अपने मजहब में बहुत ही ऊँचे हैं अतः आदरणीय हैं।

ग्याङ ठाङ—दरचिन से २ मील उत्तर की ओर है। यहाँ भी लामा ब्रह्मचारी रहते हैं। प्रबन्ध पहले की तरह है वापिस दर चिन मण्डी में ही आना पड़ता है।

मानसरोवर—दरचिन से १२ मील है मार्ग में ८ मील पर नम्कन ठाङ की एक विशाल गुफा मिलती है जिस में पचासों यात्रि रह सकते हैं पास ही में सतलज

नदी बहती है। कहते हैं कि इसके आस पास पहाड़ियों की ओट में तिब्बती डाकुओं का गिरोह पंच हथयारी पहने घुड़ सवार हो यात्रियों को लूटने के लिये छिपे रहते हैं अतः सावधान रहना चाहिए। मार्ग में झुण्ड के झुण्ड श्याम कर्ण घोड़े व खरगोस मिलते हैं। राक्षस ताल—मान सरोवर से निकली हुई नहर से दरांती की तरह का मुड़ा हुआ बना है जो २५ मील लम्बा २० मील चौड़ा है। बीच में ऊंचे टापू बने हुए हैं पूरब की ओर मान सरोवर ५० मील लम्बा ३० मील चौड़ा है। किनारे पर कमल व तरह तरह के फूल खिले हैं। सरोवर जिस समय लहरें मारता है मछलियां लहरों के साथ दूरतक शुष्क भूमि में जा गिरती हैं जिस को यात्रि प्रसाद के रूप में उठा लाते हैं और औषधी के उपचार में लाते हैं। ज्यू गुम्फा मानसरोवर के दाहिने किनारे गुम्बजा कार है।

करदम—मानसरोवर से २० मील है। यहाँ पर तिब्बतियों की घनी बस्ती है। गांव घाटी में बसा है, जौ, मटर, लाई, सरसों की खेती होती है। ग्रामीण लोग भेड़, बकरी गाय और चंवरी गाय पालते हैं। यहाँ पर घी के स्थान पर मक्खन बिकता है। पास ही कर्दम मुनिके आश्रम के चिन्ह मिलते हैं। पुड़ाङ—कर्दम से

६ मील दो ढ़ाई हजार घर तिब्बतियों की बस्ती है ? ये लोग-कच्ची ईंटों के तिमंजिले मकानो पर रहते खेती करते हैं इस मस घाटी में लम्बे चौड़े खेतों में सैकड़ों नर नारी काम करते दिखाई देते हैं खेतों के बीच बड़ी बड़ी गूलें बहती हैं जिनसे पानी के घराट (चक्की) चलते हैं। यहा से ६ मील ताकला कोट तक मार्ग के किनारे बौद्ध मंत्र लिखे हुए पत्थरों के चट्टे मिलते हैं। आज से २ हजार वर्ष पहले तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रचार किया गया यह उस समय के चिन्ह है। पुड़ाङ से २ मील पर लकड़ी की अपने ढंग की निराली पुल है जो रंग, बिरंगे वस्त्रों की पताकाओं से सुसज्जित रहती है। कहते हैं कि तिब्बत सरकार ने इस पुल को बनाने के लिये जुमला नेपाल से तीन लट्ठे मंगाये थे।

ठोकर गुम्फा—मानसरोवर से दूसरे मार्ग द्वारा १६ मील है। यह बड़ी मण्डी है यहाँ-जोहार, दारमा, जुमला नेपाल व तिब्बतियों की १ महिने मण्डी लगती है, मठ का प्रबन्ध पहिले की तरह है।

गोरी गुफा—ठोकर मण्डी से १६ मील है यहां ब्रह्मपुत्र नदी निकलती है।

ताकला कोट—गोरी गुम्फा से १८ मील है यहां १५ हजार फीट की ऊंचाई पर विशाल दुर्ग बना हुआ

है जिसमें लासा सरकार का प्रान्तीय गवर्नर अपने ठाट में सेकड़ों दास दासियों के बीच में रहता है।

दुर्ग के बीच में दरारें पड़ी हैं कि सन् १६६२ में कुमायूँ के राजा बहादुरचन्द ने तिब्बत पर चढ़ाई की। कुमयें सैनिकों की गोलियों की बौछारों से ये दरारें हैं। उस समय की अंकित शिला न्यास की शिला भी अब तक मौजूद है। कोट में चढ़ने के लिये पहाड़ की ऊँची काटकर मार्ग निकाला गया है जो मण्डी से १ मील की गगन चुम्बी ऊँचाई पर है। पीने तक को जल इसी चढ़ाई द्वारा पहुँचाया जाता है। नीचे दो नदियों के संगमपर तिब्बत और व्यासियों की मंडी लगती है घाटी गम और बस्ती घनी है। ताकला कोट के आस पास की जनसंख्या लगभग सात आठ हजार के बराबर होगी अधिकाँश लोग दो मंजिली ऊँची कन्दराओं में रहते हैं। यहाँ से गब्यांग को पहले लिखा मार्ग लेना चाहिए।

खोचर नाथ—ताकला कोट से १० मील उत्तर पूर्व की ओर है मार्ग के दोनों ओर बराबर बस्ती है यहाँ पर्याप्त में खेति बोई जाती है। खोचर नाथ में भारतीय कलाओं से पूर्ण अनुपम सिंहासनों के ऊपर श्रीराम, लक्ष्मण सीताजी की पञ्च धातु से बनी हुई ६-१० हाथ ऊँची विशाल मूर्तियां हैं। यह दीवाल उत्तम कोटि की बनी

हुई है। पास में एक धर्म शाला है जिसमें सैकड़ों यात्री ठहर सकते हैं, मनों घी से भरा हुआ एक दीपक कुंड है। कहते हैं कि सतयुग से यह बराबर जलता आरहा है। यहां लामा के भिक्षुक-ब्रह्मचारी, भारत के पण्डे-पुजारियों की तरह तंग नहीं करते हैं न कुछ मांगते हैं, बड़े शान्त हँसमुख होते हैं। यात्री को बड़ी श्रद्धा से देखते और बड़ी सेवा सुश्रूसा करते हैं। इन मठों पर यात्री अपनी इच्छा से चँवरगाय तथा बकरी चढ़ाते हैं जिनके घी से यात्री के नाम दीया जलाया जाता है।

डिपुंग—खोचरनाथ से लामा की ओर पूरब में १२ मील की विकट घाटी मिलती है बीच बीच में बर्फ के ढाल मिलते हैं उनको पार करके ही डिपुंग गुम्फा मिलता है जो रमणीय स्थान में सूर्य की ओर मुँह करके बनाया गया है, मठ अपनी कला कौशल से परिपूर्ण सुसज्जित है इसके आगे ४ मील की चढ़ाई के बाद १४ हजार फीट से ३ मील का साधारण उतार पार कर एक लम्बी चौड़ी घाटी मिलती है जहाँ भेड़ बकरियों के चरने के लिये लम्बे चौड़े हरे भरे घास के मैदान हैं जिनमें तिब्बती गड़रिये भेड़ बकरियों को लिये इधर उधर फिरते हैं पचासों मील तक तम्बू ही तम्बू दिखाई देते हैं, पहाड़ी की तलहटी में गैनडेज नाम का

विशाल वृत्ताकार मठ बना हुआ है जिसमें सैकड़ों भिक्षुक गेरुआ वस्त्र धारण किये मिलते हैं पास ही एक प्राकृतिक एक मील लम्बा चौड़ा सरोवर है जिसमें श्वेत वर्ण के हंस व बतख तैरते रहते हैं।

नैसी—गैनडेन से १६ मील है, यहाँ भी एक मठ है जिसके आस पास खेती होती है और गाँव भी बसे हुए हैं। यहां के लोग कुछ सभ्य और शिक्षित जान पड़ते हैं। मठ के पास एक आश्रम में लामा लोग धार्मिक उपदेश दिया करते हैं और कुछ ब्रह्मचारी हाथ में त्रिशूल, डमरू, ध्वजायें तथा रंगीन लाठी लिये तिब्बती भाषा के मंत्र—ओं मणि पद्मे हुँ—जपा करते हैं। प्रत्येक मठ में सैकड़ों लामा भिक्षुकों का, शिक्षालय, निवास गृह, खान पानादिक का सुव्यवस्थित प्रबन्ध रहता है। इसके आगे हिमालय की श्रेणियां हैं जो नेपाल राज्य से मिली हुई मानधाता के नाम से पुकारी जाती है पूर्व उत्तरी भाग में ब्रह्मपुत्र नदी अपनी विभिन्न धाराओं को एकत्र कर बहती है जिसमें बर्फ के बड़े बड़े टुकड़े बहकर आते हैं नदी के दोनों तरफ का दृश्य देखने के काबिल हैं जहां सुन्दर हरी भरी जमीन में नाना प्रकार के सुगन्धित पुष्प ही क्या बल्कि मिट्टी भी सुगन्धित ही है।

यथार्थ में यह भूमि स्वर्ग भूमि ठीक ही है। यहां दिव्य बूटियों का घर है, विष उपविष, संखिया, तेलिया भी यहां प्रचुर मात्रा में है। कस्तूरा, थार, हरिया, सफेद खरगोश, जंगली चूहे, धुकिया, यून्याल तो यहां इतने अधिक हैं कि मानो कैलाशपति भगवान ने यह भूखण्ड इन्हीं के लिये बनाया हो।

हां, मक्खी, मच्छर, बिच्छू, सांप, मेढक, जोंक आदि सताने वाले जन्तु तो यहां स्वप्न में भी नहीं हैं। इस प्रकार रमणीक भूखण्ड २० मील पार करके पिङ्ग-नामक दर्शनीय ऐतिहासिक मठ मिलता है यह गर्म घाटी है यहाँ के लोग नैपाली बोली भी जानते हैं यह बस्ती धनाढ्यों की है नैपाल काठमाण्डू से व्यापार करते हैं और अपने बालकों को पढ़ाने लिखाने के लिये हमारे देश तक भेजने लग गये हैं। यहां पर महाराजा हर्षवर्द्धन अशोक के बनाये मठ, मन्दिर अब भी अच्छी तरह से सुरक्षित हैं। इन मठों के अन्दर प्राचीन दशा को याद दिलाने वाले बुद्ध भगवान की मूर्तियां हैं। धूप, दीप और पुष्पों के अलावे यहां के देवता दान, दक्षिणा कतई नहीं लेते हैं। मन्दिर मठों का खर्चा "दलाई लामा" लामा की सरकार की ओर से चलता है, मठों के नाम पर हजारों की संख्या में भेड़, बकरी, चँवर गाय पाली

जाती हैं और उन्हीं की आय से काम चलता है। मठों में पुजारी "लामा" प्रसन्न हँसमुख मिलनसार होते हैं, यहां प्रत्येक गृहस्थ को अपने बालकों को बौद्ध धर्म का ज्ञान करा लेना अनिवार्य है। बालक, बालिकायें गेरुआ वस्त्र पहिने मठों में शिक्षा प्राप्त करते दिखाई देते हैं।

काश्मीर

सैलानियों के लिये काश्मीर अति उत्तम स्थान है। यह जितना रमणीय है उतना ही स्वास्थप्रद भी है। यहां के सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों को देखने के लिये देश विदेश के यात्री आते हैं।

काश्मीर का स्वास्थ्यप्रद जलवायु, उद्यान और सरोवर पुष्प और पक्षी, घाटियां और नयनाभिराम दृश्य सभी उसे विश्राम और मनोरंजन का आदर्श स्थान बनाने में सहायक हैं। काश्मीर की घाटी में इस्लामाबाद, वौइना, रून, चस्मा-ए-शाही, फूकर नाग, अच्छबल और गन्धर्वल नामक स्थानों पर ऐसे झरने हैं जिनके जल में रोग नाशक गुण भी हैं। काश्मीर के जंगलों और लद्दाख, गुरेज, अस्तोर और किस्तवार आदि सीमा स्थानों में रीछ, जंगली बकरे, जंगली भेड़ और तेंदुए पाये जाते हैं। गुलमर्ग में गोल्फ खेलने का सुन्दर मैदान है। तोस मैदान, ज़ामियां वाली गली

और सोनमर्ग में गर्मियों में जाड़ों में बर्फ पर फिसलने के खेल खेले जा सकते हैं।

काश्मीर की केशर, रेशम, रेशम की बनी चीजें, ऊनी शाल, लकड़ी तथा पत्थर की नक्काशीदार चीजें तमाम भारत में जाती हैं। पठानकोट रेलवे से जम्मू सड़क ६५ मील है जो सभी ऋतुओं में यातायात को अच्छी है। भारत से हवाई जहाज भी आते जाते हैं। काश्मीर में यात्री विभाग खुला हुआ है जिसकी शाखायें रियासत भर में फैली हुई हैं प्रवेश पत्र प्रणाली सरल कर दी गई है।

काश्मीर का सामाजिक जीवन

इतिहास के आदि काल से काश्मीर में अनेक सभ्यताओं का उदय हुआ है। परिणामतः काश्मीर निवासियों की संस्कृति—बौद्ध, हिन्दू, और इस्लामी परम्पराओं का सम्मिश्रण है। काश्मीर के लोग अपने व्यवहारिक जीवन में जाति-पांति के भेद-भाव को नहीं मानते, हिन्दू, मुसलमान एक दूसरे के धर्म के आध्यात्मिक उपदेशकों और महात्माओं का समान रूप से आदर करते हैं। काश्मीर में ऐसे बहुत से धार्मिक स्थान और मकबरे हैं जिन्हें हिन्दू और मुसलमान दोनों ही

पवित्र मानते है, मेले और त्योहार भी मिल जुलकर मनाते हैं। नेशनल कान्फ्रेंस के अधिकांश नेता कट्टर मुसलमान होने पर भी हिन्दुओं के धार्मिक कृत्यों और सामाजिक उत्सवों में सम्मिलित होकर अत्यन्त खुशियां मनाते हैं।

जन्म, विवाह और मृत्यु में किये जाने वाले कृत्यों में भी यही बात है। ग्राम्य गीत भी एक ही हैं स्त्रियों में पर्दा प्रथा नहीं है। वेश-भूषा भी एकसा ही है। अगस्त १९४९ में जब गान्धीजी ने काश्मीर की यात्रा की तो वे हिन्दू और मुसलमानों को पहचान न सके थे, लालदेह जो सुलतान शहाबुद्दीन के राज्यकाल १३५० में जीवित थे और रूपा भवानी जो १६वीं शताब्दी के अन्त में हुई उनकी सूक्तियां आज तक भी दुहराई जाती हैं।

सन्तों और ईश्वरीय ज्ञान के खोजने वालों ने सदा ही हिमालय के अद्भुत और मनोहारी सौन्दर्य से प्रेरणा प्राप्त की है। पहाड़ों की निस्तब्धता और वैभव के बीच सांसारिक कामनाओं को भूलकर जिज्ञासुओं ने योग साधना की है इसलिये काश्मीर में ऐसे अनेक पवित्र और तीर्थ स्थान यत्रतत्र बिखरे हुए हैं जो अतीत के आध्यात्मिक चिन्तकों की याद दिलाते हैं।

अमरनाथ—हिमालय के एक विस्तृत बर्फीले प्रदेश में समुद्रस्तर से १२७२९ फीट की ऊँचाई पर अमरनाथ की प्रसिद्ध गुफा भारत के महत्वपूर्ण तीर्थ स्थानों में है।

इस गुफा का आकर्षण केन्द्र एक हिमलिंग है जो चन्द्रमा के साथ साथ घटता बढ़ता रहता है। जुलाई अगस्त के महीने में पूर्णिमा के दिन भारत के सब भागों से हजारों हिन्दू यात्री दर्शन को आते हैं। अमरनाथ पहल गांव से ३२ मील है और यहीं से पैदल यात्रा प्रारम्भ होती है। मार्ग में चन्दनवाड़ी, वाबुजान और पंच तरणी के तीन पड़ाव डालकर चौथे दिन अमरनाथ के दर्शन करते हैं लेकिन वापिस आने में दो ही दिन लगते है इस अवसर पर स्थान स्थान पर अस्थाई दुकानें और छप्परों का प्रबन्ध रहता है।

खीर भवानी का मन्दिर—श्रीनगर से १४ मील उत्तर तुला-मुला का मन्दिर है जिसमें खीर भवानी के दर्शन है। पास में एक झरना है जिसका रंग कभी हरा और कभी बैंजनी बदलता रहता है जून में यहाँ भी मेला लगता है।

कपाल मोचन—श्रीनगर से २४ मील कपालमोचन तीर्थ है पास में ही तीन झरने हैं मुख्य झरने में एक प्राचीन लिंग है, कहते हैं, कि ब्रह्मा का पांचवा सिर

कटने के बाद शिवजी ने इस स्थान पर ही उस पाप को धोया था, इस स्थान पर मृत आत्मा का श्राद्ध करते हैं अगस्त में यहां भी एक मेला लगता है।

गंगाबल झील—श्रीनगर से ३४ मील उत्तर सिन्ध की घाटी में गंगाबल झील है मालूम पड़ता है कि गंगा यहीं से निकली है। हरिद्वार की भाँति इसका भी बड़ा महात्म्य है अगस्त से पूर्णिमा के आठवें दिन यहाँ भारी मेला लगता है।

मार्तण्ड—श्रीनगर से १४ मील एक छोटी पहाड़ी पर ज्वाला जी का एक प्रसिद्ध मंदिर है जुलाई में यहाँ भी बड़ा मेला लगता है। श्रीनगर से ४० मील दक्षिण दूसरा मार्तण्ड है यहाँ सूर्य भगवान की प्रसिद्ध मूर्ति है लोग यहाँ श्राद्ध करते हैं।

अनन्त नाग तथा वैरीनाग—श्रीनगर से ३४ मील दक्षिण अनन्त नाग है, सितम्बर में अनन्त चौदस को यहाँ भी बड़ा मेला लगता है। पीर पंजाल प्रदेश की ओर वनिहाल लाग दर्रे में वैरीनाग विरहानाग है कहते हैं कि काश्मीर की सबसे प्राचीन पुस्तक नीलपत पुराण यहीं लिखी गई थी।

शंकराचार्य—श्रीनगर शहर में शंकराचार्य का

प्राचीन मंदिर है जिसे काश्मीर के राजा गोपादित्य ने बनवाया था और मुसलमान बादशाह जेनुल ने इस मन्दिर की मरम्मत करवाई थी।

हजरतबाल—नसीमबाग के समीप डल झील के किनारे मुसलमानों का एक सबसे अधिक पवित्र स्थान हजरतबाल है जिसमें पैगम्बर का पवित्र बाल रखा हुआ है हर शुक्रवार को और ईद के त्योहार को यहाँ पर मुसलमान भक्तों की बड़ी भीड़ जमा होती है।

मखदूम शाह का मकबरा—मुसलमानों के अत्याधिक प्रिय तीर्थ स्थानों में यह मकबरा हरिपर्वत की तलहटी में बना हुआ है। बीमारी के समय हिन्दू और मुसलमान दोनों ही इनके दर्शन करते हैं।

शाह हमदान मस्जिद—श्रीनगर में जलम नदी से दायें किनारे पर शाह हमदानकी लकड़ी की शानदार मस्जिद है जिसे हिन्दू और मुसलमान दोनों ही पवित्र मानते हैं। इस मस्जिद में काली भवानी का एक झरना है प्रति दिन सैकड़ों हिन्दू यहाँ धर्म कर्म के लिये आते हैं।

तरार शरीफ—श्रीनगर से १६ मील दक्षिण मुसलमानों का तीर्थ स्थान है जो कि तरार गांव में है। पतझड़ के महीनों में हिन्दू और मुसलमान भक्त कश्मीर के दूरस्थ भागों से प्रार्थना और उपासना के लिये यहाँ आते हैं।

कश्मीर के देखने योग्य स्थान

अमिराकादल—कश्मीर की सुन्दर नगरी झेलम नदी के दोनों किनारों पर स्थित है। अमिरा का दल जो कि नदी में एक प्रसिद्ध पुल है, दोनों किनारों पर बसे हुए शहर के दोनों बड़े बाज़ारों को मिलाता है। रावल पिण्डी और जम्बू के बीच वाली सभी सवारियों को इसे पार करना पड़ता है।

शाही चस्मा काश्मीर

यह सभी मुगल उद्यानों में अपने पवित्र व उत्तम पानी के सुन्दर झरने के लिये प्रसिद्ध है श्रीनगर से मोटर रोड़ होकर ५ मील की दूरी पर स्थित है। गर्मियों मे इसका सौन्दर्य देखने योग्य रहता है।

निशात बाग—यह उद्यान श्रीनगर से मोटर रोड़ होकर ७॥ मील और जलमार्ग होकर ६ मील है। यह बगीचा दश चौतरों में अच्छी तरह सजा हुआ है प्रत्येक पर्वत पर एक से दूसरा कुछ ऊंचाई पर चढ़ता हुआ चला गया है। उद्यान के मध्य में अनगिनत झरने जो कि नियमा नुसार तालाब या झीलों में सजे हुए हैं- रविवार के दिन काम करते हुए एक शानदार दृश्य उत्पन्न करते हैं।

झेलम नदी में हाउस बोट की शोभा भी देखने ही योग्य है डल झील—यह झील ५ मील लम्बी २ मील चौड़ी है किन्तु अधिक गहरी नहीं है। यह सिटी लेक कहलाती है। सुन्दर कमल और अन्य पुष्प लहराते हुए जल में बहते हुए बहुत सुन्दर दिखलाई देते हैं। यात्रियों का एक बड़ा समूह नाव से इस झील को पार कर शाला-मार बाग में जाता है।

हरि पर्वत किला—यह किला सम्राट अकबर ने हरि पर्वत की चोटी पर बनवाया था। किले के दो वर्ग हैं, एक में एक हिन्दू मन्दिर है। वहां एक शस्त्रशाला भी है जहां कतिपय पीतल की तोपें सुरक्षित हैं। इसके चारों ओर की दीवाल सम्राट ने १ करोड़ रुपये में सन् १५६० में बनवाया था किले के निचले भागतक एक रास्ता गया है जिसमें तांगा आदि सरलता के साथ पहुंच सकता है।

अवन्तिपुर—झेलम नदी के दाहिने किनारे पर सन् ८२५ से ८२३ तक राजा अवन्त वर्मा ने बसाया था और यहीं काश्मीर राजधानी थी। यहाँ दो प्राचीन मन्दिर भग्न नजर आते हैं। वर्तमान अन्वेषक कार्य जो कि रास्ते के पास ही है देखने योग्य है।

अकबाल—यह सम्राट जहाँगीर ने हृदयग्राही दृश्यों से युक्त सबसे अधिक चित्रित परम सुन्दर बारह दरी,

तालाब एवं झरनों के साथ बनवाया था। जो साम्राज्ञी नूरजहां का स्मारक है। यह उद्यान काश्मीर के सबसे प्रसिद्ध स्रोत वाला है।

वेरिंग—यह जम्बू के मार्ग में श्रीनगर से ५० मील पर ६१०० फीट है इसमें अष्ट भुज स्रोत है जिसका जल नीला है झेलम नदी यहीं से आगे बढ़ती है।

गुलमर्ग—श्रीनगर से २८ मील ८७०० फीट बहुत ही सुन्दर स्थान है गर्मियों में बहुत से दर्शक लोग वहाँ जाते हैं और ठहरते हैं।

सिन्ध घाटी का पुल—यह पहल गाँव के निकट है सिन्ध नदी यहाँ से अपने सम्पूर्ण सौन्दर्य के साथ दिखलाई देती है दर्शक आराम एवं शान्ति के लिए इसे अच्छा पाते हैं।

लद्दाख

श्रीनगर से २४५ मील ११ हजार फीट की ऊंचाई पर एक नया संसार बसा हुआ है। हिमाच्छादित शैल शिखरों और नंगी चट्टानों में घिरी हुई यह घाटी श्रीनगर की फूलों से लहलहाती घाटी से कितनी भिन्न है यह लद्दाख है। १ घन्टे २० मिनट में हवाई जहाज श्रीनगर से लद्दाख की राजधानी लेह में पहुँचता है। पैदल तथा

घोड़े खिच्चर १५-१५ रोज में पहुँचते हैं। लद्दाखमें हिमालय की ऊंची पर्वत माला जिनपर बर्फ से ढकी हुई गगन चुम्बी चोटियाँ हैं सांसारिक अपराधों और पापों का अभी प्रवेश नहीं हो पाया है हाल ही में प्रधान मंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू की लद्दाख यात्रा के समय उनके साथ रहने वाले प्रेस ट्रस्ट के एक सम्वाद दाता ने लिखा है। कि अधिकारियों के लिये इस घाटी में जेल बनाने की आवश्यकता नहीं पड़ी है। लद्दाख गर्मियों में अत्यन्त गर्म और सरदियों में अत्यन्त सर्द रहता है। यहाँ आने जाने के आधुनिक साधन बहुत कम हैं पर इसकी राजधानी लेह में कई महत्त्व पूर्ण व्यापार मार्ग मिलते हैं जो भारत को तिब्बत, यारकन्द और पूर्वी तुर्किस्तान से मिलाते हैं। यद्यपि यह हिम नदियों का देश है और सिन्ध नदी इसमें होकर ३०० मील तक बहती है। फिर भी यह इतना सूखा है कि पानी की कमी सदा बनी ही रहती है यह वर्ष में लगभग ६ मास संसार से कटा हुआ रहता है किन्तु आश्चर्य यह है। कि यहाँ के लोग फी सदी ९० शिक्षित हैं।

भारतीय प्रभाव—लद्दाख की बोली रहन सहन और वेश भूषा में बड़ा भेद होने पर भी यहाँ पहुँचने पर कोई भी भारतीय अपना पनसा अनुभव करता है शहर में

हर जगह ऐसे प्राचीन चिन्ह दिखाई पड़ते हैं जो सुदूर प्रदेश के साथ भारत का सम्बन्ध प्रकट करते हैं। लद्दाख बौद्धों का केन्द्र है भगवान बुद्ध की जन्म भूमि भारत के साथ लद्दाखी अपना नैसर्गिक सम्बन्ध समझते हैं। अनेक सिरों वाले देवी देवताओं, कांसे की मूर्तियों और प्राचीन हस्त लेखों से मालूम होता है कि लद्दाख पर भारत का प्रबल प्रभाव रहा है लद्दाखी लिपि देवनागरी से मिलती जुलती है। लद्दाखी नृत्योंमें भारतीय नृत्यों की झलक है यहाँ तक की गाँव वालों के घर भी पूर्वी पंजाब के घरों के सदृश होते हैं। आभूषणों चित्रों नक्काशी के कामों, मन्दिरों की चित्रकारी के कामों आदि में लद्दाख पर भारतीय प्रभाव है। साधारण तथा लद्दाखी अपनी सुरक्षित घाटी में प्राचीन परम्पराओं का अनुसरण करते हुए सन्तोष के साथ जीवन व्यतीत करते हैं। ये लोग सीधे सादे परिश्रमी अत्यन्त धर्म परायण और प्रसन्न चित्त होते हैं उत्सवों और भोजों के अवसरों पर स्त्रियां सुन्दर आभूषण पहन कर नाचती हैं। लगभग सभी लद्दाख बौद्ध हैं यहां बौद्ध मठों और भिक्षु (लामा) ओंका सुन्दर दृश्य दिखाई देता है कुछ मठ तो गाँव से भी बड़े हैं कोई गाँव मठों से रिक्त नहीं सम्पन्न लोगों के अपने घरमें भी मठ हैं जिनमें लामा रखे हुये है लामाओं

की संख्या अधिक होने पर भी उनका बड़ा आदर करते हैं। उत्सवों में लोग मठों में इकत्र होकर भजन, प्रार्थना और नाच गान भी करते हैं।

लद्दाख में सबसे बड़े भाई का विवाह होता है और जितने भी भाई हों उन सबकी वही औरत समझी जाती है उनके जो लड़के होते हैं वे बड़े पिता छोटे पिता कहा करते हैं यह प्रथा परम्परा से चली आती है इस प्रथा के कारण जन संख्या भी बढ़ने नहीं पाती।

लद्दाख में बाल्टियों से बोटियों का जीवन मान अधिक ऊँचा है वे बड़े सन्तोषी सदा प्रसन्न, हंसमुख, विनोद प्रिय और हर काम के लिये तैयार रहते हैं। लद्दाख में अधिकतर खेती जौ की ही होती है गेहूं भी कुछ होते हैं ऊन और ऊनी वस्त्र काफी मात्रा में होता है।

कुल्लु और बुशाहर

एक बार मेरा स्वास्थ्य खराब था विशेषज्ञों की राय थी कि मैं कम से कम १ हजार मील पहाड़ों की यात्रा करूं स्वास्थ्य लाभ करना जरूरी चीज समझ कर मैं सितम्बर शुरू होते ही रेल मोटर द्वारा काश्मीर पहुँचा वहाँ कतिपय स्थानों की यात्रा कर चम्बा, भरमौर के पहाड़ों का भ्रमण कर महर्षि व्यास, वशिष्ठ के दर्शनों को करके

बड़ी ऊँची चढ़ाई, उतार का रास्ता, देवदार, चीड़ आदि के घनघोर जंगल, अकेला यात्री जिधर दिल चला देखते ही चला, कुछ दिन के बाद कुल्लु आया कुल्लु अच्छी घाटी है यहाँ हर प्रकार की फसल होती है कुल्लु से २१ मील मुडाली तक मोटर सड़क गई है, कुल्लु से आगे लल, पित्ति, यारकन्द आदि तिब्बत प्रदेश हैं, कुल्लु में विजया दशमी का बड़ा भारी व्यापारिक मेला लगता है जिसमें ऊनी माल बड़ी तादाद में आता है और घोड़े भी अच्छे अच्छे बिकने को आते हैं। कुल्लु से २ मील पर बिजली महादेव हैं जहाँ प्रतिवर्ष बिजली-महादेव के लिंग में गिरकर उनके टुकड़े टुकड़े कर डालती है पुजारी उन टुकड़ों को इकट्ठा करके मक्खन के साथ जोड़ कर फिर से लिंग तैयार कर देता है यदि कोई टुकड़ा नहीं मिलता तो रात को स्वप्न में वह टुकड़ा पुजारी बताया जाता है जिसे पुजारी दिन में लाकर उस स्थान पर लगा देता है और उसके दूसरे ही दिन वह शिवलिंग पत्थर जैसा बन जाता है।

यहाँ मनीकर्ण भी देखने योग्य स्थान है जहाँ गर्म पानी के कुण्ड और स्रोत हैं। इस पानी के स्नान करने से गठिया वायु को दूर होना कहा गया है। इस प्रदेश में भी काश्मीर की तरह फल फूल मेवे की उपज अच्छी

होती है। कुल्लु से बिसलेड जोत (शिखर) तय कर रामपुर बुशाहर आया, यह प्रदेश सतलज के दोनों ओर बसा हुआ है यह घाटी कुल्लु की तरह उपजाऊ तो नहीं है किन्तु यहाँ कतिपय स्थान देखने योग्य हैं। यहाँ नरमण्ड में परशुराम आश्रम है जो दर्शनीय है। रामपुर से १८ मील आगे सराण-भीमा कालीजी और गर्मियों में राजधानी रहती है, नवम्बर शुरू में तिब्बत प्रदेश की चीनी तहसील तक और बीच के कुनौरे लोग ठंड के कारण सब नीचे आने लगते हैं उस वक्त सराण जिसे-शोणितपुर भी कहते हैं यहाँ कुनौरों (किन्नरों) का नाच गान होता है यहाँ से पश्चिम की पहाड़ी पर श्रीखण्ड नामक स्थान में महादेव जी के दर्शन हैं यहाँ यात्री नई चिलम पर चरस भरके आगीश्वर महादेव जी के सामने रख देते हैं जिलम में अपने आप लटायें उठती हैं और चरस भाँग जलकर चिलम फूट जाती है लोगों का कहना है कि भगवान शंकर ही उस चरस की दम लगाते हैं। यहाँ से कुछ थोड़ी दूर पर स्वामी कार्तिक का स्थान है जहाँ केवल अस्थि पंजर के रूप में ही दर्शन हैं। रामपुर में ६ नवम्बर के लगभग ३-४ रोज का मेला (लोई) लगती है जिसमें ऊनी माल घोड़े आदि का बड़ा व्यापार होता है यह मेला रामपुर मण्डी देखने को बहुत लोग

आया करते हैं। यहाँ से सुंगरी, बागी, होकर पावर नदी मिलती है, इस नदी के किनारे हाट कोटि देवीजी का स्वतन्त्र स्टेट है यह भूमि षट्कोण है इसे ही पाण्डवों की अज्ञात वास की विराट नगरी कहते हैं। यहाँ से ग्रुब्बल होकर दूसरे दिन चूड़ेश्वर शृंग पर महादेव जी के दर्शन हैं। इस शृंग पर चढ़ने में पहले मयदानव की शिलामय भव्य मूर्ति दिखाई देती है उससे आगे शिवजी के घोड़े के दर्शन करने के बाद शंकर भगवान के दर्शन होते हैं। उससे पूरब की ओर पावर नदी के पास सासण महादेव हैं। यहा ३६० शिवलिंग हैं जिनमें जल टपका करता है, कहते हैं कि प्रधानलिंग में पहले दूध टपकता था किसी मूर्ख साधु ने उस दूध को एकत्र कर उसमें खीर बनाकर खाया तो तब से वह दूध भी पानी ही बन कर टपकने लगा, इधर पावर और तौंस दोनों नदियों का संगम हुआ, कहते हैं कि दोनों नदियों का उद्गम स्थान एक ही है फते पर्वत के आखीर मयदानव की लार से पावर और पसीने से तौंस नदी का जन्म है। यहाँ से दूसरे दिन लाक्षागृह और तीसरे दिन शमीवृक्ष जिस पर अर्जुन ने अपना बाण रक्खा था मिलता है, इस स्थान का नाम कालसी कहते हैं। यहाँ सारी संसार के मनुष्यों की ४ दिन की खुराक का धन जमा है जिसे

निकालने की कोशिश में अंग्रेज भी सफल न हो सके। यहाँ से चकरौता छावनी नजदीक ही पड़ती है इस प्रकार मैंने इन सघन पर्वतीय प्रदेश की १२ सौ मील लम्बी यात्रा की जिसके अन्दर अनेकों ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण देवदार चीड़ आदि के सुन्दर घन पर्वतों का दुर्गम मार्ग स्वास्थ्यप्रद जलवायु का सेवन करते ५ पाँच दिसम्बर को अपने मकान पर आ पहुँचा। स्वास्थ में जितनी खराबियाँ थी वे सब दूर होकर प्रायः रोगमुक्त हो गया। हिमालय की दिव्य बूटियों की सुगन्ध से ही अनेक रोग मुक्त होते हैं फिर सेवन से तो कहना ही क्या है।

हरिद्वार में कुम्भ पर्वयोग और उसका फल

पद्मिनीनायके मेषे कुम्भराशि गते गुरौ।
गङ्गाद्वारे भवेद्योगः कुम्भनामा तदोत्तम ॥१॥

जब मेष राशि में सूर्य और कुम्भ राशि में बृहस्पति होवे, उस समय हरिद्वार में कुम्भ नामक पर्व होता है।

पृथिव्यां कुम्भपर्वस्य चतुर्धा भेद उच्यते ।
चतुस्थले च पतनात् सुधा कुम्भस्य भूतले ॥२॥

जिस समय कुम्भपर्व लगता है उस समय पृथ्वी के चार स्थानों में घड़ों से अमृत की वर्षा होती है। इसलिये चार स्थानों में ही कुम्भपर्व योग होता है।

गङ्गाद्वारे प्रयागे च धारा गोदावरी तटे ।
कलशाख्यो हि योगो यं प्रोच्यते शंकरादिभिः ॥३॥

यह योग पहिले हरिद्वार में, दूसरा प्रयागराज में और तीसरा गोदावरी के सुरम्य तट पर ही कुम्भ पर्वका का माहात्म्य शंकरादियों ने कहा है।

हरिद्वारादि तीर्थेषु चतुर्षु च पृथक् पृथक् ।
कुम्भ पर्वस्य समयो यथा कुम्भमुदीर्यते ॥४॥

हरिद्वारादि चार तीर्थों में कुम्भ पर्व का अलग अलग समय निश्चित किया गया है।

मकरे च दिवानाथे वृषगे च बृहस्पतौ ।
कुम्भयोगो भवेत्तत्र प्रयागे ह्यति दुर्लभः ॥५॥

जब मकर राशि में सूर्य और वृषराशि में बृहस्पति हों, उस समय प्रयाग में अत्यन्त दुर्लभ पुण्यप्रद कुम्भयोग होता है।

माघे वृषे गते जीवे मकरे चन्द्रभास्करौ ।
अमावस्या ततो योगः कुम्भाख्यस्तीर्थनायके ॥६॥

माघ के महीने अमावस्या में जब वृषराशि में बृहस्पति हों और मकर राशि में चन्द्र सूर्य हों तो उस समय प्रयाग में कुम्भपर्व योग होता है।

सहस्त्रं कार्तिके स्नानं माघे स्नानं शतानि च ।
वैसाखे नर्मदा कोटि-कुम्भस्नानेन तत्फलम् ॥७॥

कार्तिक के महीने सहस्त्रबार स्नान करने से माघ के महीने सैकड़ों बार स्नान करने से और वैसाख में जल के करोड़ों घड़ों के स्नान से जो फल होता है वह फल केवल कुम्भपर्व में स्नान करने से होता है।

अश्वमेध सहस्राणि, वाजपेय शतानि च ।
वैसाखे नर्मदा कोटि—कुम्भस्नानेन तत्फलम् ॥८॥

हजारों अश्वमेघ यज्ञों के करने से सैकड़ों बाजपेय यज्ञों के करने से और वैसाख में नर्मदा जल के करोड़ों घड़ों के स्नान करने से जो फल होता है, वह कुम्भ पर्व में स्नान करने से होता है।

अश्वमेध सहस्त्राणि वाजपेय शतानि च ।
लक्षं प्रदक्षिणा पृथिव्यां कुम्भस्नानेन तत्फलम् ॥९॥

जो फल सहस्त्रों अश्वमेधों के करने से मिलता है

और जो फल सैकड़ों वाजपेयों के करने से मिलता है और जो फल पृथ्वी की लक्ष परिक्रमा करने से मिलता है वह फल केवल कुम्भ स्नान से मिलता है।

अश्वमेधफलं चैव लक्ष गौदानजं फलम्।
प्राप्नोति स्नान मात्रेण गंगायां कुम्भगे गुरौ ॥१०॥

जो फल अश्वमेध यज्ञ करने से होता है और जो फल एक लाख गौदान करके होता है वह फल कुम्भराशि के गुरु के समय गंगा स्नान करने से होता है।

यह योग सम्वत् २००७ के विक्रमीय वैसाख कृष्णा एकादशी गुरुवार की साम को ठीक सात बजे को हो रहा है।

अतः कुम्भ पर्व का योग हुआ है जिसका पुण्यकाल ठीक १ बज कर ३० मिनट पर आरम्भ होकर पूरे एक महीने तक अनन्त पुण्य का देने वाला है अतः इस पर्व पर हरिद्वार में स्नान, दान, यज्ञादि सत्कार्य करने से १२ वर्ष के लिये अनन्त पातक नष्ट होकर पुण्य फल प्राप्त होता है।

गङ्गा भागीरथी

भारत की सर्वश्रेष्ठ पवित्र सलिला भागीरथनन्दिनी गंगाजी के विषय में वृद्ध वशिष्ठ सिद्धान्त में लिखा है कि—

भद्राश्ववर्षे सीताख्या चक्षुःस्यात् केतुमालके।
भारते लक नन्देयं कुरुवर्षे च भद्रिका॥

विष्णु पद से निकलने पर इनका नाम विष्णुपदी हुआ और वहाँ से देवलोक आने पर सुरनिम्नगा हुआ। जब देवलोक से यह गिरी तो इनकी चार धारायें हुईं, जिनमें चीन (भद्राश्ववर्ष) में सीता, योरोप (केतुमालका) में चक्षु, भारत में अलकनन्दा और अमेरिका (कुरुवर्ष) में भद्रा नाम हुआ। गंगाजी की उत्पत्ति विष्णु भगवान के चरणों से हुई। जब वामनावतार धारण कर विष्णु भगवान ने राजा बलि से तीन पग भूमि मांगली और उसे नापने के समय विशाल विराट स्वरूपी त्रिविक्रम होकर इन्होंने तीनों लोक नाप लिया तब उस समय ब्रह्माजी ने इनका चरणोदक लेकर अपने कमण्डल में भर लिया था, जिससे गंगाजी निकली हैं। दूसरी कथा यह भी है कि एक बार श्री विष्णु भगवान के सामने श्री महादेव जी नृत्य करने लगे, जिससे प्रसन्न होकर इतने

पुलकित हुए कि द्रवित होकर जलरूप हो गये। ब्रह्मा जी ने यह देख दौड़कर अपना कमण्डलु भर लिया और इसीसे उत्पन्न होनेके कारण गंगा जी ब्रह्मद्रव स्वरूपिणी कहलाईं।

कमण्डलु से भारत में आने की कथा इस प्रकार है कि—राजा सगर जब अश्वमेध यज्ञ कर रहे थे उस समय देवताओं ने यज्ञ में विघ्न डालने के लिये अश्व को चुरा लिया और उसे कपिलदेव जी आश्रम में बांध दिया. राजा सगर के साठ हजार पुत्र घोड़े की खोज में निकले और बहुत प्रयत्न करने पर कपिलदेव जी के आश्रम में पहुँचे वहाँ घोड़े को देखकर उन्होंने कपिलदेव जी को चोर समझकर ललकारा। ऋषिश्रेष्ठ उनके इस कृत्य से अत्यन्त क्रुद्ध हो गये और उनके एक ही हुँकार में सब भस्म की ढेर हो गये।

इन लोगों के न लौटने पर राजा सगर ने अपने नाती अंशुमान को इन लोगों और घोड़े की खोज में भेजा, जो कुछ समय बाद वहाँ पहुँचा, उसे अपने मामा से पता लगा कि इस प्रकार उसके पितृगण ऋषि की कोपाग्नि से भस्म होगये और यह भी कि उनकी मुक्ति के लिये स्वर्ग से गंगाजी पृथ्वी पर लाई जाकर उनके सब

का स्पर्श कराया जावे। अंशुमान घोड़े को लेकर लौट आया राजा सगर ने सभी समाचार मालूम कर यज्ञ पूरा किया। इसके बाद राजा सगर और उसके वंशजों ने कई पीढ़ी तक गंगाजी की तपस्या की और उन्हें प्रसन्न किया पर उनके इस प्रकार कहने पर कि पृथ्वी पर जब धारा गिरेगी तब छिन्न भिन्न हो जायेगी, इसलिये इसकी रक्षा का पहले प्रबन्ध करो। तब भागीरथ ने महादेव जी की बड़ी भारी तपस्या की और प्रसन्न होकर महादेव जी ने अपने शिरपर गंगाजी को रोकने को कहा। दशमी शुक्ल पक्षेतु जेष्ट मासे बुधे हनि। अवतीर्णा यतः स्वर्गात हस्त र्क्षेत्र सरिद्वरा॥ हरतें दशपापानि तस्माद् दशहरस्मृता॥ १॥ ज्येष्ठ मास की शुक्ला दशमी बुधवार हस्त नक्षत्र में गंगा जी पृथ्वीपर अवतीर्ण हुई इस कारण इस शुभ दिन को गंगा दशहरा कहा गया है। अतः गंगा स्नान दशपापों का हरण करता है। जब गंगाजी देवलोक से पृथ्वी पर आई तो उसको अहंकार हुआ कि सदा शिवजी को लेकर भी पाताल चली जायंगी, लेकिन उस अहंकार को मिटाने के लिये शिवजी ने अपनी जटा ही में रोक लिया जिसके कारण भगीरथ जी को फिर तप करके शिवजी को प्रसन्न करना पड़ा, जिससे उन्होंने गंगा जी को अपनी जटा में से छोड़ कर भागीरथ के पितरों को मुक्त किया।

गंगा त्रिपथ गामिनी—गंगा की तीन धारा होने से त्रिपथ गामिनी भी कही जाती है। इनकी एक धार गंगोत्तरी, उत्तर काशी, टिहरी होकर भागीरथी नाम से देवप्रयाग में अलकनन्दा से आ मिली। दूसरी धार कुबेर की अलकापुरी हो कर अलकनन्दा बदरी नाथ होती हुई पाँच प्रयाग १ विष्णु प्रयाग २ नन्द प्रयाग ३ कर्ण प्रयाग ४ रुद्रप्रयाग होकर पाँचवें देवप्रयाग में भागीरथी से मिलती है। तीसरी धारा मन्दाकिनी श्रीकेदारनाथ होकर उत्तरा खंड विद्यापीठ होती हुई रुद्रप्रयाग में अलकनन्दा से आ मिली है। वेद में गंगा की अलौकिक शक्ति का वर्णन करते हुए लिखा है "इमम्मे गंगे शतद्रु व०" इसी प्रकार मनुजी महाराज ने भी गंगा जल को पाप नाशक मानकर लिखा है "गंगामां कुरून गमः श्रीगंगा जी की स्तुति में यह पद्य प्रसिद्ध है।

"गंगा गंगेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो विष्णु लोकं सगच्छति॥

जब गंगा जी का जल वेग से प्रवाहित होते हुए जह्नु ऋषि के आश्रम में पहुँच कर उनका सामान बहाने लगा तो क्रुद्ध होकर ऋषि ने एक दो आचमन में ही गंगा को पीलिया। भगीरथ जी ने फिर ऋषि की प्रार्थना की, प्रसन्न होकर ऋषि ने जंगल चीर कर गंगाजी को

बाहर निकाला तभी से उसका नाम जन्हुनन्दिनी या जाह्नवी हुवा। इस प्रकार गंगाजी सागर पहुंची और सगर पुत्रों को मुक्ति प्रदान किया।

यद्यपि आजकल के लोग गंगाजी का उद्गम स्थान मानसरोवर बतलाते हैं जो कि गंगोत्तरी से १० मील गौमुख जहाँ कि गंगा की धारा बड़े वेग से निकलती है वहाँ से ११० मील से कम नहीं लेकिन वास्तव में गंगा जी बिन्दुसर तालाव जो गोमुख से २५ मील उत्तर पूर्व के बीच सोने के समान चमकते हुये एक महान् शृंग के पास है वहीं से गंगा जी के निकाश हुवा है गंगाजी की पन्द्रह कला राजा भगीरथ के साथ चलीं किन्तु सोलहवीं कला श्रीबद्री नारायणजी के दर्शन को करने अलका पुरी हो कर चली किन्तु कुबेरे ने उसे छै मास वहीं रोक दिया। श्रीगंगाजी का आगमन जानकर देवता लोग देव प्रयाग में इकट्ठे हो गये थे, भगीरथ गंगा को लेकर देव प्रयाग पहुँचे देवताओं ने भगीरथ को धन्यवाद दे भगी रथी का स्नान, तथा जल पान करके कहाकि, महाराज इस गंगा जी को सोलहवीं कला कुबेरने रोकली है अतः जब तक वह इसमें नहीं मिलेगी तब तक यह कलापूर्ण नहीं है। राजा भगीरथ कुबेर के साथ युद्ध की तैयारी करने लगे ही थे कि देवताओं ने कुबेर के माता, पिता,

विश्रवा, मन्दाकिनी को अलकापुरी भेजा वहां जाकर उन्होंने कुबेर को गंगा छोड़ने को कहा गंगा वहाँ से मुक्त होकर भगवन बद्रीश के दर्शन कर ने चली और इधर कुबेर की माता ने भी श्री केदार नाथ जी का दर्शन कर ने को प्रस्थान किया जो केदार नाथ में गंगा रूप होकर आई और उसी नाम (मन्दाकिनी) से लोक विख्यात हो रुद्रप्रयाग में अलक नन्दा से आमिली। उधर देवप्रयाग में अलक नन्दा की प्रतीक्षा में भगीरथ तथा देवताओं को परेशान देखकर भागीरथी के क्रोध का पार न था लेकिन अलक नन्दाने बहुत प्रेम एवँ शान्ति के साथ भागरथी का आलिंगन किया जिससे भागीरथी भी चन्दन के समान शीतल हो गई। देवताओं ने प्रथम पिण्ड भगीरथ से पितरों का यहीं पर दिलाया जिसके कारण वह स्थान देव प्रयाग कहलाया। देव प्रयाग से व्यास-घाट लक्ष्मण झूला ऋषिकेश होकर गंगा जी हरिद्वार जिसे गंगा द्वार भी कहते हैं—यह नगर "मायापुरी" के नाम से शास्त्रों में वर्णित है। यहाँ से गंगाजी दाहिने ओर मेरठ, आगरा, तथा इलाहबाद कमिश्नरी और बाईं ओर रुहेलखण्ड लखनऊ तथा फैजाबाद कमिश्नरियों की सीमा बनाती हुई यमुनाजी में मिल गई हैं।

हरिद्वार से ३ मील कनखल तीर्थ है जो दक्षिण

तट पर है। मेरठ जिलेमें दक्षिण तट पर गढ़ मुक्तेश्वर है यहाँ शिवजी का एक विशाल मन्दिर है और कार्तिकी पूर्णिमां को एक बड़ा भारी मेला लगता है जो १०-१२ दिन रहता है और २-३ लाख यात्री स्नान को मेले में आते हैं यहाँ का पुल भी देखने लायक है, इसके बाद अनूपशाही जहाँ कि पहले ईस्ट इण्डिया कम्पनी की एक कोठी थी। उस समय तक यहाँ बड़ी बड़ी नावें आया करती थी। इसके बाद एटा जिले में सोरों एक तीर्थ स्थान है जिसके पक्केघाट गंगाजी के पाँच मील हट जाने से बेकार पड़ गये, इन घाटों के पास अनेक मन्दिर हैं किन्तु चतुर्भुज बाराह जी का मन्दिर प्रधान है। इसके बाद फर्रुखाबाद, फतेहगढ़ कन्नौज पड़ता है ये नगर पहले गंगा तट पर थे लेकिन अब दो ढाई मील दूर हो हैं। कन्नौज (कान्यकुब्ज) प्राचीन ऐतिहासिक स्थान है। और मुसलमानों के प्रभुत्व कालके आरम्भ तक यह हिन्दू राज वंशों की बहुत दिनों तक राजधानी रही। इसके पास ही काली नदी तथा राम गंगा आकर मिली हैं इस स्थान को अश्वतीर्थ भी कहते हैं। इसके बाद कानपुर जिले में बिठूर तथा कानपुर नगर विशेष महत्व के स्थान हैं। बिठूर नया बिठुर पुराना दो हैं कहते हैं ब्रह्मावर्त का नाम बिगड़ कर बिठुर हो गया है, पुराने बिठुर के घाटों

में ब्रह्माघाट प्रधान है और इन घाटों के ऊपर अनेक देव मन्दिर बने हुए हैं। कार्तिक की पूर्णिमा पर यहाँ बड़ा मेला लगता है। यही पेशवा बाजी राव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब का महल था। इसके बाद प्रसिद्ध नगर कानपुर जो उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा व्यापार का केन्द्र है। और उत्तरी भारत का मैनचेस्टर कहलाता है, यहाँ कपास, ऊन, और चमड़े के बड़े बड़े कारखाने हैं। इसके बाद रायबरेली जिले में डलमऊ का पुराना दुर्ग जो खण्डहर हो रहा है पड़ता है यहां कार्तिक पूर्णिमा को एक बड़ा मेला लगता है और महादेव जी का एक विशाल मन्दिर भी है। आगे इलाहाबाद जिले में मानिक पुर तथा कड़ा भी पुराने स्थान है जिनका समय बीतगया है।

प्रयाग में गंगा जी की सबसे बड़ी सहायक नदी यमुना जी आकर मिली हैं कहते हैं कि गुप्त रूप से सरस्वती नदी भी आकर मिली है जिससे यह संगम त्रिवेणी कहा जाता है। यह पहले केवल तीर्थ स्थान था और तीर्थ पण्डों की साधारण बस्ती थी। किन्तु सम्राट अकबर ने संगम पर किला बनवा कर नगर बसाया जिसका नाम इलाहाबाद रखा। श्री रामचन्द्र जी के समय जो अक्षय बट यमुना जी के उस पार नील कानन में था वही अक्षय बट अब किला के अन्दर है। प्रयाग तीर्थ राज

कहलाता है और प्रतिवर्ष माघ मेला पूरे एक माहका लगता है। हर छटे वर्ष अर्द्ध कुम्भी का तथा हर बारहवें वर्ष कुम्भ का बड़ा भारी मेला लगता है जिनमें लाखों मनुष्य दूर दूर से स्नान के लिये आते हैं।

प्रयाग के बाद प्रसिद्ध तीर्थ स्थान विंध्याचल है जहाँ देवी जी के दर्शन के लिये बराबर ही लोग आते हैं लेकिन दोनों नवरात्रों में तो इतनी भीड़ हो जाती है कि जिसके कारण कहीं पर पाँव रखने तक की जगह नहीं मिलती। इसके बाद मीर्जापुर नगर है यहाँ गंगाजी के दोनों तटों की काफी ऊंचाई हो गई जिसके कारण गंगा जी संकरी हो गई हैं। इसके बाद प्राचीन प्रसिद्ध चुनार का गढ़ है। यहाँ से गंगा जी ने गाजीपुर तक उत्तर की ओर घुमाव लेलिया है। इसीके पास सुलतानपुर की छावनी है यहाँ से २०,२२ मील संसार की प्रसिद्ध काशी पुरी है यह भारत की सात पुरियों में एक है और प्राचीन महा नगरी हैगंगा की ओर इसकी धनुषाकार दृश्य भी अति सुन्दर है, घाटों तथा देव मन्दिरों की मिलावट एक मील से भी अधिक दूरी तक देखने पर परम सौन्दर्य प्रकट करती है उस पार रामनगर दुर्ग काशीराज की छोटी सी बस्ती है। और राजघाट का डफरिनपुल बहुत मजबूत और देखने लायक है। काशीसे आगे गंगा जी

कुछ फैलती हुई गाजीपुर पहुँचती है। आगे मार्कण्डेय में गोमती नदी आकर मिलगई है, इसके बाद बलिया है जो काशी तथा गाजीपुर के समान बायें तट पर बसा हुआ है। बलिया जिले की पूर्वी सीमापर घाघरा या सरयू नदी गंगा में आकर मिलती है। इस संगम को भृगुतीर्थ अथवा महाप्रयाग कहते हैं। यह बलिया नगर बाढ़ से कईबार बह चुका है, इसी कारण अब नदी से हट कर बसाया गया है। गाजीपुर तथा बलिया के बीच में दाहिनी ओर बक्सर है तथा गंगा-सरयू संगम के पास बाँई ओर छपरा नगर है। गाजीपुर तथा बक्सर के बीच में इतिहास प्रसिद्ध स्थान चौसा के पास दक्षिण से आई हुई कर्मनाशा गंगा जी में मिली है। बक्सर में भी गंगा तट पर एक पुराना दुर्ग है जहाँ पर एक युद्ध का स्मारक भी है।

गंगा-सरयू संगम के बाद पटना से पश्चिम और दक्षिण से आया हुआ महानद सोण अथवा सोन गंगा में मिला है। यह संगम पहले पटना के पास में था पर अब काफी पश्चिम की ओर हट गया है। इस संगम पर बालू के पहाड़ बन जाते हैं। जिससे बड़ी नावों का आना जाना रुक जाता है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के समय से स्टीमरों के यातायात के लिये इसे साफ करने

में बहुत धन व्यय होता आ रहा है। इस संगम के अनन्तर दानापुर, बाँकीपुर तथा पटना नगर पास ही पास में हैं जो सब मिलकर लगभग आठ कोस तक गंगा जी के दाहिने किनारे तक चले गये हैं। पटने से कलकत्ते तक अब भी स्टीमर चलता है। पटना (पाटलिपुत्र) प्रसिद्ध मगध नरेशों की राजधानी थी, इस समय भी यह बिहार प्रान्त का शासनकेन्द्र है। पटने के पास उत्तर से आकर गण्डक (नारायणी) नदी गंगा में आकर मिली है। जिसके संगम पर स्थित सोनपुर में सुप्रसिद्ध हरिहर क्षेत्र का मेला कार्तिक-पूर्णिमा पर लगता है। यहीं पर हरिहरनाथ महादेव का मन्दिर है। यह मेला पन्द्रह दिन तक रहता है और बड़ी भीड़ रहती है। यहीं दक्षिण की ओर से फल्गु नदी आकर मिली है जो अमरकंटक के पास से निकलती है।

पटना से आगे बढ़ने पर गंगाजी मुंगेर जिले में पहुँचती हैं, जिसे दो भागों में विभाजित कर देती है। इस जिले में बड़ी गण्डक, तिलयुजा और छोटी गंडक आदि कई नदियां आगे जाकर गंगाजी में मिली हैं। यहाँ कई बड़े ताल हैं जिनमें वर्षा ऋतु में बड़ी बड़ी नावें भी चलती हैं। यहाँ गंगाजी में कई छोटे छोटे द्वीप भी बन गये हैं। मुंगेर नगर गंगाजी के दाहिने तट पर बसा

है जिसका दुर्ग भी इतिहास में प्रसिद्ध है। यह दुर्ग पहाड़ी टीले पर बसा है, जो कुछ दूर तक गंगाजी में चला गया है। उत्तर की ओर गंगाजी दीवाल तक पहुँच गई है और अन्य दिशाओं में खाई है। इसके बाद भागलपुर जिला पड़ता है यहाँ दोनों तटों पर बहुत सी पहाड़ियाँ हैं जिससे यहाँ का दृश्य बहुत रमणीक हो चुका है इसी जिले में सुलतानगंज के पास जांघिरा की पहाड़ी गंगाजी के बीच में ऊपर निकली हुई है जिसकी चोटी पर शिव-मन्दिर है जो परम पावन माना जाता है। इस पर कुछ वृक्ष उगाने से और भी सुन्दरता दिखाई देती है। मन्दिर के सामने तट पर भी एक पहाड़ी है जिस पर मसजिद बनी हुई है। यहाँ से कुछ दूर पूर्व भागलपुर नगर गंगाजी के दायें तट पर बसा हुआ है। इससे २५ मील पूर्व में उत्तर से कई नदियों को अपने में मिलाती हुई कोशी नदी गंगाजी में आ मिली है, यह संगम कहल गाँव के सामने है लेकिन पश्चिम की ओर हटता जा रहा है। व्यापारिक नगर नाथपुर पहले सन् १८५० में संगम के पश्चिम में था पर बह बह जाने से उसका स्थान अब कई मील पूर्व होगया है। कहल गाँव के पास भी नदी की मध्य धारा में एक छोटा सा ऊँचा पहाड़ी टापू है, जिस पर वृक्षों का

दर्शनीय झुरमुट है। इस टापू के सामने विक्रमशिला का पुराना टीला है, जहाँ बौद्ध काल में एक प्रसिद्ध विद्या-पीठ था, यह हिन्दुओं का भी पवित्र स्थान है और यहीं से राजमहल के पर्वत भी दिखाई देने लगते हैं। कहल गाँव से आगे गंगा जी तेलिया गढ़ी दर्रे से निकलती हैं और कुछ आगे बढ़ कर दक्षिण की ओर घूमती है तथा कुछ पूर्व झुकती हुई समुद्र की ओर जाती है। राजमहल मुगल काल में राजा मानसिंह की सूबेदारी के समय से बंगाल तथा बिहार की राजधानी रह चुका है। इसमें पत्थर के तथा संगमरमर के बने हुए अनेक महल अब भी मौजूद हैं पर अब उजड़ते जा रहे हैं और साहिबगंज का महत्त्व बढ़ता जा रहा है। संगीदालान नामक पुरानी इमारत कम्पनी के कोयले घर का काम देता था, जो स्टीमरों के लिए यहाँ संग्रह किया जाता था। एक सौ वर्ष पूर्व मिस एम्मा रावर्ट्स ने लिखा था कि जहाँ हीरों से लदे दरबारी एकत्र होते थे वहाँ अब ग्रेट ब्रिटेन का हीरा कोयला संचित होता है। राजमहल के पहाड़ों के कारण यहाँ की प्राकृतिक शोभा बहुत अच्छी है। गंगा की धारा के परिवर्तन से कई नगर नदी से दूर पड़ गये हैं जिनमें उजड़ा हुआ गौड़ भी है। इसके बाद मुर्शिदा-बाद जिले में सूती के पास छापघाटी से गंगाजी की दो

प्रधान शाखायें हो जाती हैं । भागीरथी पर जंगपुर पड़ता है जहाँ पर कम्पनी पहले कर उगाहती थी ।

सबसे पूर्व की तथा प्रधान धारा राजशाही तथा पावना जिले की सीमा बनाती हुई ग्वालन्दों में ब्रह्मपुत्र नदी की प्रधान शाखा गंगाजी से मिलकर पद्मा कहलाती है । ग्वालन्दो की स्थिति विचित्र है, यह रेलवे का स्थान भी है किन्तु दो विशाल नदियों का संगम होने से स्थान घटता बढ़ता रहता है, इसके मकान आदि गार्डर, चद्दर के बनाये जाते हैं जो जल्द हटाये बढ़ाये जा सकते हैं । यह धारा ग्वालन्दो से आगे बढ़ने पर एक ओर फरीद-पुर तथा बाकरगंज की ओर दूसरी ओर टिपरा, ढाका तथा नोआखाली जिलों की सीमा बनाती हुई समुद्र में जा मिलती है । पद्मा जब ढाका की दक्षिणी सीमा पर पहुँचती है, तब पूर्वोत्तर से आती हुई मेघना नदी इसमें मिलती है तब इसको मेघना कहते हैं

सबसे पश्चिम की तथा पवित्र धारा भागीरथी की है जो सीधी दक्षिण की ओर जाती है इसके तट पर जंगपुर मुर्शिदाबाद, ब्रह्मपुर (बर्हामपुर) कटवा पलासी तथा नदिया नगर हैं । मुर्शिदाबाद बंगाल के नवाबों की राजधानी बहुत दिन तक रही जो अब भी अच्छा नगर है । नदिया या नवद्वीप वैष्णवों का पवित्र तीर्थ है और

संस्कृत का एक प्रमुख केन्द्र है। इसके पास आकर गंगा जी की मध्य धारा जालगी भागीरथी में मिल गई और हुगली के नाम से कही जाने लगी, इसके तट पर हुगली चिनसुरा, चन्दन नगर श्रीरामपुर तथा बारकपुर बसे हुए हैं, जिनके दक्षिण कलकत्ता महानगरी है इसके दक्षिण में बजबज तथा नाम मात्र का डायमण्ड बन्दरगाह है, गंगा जी यहाँ से चौड़ी होती हुई सागर द्वीप के पास समुद्र में जा मिली हैं। यहाँ पर मकर संक्रान्ति पर गंगा सागर का भारी मेला लगता है। यह वही स्थान है जहाँ कपिलदेव जी के कोप से भगीरथ जी के पूर्वज भस्म हुए थे। यह गंगा की धारा विष्णु चरणोदक ब्रह्मा के कमण्डलु अर्थात बिन्दुसर से कैलाश पहुँचती है यह महादेव जी का स्थान है और 'ईशस्य केशान् विदुरम्बु-वाहान्' अर्थात महादेव जी की जटा बादल हैं, जिससे सभी नदियों को जल मिलता है। वास्तव में भारतवर्ष के इतिहास काप्रधान अंश गंगाजी की घाटी का ही इतिहास है और यही गंगाजी के महत्व को प्रकट करता है। भारतवासी यदि गंगाजी को माता से बढ़कर मानते हैं तो इसमें आश्चर्य ही क्या है? इनके महत्व को योरप के विद्वानों ने मुक्तकण्ठ से स्वीकार किया है। इसलिये प्रेम से श्रीगंगा भागीरथी की जय और राजा भागीरथ की जय बोलते रहें इसी में हमारा कल्याण है॥

शिवलिंग पूजन की महिमा

आज श्री आद्य शंकराचार्य जी का जन्म दिन है श्री शंकर भगवान आज से लगभग बारह सौ वर्ष पूर्व और कई गवेषकों के मत से इक्कीस सौ वर्ष पूर्व भारत के दक्षिण प्रान्तवर्ती द्रविड़ देश में उत्पन्न हुए थे, 'गीता-रहस्य में इनके पिता का नाम केशव भट्ट और माताजी का नाम सतीदेवी लिखा है, जिस समय आचार्य चरण अवतरित हुए थे, उस समय संसार भर में नास्तिकता का साम्राज्य था, वेदादि शास्त्रों पर अश्रद्धा हो गई थी, भारत समान धर्मप्राण देश का भी एक तिहाई जनसमुदाय सर्वथा नास्तिक बन चुका था जो खुल्लमखुल्ला पुकार कर कहता था कि—

'त्रयो वेदस्य कर्तारो भण्ड धूर्त निशाचराः'

अर्थात् वेदों के बनाने वाले भाँड, धूर्त और राक्षस हैं। ऐसे विकट समय में भगवान् शंकराचार्य ने अवतार धारण किया था, उनके जीवन का उद्देश्य नास्तिकता का समूलोन्मूलन करके पुनः आस्तिकता स्थापित करना था। स्वामीजी ने वेद का झंडा हाथ में लेकर धूर्त नास्तिकों को ललकारा, नास्तिक हारे सत्य की विजय हुई। श्री शंकर भगवान् ने धर्म-विजय को सुस्थिर रखने

के लिए भारत की चारों दिशाओं में चार विजय-मठ गोवर्द्धन, शृंगेरी, शारदा और ज्योतिर्मठ स्थापित कर यह अटल घोषणा की कि वेद में ब्रह्म के अवतार शिव भगवान की उपासना का स्पष्ट शब्दों में वर्णन है ? क्या केवल भारतवर्ष में ही सनातनधर्मी लोग शिवलिंग पूजन करते हैं या अन्यान्य देशों में भी।

शिवलिंग पूजन विश्वव्यापी है

काशी निवासी बाबूशिवप्रसाद ने "पृथ्वीप्रदक्षिणा" नामक एक सचित्र बृहद्ग्रन्थ में अपने आँखों देखा वर्णन किया है। "शिवलिंग पूजन पृथ्वी के तमाम भागों में और समस्त जातियों में भिन्न, भिन्न प्रकार से पूजन हुआ करता है जो इस तरह पर है।"

(१) अफ्रीका के इजिप्त मिसर देश में "आसिरिस" और "आईसिस" नामक लिंग का पूजन होता है। "असिरिस,, के मस्तक पर तथा गले में सर्प हाथ में त्रिशूल और अङ्ग पर शिव के समान व्याघ्र चर्म है और "ऐपिस,, नामक नन्दी पर सवार है तथा बिल्व-पत्र के समान किसी वृक्षपत्र को पूजन में ऊपर अर्पण किये जाते हैं। हमारी काशीपुरी की भांति वहाँ भी "मेम्फिस,, नामक प्रसिद्ध काशी का धाम है।

(२) उत्तरी अफ्रीका की अर्व जातियें भी लिंग द्वारा ही ईश्वरोपासना करती हैं।

(३) ग्रीस-यूनान में 'बेसक,, और 'प्रियेसस,, लिंग की पूजा होती है।

(४) इटली की राजधानी प्रसिद्ध रोम नगर में रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय के ईसाई शिव-लिंग पूजन करते हैं।

(५) स्काटलैंड के ग्लासगो शहर में एक सुवर्ण जड़ित बृहत शिवलिंग पूजा जाता है।

(६) नार्वे और स्वीडन में भी शिवलिंग पूजन होता है।

(७) आस्ट्रिया-हंगरी में "तंत्रिस्वक" नामक लिंग की पूजा होती है।

(८) रूम-असीरिया देश के बिलन नगर में तीनसौ घन हस्त प्रमाण का बड़ा भारी शिवलिंग का पूजन होता है।

(९) स्यामदेश में "एकोनिस,,और "एस्टरगोटिस,, नाम के पाषाणमय शिवलिंग पूजे जाते हैं।

(१०) अर्बस्तान के मक्का शरीफ में "सगेअसवद,, (मक्केश्वर) नामक शिवलिंग को हज करने वाले तमाम मुसलमान श्रद्धापूर्वक चूमते हैं।

(११) सुमात्रा और जावा द्वीप में भी शिवलिंग पूजन होता है।

(१२) यहूदिया देश में इस राइली तथा यहूदी सम्प्रदाय का एक प्रतिष्ठित शिवलिंग है, जिसे स्पर्श करके आज तक भी शपथ (कशम) ली जाती है।

(१३) जापान के आइस नगर में भी लिंग पूजन होता है।

(१४) सिलोन [लंका] में शिवलिंग पजा होती है।

(१५) साइबेरिया के तासकन्द नामक शहर में सिबिलियन लोग लिङ्ग पूजा करते हैं।

(१६) अफ्रीदीस्तान के चित्राल, स्वाद, बलख, बुखारा, कोहेकाफ आदि स्थानों में "चंच शेर" लिंग की पूजा होती है।

(१७) हवाई टापू के आदिम निवासी ईति भीति [अतिवृष्टि, अनावृष्टि, मूषक, टीडि आदि उपद्रव के] अवसर पर शान्ति के लिए शिवलिंग पूजा करते हैं।

(१८) ईरान में ज्वालामय लिंग की पूजा होती है।

(१९) दक्षिणी अमेरिका के ब्रजिल स्थान में शिव, गणेश, आदि देवताओं की प्रतिमायें पुराने खण्डहर खोदते हुये मिली हैं जो ईसा के जन्म से सहस्रों वर्ष पूर्व

को ख्याल की जाती है इससे सहज ही अनुमान किया जाता है कि वर्तमान सभ्य कही जाने वाली जातियों के उद्गम से पूर्व वहाँ प्रतिमा पूजन का प्रचार था।

(२०) पेरू में मिट्टी का शिवलिंग [पार्थिवेश्वर] पूजा जाता है।

(२१) अमेरिका के पेम्बु को शहर में गोल-सरल द्विमुखी शिवलिंग है।

(२२) यूनाईटेन्ड स्टेट्स आफ अमेरिका U. S. A. के टेन्सी नगर में एक बृहत शिवलिंग पूजा जाता है।

(२३) स्वामी रामतीर्थ और स्वामी विवेका नन्द के प्रचार से अमेरिका में अनेक मन्दिर बने और लन्दन में भी शिवालय बन चुके हैं।

(२४) केनिया की राजधानी नैरोबी का गगन चुम्बी शिवमन्दिर शास्त्रार्थ महारथी पं० माधवाचार्य शास्त्री गौड द्वारा प्रतिष्ठित हुआ है और मुम्बासा तथा जांजीबार के शिवालय भी प्रतिष्ठित हुये हैं।

(२५) दक्षिणी अफरीका, माडागास्कर, फीजी, मारिशस, गायना और वेस्ट इन्डिज आदि उपद्वीपों में भी शिवालय बन चुके हैं।

क्राँतिकारी भगवान श्री कृष्ण

भगवान् श्रीकृष्ण एक प्रसिद्ध क्रान्तिकारी महापुरुष थे, जिन्होंने अपनी और अपने देश की स्वतंत्रता के लिये साम्राज्य वाद का विरोध किया। देश वासियों की पीड़ा उन पर होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध कदम उठाया और (१) मथुरा में कंस का साम्राज्य, (२) मगध में जरासन्ध का (३) प्राग्ज्योतिष पुर में भौमासुर का उनके क्रूर कर्मी साथियों के सहित अन्त करके कंस का राज्य उसके पिता उग्रसेन को, जरासन्ध का राज उसके पुत्र सहदेव को, भौमासुर का उसके पुत्र भगदत्त को राज्य पर नियुक्त कर दिया।

श्रीकृष्ण सब की स्वतंत्रता के लिये वेदोक्त राज्य व्यवस्था से कर्म करने वाली, केन्द्रीय शासन सत्ता स्थापित करना चाहते थे। प्रजा प्रतिनिधि सभा द्वारा हमारे देश में सदा प्रजा के अधिकारों की रक्षा होती रही है।

(१) पुरोहितों की सभा धर्म--व्यवस्था बता कर धार्मिक कृत्यों का संचालन करती रही थी,

(२) स्वास्थ सभा—समस्त जन पदों को स्वच्छ रख कर राजा और प्रजा को आरोग्य रखने का प्रयत्न रखती थी, ज्योतिर्विद परिषद सम्पूर्ण राष्ट्र का कार्य-क्रम बनाती

थी और वर्तमान तथा भावी अनिष्टों से बचने का उपाय करती थी, मंत्री सभा प्रजा की शान्ति सुरक्षा और स्वतंत्रता के लिये प्रयत्न शील रहती थी। शुक्र नीती में और अथर्व वेद में इस प्रकार पाया जाता है।

श्रीकृष्ण के अवतीर्ण होने के समय देश की राज्य व्यवस्था बिगड़ी हुई थी, प्रजा कष्ठ के साथ पराधीन थी, राजाओं में वैदिक सना तन-संस्कार शेष नहीं रहे थे।

कौरवों की सभा यद्यपि राज सभा के रूप में थी, परन्तु उसके सभासद, मंत्रीमण्डल, पुरोहित वर्ग तथा सभी केवल राजा को प्रसन्न करने के लिये उसके हाथ की कठ पुलती से अधिक नहीं थे और यही कारण था कि जूआ खेलने की दुर्म प्रथाओं को कोई नहीं रोक सका।

इतना ही नहीं वरन् द्रौपदी जैसी विदुषी राज-महिषी पर सब नेयाचार होते देखा। श्रीकृष्ण जबदूत रूप में पाण्डवों का सन्देश लेकर गये थे उन्होंने स्वयं भी उस सभा की धांधली और मनमानी देखी।

यही कारण था कि कंस, जरासंघ, भौमासुर, कौरवादि साम्राज्य वादी राजाओं का दमन कर कराके

धर्म राज्य का विधान करके केन्द्रीय शासन सत्ता राजा युधिष्ठिर के आधीन स्थापित की।

युधिष्ठिर को राज्य नियम समझाने के लिये भीष्म पितामह के पास लेगये और उनसे समस्त राजकीय विषयों पर उपदेश दिलवाया।

काम, क्रोध, मद, लोभ, मान, और हर्ष बुरे राजाओं के नाश के कारण होते हैं। लोभ से राजा ऐल, मद से छिजों द्वारा राजा बेन, अभिमानी होने के कारण आयुष का पुत्र और हर्ष के कारण पुरंजय मारा गया।

गढ़वाल का संक्षिप्त इतिहास

(१) महाभारत, पुराणादि प्राचीन ग्रन्थ (२) जातीय उत्सव त्योहार और उनकी कथायें (३) पुराने जागर पवाड़े रांसे और गीत (४) परवाणे अर्थात् लोकोक्तियाँ (५) विदेशी यात्रियों के यात्रा वर्णन (६) सरकारी गजेटियर (७) शिला लेख और ताम्र पत्र आदि [८] पुराने गढ़ कोट, इत्यादि के भग्नावशेष, [९] प्राचीन कालके मन्दिर और मूर्तियां [१०] पुराने तीर्थ स्थान और मेले गढ़वाल का इतिहास मुख्य तीन भागों में विभाजित किया जासकता है १ देवासुर काल २ खासिया काल ३ क्षत्रिय काल—

देवासुर काल में यहाँ देवता, ऋषि, मुनि, यक्ष, राक्षस, असुर, दानव, सिद्ध, गन्धर्व, किन्नर निवास करते थे। भगवान् शंकर श्रीकेदार नाथ जी, बद्री नारायण जी, लक्ष्मीजी, पार्वतीजी, चामुण्डा, चण्डिका, कालिका- नर, नारायण, कुबेर, कृष्ण, अनिरूद्ध, राम, लक्ष्मण आदि देवता, व्यास-घाट, वशिष्ट-आश्रम, परशुरामआश्रम, शुकआश्रम, च्यवनआश्रम, भृकण्डाश्रम, उत्फालकाश्रम, यमदग्न्याश्रम, आदि आदि ऋषियों के निवासस्थान भी यहीं हैं। पांचों पाण्डव भी अधिकतर यहीं रहे हैं पाण्डुकेश्वर, भ्यूंडार, भ्यूंचुला, भ्यूंसेरा, पञ्चौं ताल, पञ्चौं सेरा वगैरह पाण्डवों के स्थान भी यहीं हैं यह ही नहीं यहां प्रायः सभी गांवों में पाण्डव नचाये जाते और पूजे जाते हैं। महाकवि कालिदास जी की जन्म भूमि भी यहीं है।

इनके अलावे दैत्यराज बाणासुर, कौलासुरादि दैत्यों की राजधानियां भी यहीं रही, बाणासुर की राजधानी शोणितपुर और कौलासुर की राजधानी कुईला, मरदार रुद्रप्रयाग पास में है महाबली राक्षस घन्टा कर्ण भी श्रीबद्री पुरी में है। पाण्डवों को जलाने के लिये कौरवों ने लाक्षागृह भी यमुना नदी के किनारे पुरशान्ती पास ही बनवाया था उसी ओर पावर नदी के किनारे

विराट राज की राजधानी रही, जिसका नाम आजकल हाटकोटि स्टेट कहते हैं। द्रौपदी के पाँच पति होने के नाते, उस प्रान्त में अब भी एक घर के कई मर्दों की एक ही औरत हुवा करती है।

खसिया काल में खसिया लोग आसाम प्रान्त से आकर नेपाल, कमायूँ, गढ़वाल, शिमला अर्थात हिमाञ्चल प्रदेश में सर्वत्र बस गये जो अब भी पाये जाते हैं इस प्रान्त के आदि निवासी कोल, भील, किरात इत्यादियों ने खसियों का विरोध किया और बार बार लूटकर उन्हें तंग किया तो तब खसियों ने ऊंचे ऊंचे स्थानों पर अपने गढ़ बनाकर आत्मरक्षा की और सारे प्रान्त में गढ़ ही गढ़ बनगये जिनके खण्डहर अब भी मौजूद हैं। गढ़ों में बसकर भी खसिये तंग किये गये तो खसियों ने दुश्मनों में विवाह सम्बन्ध जोड़ कर मित्रता बढ़ा के अन्त में उनको अपने ही में मिला दिया वे लोग जंगली जानवरों का शिकार खेलकर अपना पेट पालते और अशिक्षित होने के नाते अन्ध विश्वासी रह कर भूत, प्रेत, गोरील कलुवा, गढ़देवी, कच्चिया, भैरव, उफराई, कैलाशुर, बिष्कुम, नगडुवाल बिंगराल, भराड़ी, ऐराड़ी, सिद्ध नाथ, निरंकार बरादेऊ, आछरी, मुसवा, मास आदि आदि अनेकों को देवता मानकर पूजते थे, जिनों से कई एक अभी भी गढ़वाल में पूजे जाते हैं।

खसियों के समय में ही गढ़वाल में बौद्ध मत का प्रचार हुआ है। उनमें से अनेकों ने बौद्ध मत को स्वीकार लिया था, गढ़वाल में प्रायः सभी बौद्ध मन्दिर हैं, इन मन्दिरों की बनावट ठीकबुद्ध गया और सार नाथ के पुराने मन्दिरों की तरह है। श्रीकेदारनाथ जी का मन्दिर भी बौद्ध मन्दिर है इस मन्दिर के दरवाजे के ऊपर बाहर की तर्फ एक अश्लील चित्र पत्थर पर बना था जो स्वामी शंकराचार्य ने कटवा डाला लेकिन उसका मामूली चिन्ह अभी भी दिखाई देता है। हिन्दुओं के प्रसिद्ध तीर्थ बदरीनारायण की मूर्ति भी बौद्ध मूर्ति है इधर जन श्रुति भी है कि बदरीनारायण ही बौद्धावतार हैं किन्तु इस मूर्ति में आकर्षण इतना है कि हिन्दु नारायण ऋषि की ध्यान मग्न मूर्ति, बौद्ध बुद्ध भगवान की, और जैन अपने पारस नाथ की मूर्ति मानते हैं।

गढ़वाल के कुछ मन्दिर में शिवलिंग हैं और वे लिंग भी बहुत जगह टूटे और फूटे हैं उनका कारण यह है कि शंकराचार्य के अनुयायी शिव लिंगों की स्थापना करते और बौद्ध उन्हें तोड़ते जाते थे।

गढ़वाल में बौद्ध मत की स्मृति उन दो प्राचीन त्रिशूलों से भी पाई जाती है जो गोपेश्वर और उत्तर काशी में गड़े हुये अब भी मौजूद हैं। इन त्रिशूलों पर

पाली भाषा में कुछ लिखा हुआ है। गोपेश्वर का त्रिशूल नेपाल के माला-वंशीय राजा अनिकपाल का विजय स्तम्भ और उत्तर काशी वाला त्रिशूल किन्हीं दो राजाओं के जो पिता पुत्र थे जिनके नाम घिस जाने के कारण पढ़े नहीं जाते विजय स्तम्भ हैं मालूम होता है कि वे बौद्ध मत का प्रचार कर इन स्थानों तक पहुँचे थे।

क्षत्रियकाल—दक्षिण भारत में स्वामी शंकराचार्य का आविर्भाव हुआ वे धर्मगुरू माने जाने लगे उन्होंने बौद्धों को भी वैदिक धर्म में मिलाया, उत्तराखण्ड में आये और बदरीनाथ में स्थापित बुद्धमूर्ति को ही वैदिक देवता तपस्वी भगवान् नारायण की मूर्ति के नाम से घोषित कर दिया और साथ ही इसके जोशीमठ में एक वैदिक मठ स्थापित कर अपने एक शिष्य को शंकराचार्य के नाम से उस मठ का अधिष्ठाता बना दिया।

बदरीनाथ के उद्धार एवं ज्योतिर्मठ की स्थापना के समाचार तुरन्त भारतवर्ष में फैल गये और लोग यात्रा को आने लगे, जिनमें से कितने ही ब्राह्मण क्षत्रिय यहीं बस गये। क्षत्रिय लोग शिक्षित और राजनीति निपुण थे, उनकी नीति निपुणता ने यहाँ के खसिया गढ़ाधि-

पतियों का मनमुटाव कर कलह फैलाया और लड़ाई जारी कर दी।

"तोपनाल की तोपनाप, चौंध्याल को राज तोप नाग जो उन दिनों चांदपुर गढ़ के मालिक थे चौंध वालों ने उनको यहाँ से भगाकर गढ़ अपना बना दिया और वे चांदपुर गढ़ पर अजेय हो गये।

टिहरी नरेश के मूल पुरुष कनकपाल इसी चाँदपुर गढ़ के मालिक के दामाद होकर राज्य के उत्तराधिकारी हुए, उस वक्त १५ गांव ही उनके पास थे लेकिन धीरे धीरे कनकपाल ने सब गढ़पतियों से मित्रता कर उनको आपस में ही लड़ा कटा दिया। उन्हीं दिनों गढ़वाल की उत्तरी सीमा से कैंतूरा सरदारों ने कमायूं से चढ़ाई करके खसिया सरदारों को भगाकर जोशीमठ में अपनी राजधानी कायम कर दी। कैंतुरों का बढ़ाव देख कर राजा कनकपाल ने खसिया सरदारों, क्षत्रिय सरदारों को साथ लेकर कैंतुरों पर चढ़ाई कर दी अब कैंतुरा टिकनम के कैंतुरों से छुड़ाई भूमि उन्हीं सरदारों को लौटा दी जो कि पहले वहाँ के मालिक थे। कनकपाल की यह उदारता देखकर सभी गढ़ोंके सरदार चाँदपुरगढ़ के गढ़ाधीश को कर देने लगे, अब सिर्फ कफड़ारागढ़ का सरदार कफड़ारी ही ऐसा रहा जो चांदपुर गढ़ को कर

देने से इन्कार कर गया, चांदपुर गढ़ के सरदार ने कण्डारा गढ़ से लड़ाई ठहरा दी तब कण्डारी सरदार ने अपने पायक याने सिपाही जो फेगू के नेक थे, उनसे सलाह पूछी उन्होंने तलवारों द्वारा एक केले का बगीचा बात की बात में काट कर कण्डारी सरदार को यह विश्वास दिलाया कि इसी तरह हम चांदपुर गढ़ की सेना को भी काट देंगे। कण्डारी इसी विश्वास पर था कि चांदपुर गढ़ के सैनिकों ने कण्डारा गढ़ को घेर लिया, तब कण्डारी सेना ने हाथों में मंजीरा पकड़ा और उन्हें बजाकर चांदपुर गढ़ की विजय गाने लगे। कण्डारी सरदार ने अपनी सेना की हालत देख कर मन्दाकिनी नदी में अपने प्राण त्याग दिये। यह कंडारा गढ़ चन्द्रापुरी के पास में है। तब से यह कहावत प्रसिद्ध है कि—"कण्डारी के पैक, फेगूकेनैक" पैक माने सिपाही के हैं। अब चांदपुर गढ़ का राज्य बड़े लम्बे चौड़े मुल्क पर हो गया। चांदपुर गढ़ किनारे होने से कनकपाल के वंशज सैंतीसवें राजा अजयपालने श्रीयंत्र के पास श्रीनगर में अपनी राजधानी बसाई और राजधानी की तैयारी तक देवलगढ़में राजा अजयपाल रहने लगा इसी कारण देव-लगढ़ भी उनकी राजधानी के नाम से प्रसिद्ध है।

श्रीनगर राजधानी होने पर अजयपाल की गणना

राजाओं में होने लगी दक्खिणी गढ़वाल के गढ़ाधीश/ खनिया और खनिय रहेलों के आतंक से पीड़ित थे अतः कैंतुरों की तरह अजयपाल ने रहेलों को भी मार भगाया अब दक्खिणी गढ़वाल के सरदार भी राजा अजयपाल को कर देने लगे सिर्फ उपूगढ़ का सरदार कफ्फू ही ऐसा रह गया जो अपनी स्वतन्त्रता को खोके कर देना नहीं चाहता था। अजयपाल का धनमद उपूगढ़ की स्वतंत्रता का हरण करने को सदलबल चढ़ाई कर गया, इधर नौजवान वीर कफ्फू ने भी अपनी मुट्ठी भर सेना से नेपोलियन बोनापार्ट की तरह वीर सेनानी बनकर अजय-पाल की बड़ी भारी सेना को चीर दोनों हाथों से तलवार चलाकर अजयपाल की सारी सेना को काट डाला, जिससे उसके वीर सैनिकों का उत्साह भी चौगुना हो गया और वे भी पूरे जोश से अजयपाल की सेना का नाश करने लगे, कफ्फू की विजय हुई।

लेकिन अजयपाल की सेना के बीच कफ्फू को घुसते देख उनके एक दरबान देबू ने गढ़ में गलत सूचना दे दी जिससे कफ्फू की माता ने गढ़ पर आग लगवा दी और बात की बात में सारा गढ़ जन धन के सहित श्मशान हो गया वीराङ्गनाओं ने स्वाधीनता यज्ञ में अपनी अन्तिम आहुति दे डाली। यही पहाड़ी ललनाओं का जौहर था।

पाली भाग में कुछ लिखा हुआ है। गोपेश्वर का त्रिशूल नैपाल के माला-वंशीय राजा अनिरुपाल का विजय स्तम्भ और उत्तर काशी वाला त्रिशूल किन्हीं दो राजाओं के जो पिता पुत्र थे जिनके नाम घिस जाने के कारण पढ़े नहीं जाते विजय स्तम्भ हैं मालूम होता है कि वे बौद्ध मत का प्रचार कर इन स्थानों तक पहुँचे थे।

क्षत्रियकाल—दक्षिण भारत में स्वामी शंकराचार्य का आविर्भाव हुआ वे धर्मगुरू माने जाने लगे उन्होंने बौद्धों को भी वैदिक धर्म में मिलाया, उत्तराखण्ड में आये और बदरीनाथ में स्थापित बुद्धमूर्ति को ही वैदिक देवता तपस्वी भगवान् नारायण की मूर्ति के नाम से घोषित कर दिया और साथ ही इसके जोशीमठ में एक वैदिक मठ स्थापित कर अपने एक शिष्य को शंकराचार्य के नाम से उस मठ का अधिष्ठाता बना दिया।

बदरीनाथ के उद्धार एवं ज्योतिर्मठ की स्थापना के समाचार तुरन्त भारतवर्ष में फैल गये और लोग यात्रा को आने लगे, जिनमें से कितने ही ब्राह्मण क्षत्रिय यहीं बस गये। क्षत्रिय लोग शिक्षित और राजनीति निपुण थे, उनकी नीति निपुणता ने यहाँ के खसिया गढ़ाधि-

पतियों का मनमुटाव कर कलह फैलाया और लड़ाई जारी कर दी।

"तोपवाल की तोपगाथ, चौंड्याल को भाज तोथ मारे जो उन दिनों चांदपुर गढ़ के मालिक थे चौंड वालों ने उनको वहाँ से भगाकर गढ़ अपना बना दिया और वे चांदपुर गढ़ पर अजेय हो गये।

टिहरी नरेश के मूल पुरुष कनकपाल इसी चाँदपुर गढ़ के मालिक के दामाद होकर राज्य के उत्तराधिकारी हुए, उस वक्त १५ गांव ही उनके पास थे लेकिन धीरे धीरे कनकपाल ने सब गढ़पतियों से मित्रता कर उनको आपस में ही लड़ा कटा दिया। उन्हीं दिनों गढ़वाल की उत्तरी सीमा से कैतूरा सरदारों ने कमायूं से चढ़ाई करके खसिया सरदारों को भगाकर जोशीमठ में अपनी राजधानी कायम कर दी। कैंतुरों का बढ़ाव देख कर राजा कनकपाल ने खसिया सरदारों, क्षत्रिय सरदारों को साथ लेकर कैंतुरों पर चढ़ाई कर दी अब कैंतुरा टिकनाम के कैतुरों से छुड़ाई भूमि उन्हीं सरदारों को लौटा दी जो कि पहले वहाँ के मालिक थे। कनकपाल की यह उदारता देखकर सभी गढ़ों के सरदार चाँदपुरगढ़ के गढ़ाधीश को कर देने लगे, अब सिर्फ कण्डारागढ़ का सरदार कण्डारी ही ऐसा रहा जो चांदपुर गढ़ को कर

देने से इन्कार कर गया, चांदपुर गढ़ के सरदार ने कण्डारागढ़ से लड़ाई ठहरा दी तब कण्डारी सरदार ने अपने पायक याने सिपाही जो फेगू के नेक थे, उनसे सलाह पूछी उन्होंने तलवारों द्वारा एक केले का बगीचा बात की बात में काट कर कण्डारी सरदार को यह विश्वास दिलाया कि इसी तरह हम चांदपुर गढ़ की सेना को भी काट देंगे। कण्डारी इसी विश्वास पर था कि चांदपुर गढ़ के सैनिकों ने कण्डारा गढ़ को घेर लिया, तब कण्डारी सेना ने हाथों में मंजीरा पकड़ा और उन्हें बजाकर चांदपुर गढ़ की विजय गाने लगे। कण्डारी सरदार ने अपनी सेना की हालत देख कर मन्दाकिनी नदी में अपने प्राण त्याग दिये। यह कंडारा गढ़ चन्द्रापुरी के पास में है। तब से यह कहावत प्रसिद्ध है कि—"कण्डारी के पैक, फेगूकेनैक" पैक माने सिपाही के हैं। अब चांदपुर गढ़ का राज्य बड़े लम्बे चौड़े मुल्क पर हो गया। चाँदपुर गढ़ किनारे होने से कनकपाल के वंशज सैंतीसवें राजा अजयपालने श्रीयंत्र के पास श्रीनगर में अपनी राजधानी बसाई और राजधानी की तैयारी तक देवलगढ़में राजा अजयपाल रहने लगा इसी कारण देव-लगढ़ भी उनकी राजधानी के नाम से प्रसिद्ध है।

श्रीनगर राजधानी होने पर अजयपाल की गणना

राजाओं में होने लगी दक्षिणी गढ़वाल के गढ़ाधीश खसिया और क्षत्रिय रुहेलों के आतंक से पीड़ित थे अतः कैंतुरों की तरह अजयपाल ने रुहेलों को भी मार भगाया अब दक्षिणी गढ़वाल के सरदार भी राजा अजयपाल को कर देने लगे सिर्फ उपूगढ़ का सरदार कफ्फू ही ऐसा रह गया जो अपनी स्वतन्त्रता को खोके कर देना नहीं चाहता था। अजयपाल का धनमद उपूगढ़ की स्वतंत्रता का हरण करने को सदलबल चढ़ाई कर गया, इधर नौजवान वीर कफ्फू ने भी अपनी मुट्ठी भर सेना से नेपोलियन बोनापार्ट की तरह वीर सेनानी बनकर अजय-पाल की बड़ी भारी सेना को चीर दोनों हाथों से तलवार चलाकर अजयपाल की सारी सेना को काट डाला, जिससे उसके वीर सैनिकों का उत्साह भी चौगुना हो गया और वे भी पूरे जोश से अजयपाल की सेना का नाश करने लगे, कफ्फू की विजय हुई।

लेकिन अजयपाल की सेना के बीच कफ्फू को घुसते देख उनके एक दरवान देबू ने गढ़ में गलत सूचना दे दी जिससे कफ्फू की माता ने गढ़ पर आग डलवा दी और बात की बात में सारा गढ़ जन धन के सहित श्मशान हो गया वीराङ्गनाओं ने स्वाधीनता यज्ञ में अपनी अन्तिम आहुति दे डाली। यही पहाड़ी ललनाओं का जौहर था।

अब सर्वत्र से घायल शेर कफ्फु अजयपाल के सामने कैदी के रूप में दरबार में खड़ा है।

महाराज अजयपाल कहने लगे—वीर मुझे दुख से समवेदना है। तुम जीत कर भी हारे। तुम्हारा सर्वस्व नष्ट हो गया। खैर ईश्वरेच्छा! मुझे अब विश्वास है कि तुम हमारी अधीनता स्वीकार कर हमारे द्वारा सम्मानित होकर छोटा गढ़पति होकर भी बड़ा गढ़पति हो जाओगे।

लेकिन आजादी के दीवाने—कफ्फु ने हँस कर कहा राजन् मुझे आजादी खोकर आपके सम्मानित गढ़ों की कतई आवश्यकता नहीं।

अजयपाल बोले—वीर तुम गलती पर हो, तुम भूल जाओगे तुम्हें मेरी आधीनता स्वीकार करनी ही होगी, रस्सी जल गई पर अभी ऐंठ नहीं गई।

कफ्फु लाल हो गया—ऐ राजा! यह शिर अभी तक न किसी के सामने झुका और न झुकेगा।

अजयपाल भभक उठा—तुम्हें सिर झुकाना ही होगा। जल्लाद बुलाओ, और इसका सिर पीछे से काट कर मेरे पैरों में डालो। जल्लाद आया और उसने—कैदी कफ्फु के हाथ बांधकर तलवार गरदन पर मारी

जिससे गरदन कटकर शिर चार गज पीछे आ गिरा। खून की नदियां बहीं, अजयपाल का सारा शरीर खून से लथपथ हो गया।

अजयपाल सिंहासनसे उठे, अन्य गढ़पति भी उठे। अजयपाल ने कफ्फू के मृत शरीर को शिर झुकाया उस वक्त उनके मुख से निकला कि वीर तुम जीते मैं हारा। वीर गया पर वीरता शेष रह गई।

सारे गढ़वाल का इकछत्र राजा अजयपाल की एक रानी गोली रावतों की लड़की थी इस नाते से गोला प्रधान सरदार राजा के थे इसी पर यह कहावत चली कि—"भीतर गोरली, भैर गोरली—फिराद कैमू करली। श्रीनगर के दरबार में गोलों का ही बोल बाला था। राजा अजयपाल के सातवें पुश्त के राजा बलभद्रपाल को दिल्ली के बादशाह जलालुद्दीन अकबर ने शाह पदवी से विभूषित कर दिया।

दिल्ली के दरबार शाही खिताब पाने के बाद श्रीनगर के राजा का बल इतना बढ़ गया कि कर देने वाले गढ़ाधिपति अब केवल प्रजा से जमीन लगान वसूल करने वाले ओहदेदार, थोकदार, सयाणे, कमीण इत्यादि पदाधिकारी मात्र रह गये और उनका अस्तित्व केवल राजा की कृपा पर निर्भर रह गया।

गढ़वाल के राजा ने जैसी पदवियाँ क्षत्रियों को दी थीं वैसी ही ब्राह्मणों को भी दी थी अब भी गढ़वाल के कई ब्राह्मण नेगी, बिष्ट कहलाते हैं इसी तरह नौटियाल, हटवाल, डिमरी, केडियाल, हौंडियाल, थपलियाल, बौड़ाई, डबराल, बड़थ्वाल आदि ब्राह्मणोंमें थोकदारियाँ चली आ रही है।

वर्तमान गढ़वाल निवासियों में भी अधिकांश खसिया और क्षत्रिय ही हैं, शेष में से कुछ तो ऐसे ब्राह्मण हैं जो क्षत्रियों के गुरू होने के नाते उनके मूल पुरुषाओं के साथ इस मुल्क में आकर बसे और कुछ ब्राह्मण ऐसे भी हैं जो कि मुसलमानी शासन से तंग हो जाने के कारण अपना धार्मिक जीवन बिताने को यहां आकर बसे। यहाँ ब्राह्मण राजपूतों में पेस्तर बहुत अच्छा मेल चला आया देखकर अंग्रेजों ने ट्रेल कमिश्नर के द्वारा जातीयता के विषवृक्ष का बीजारोपण कराया, आज ट्रेल ही नहीं सारी गोरी जाति के कूच जाने पर भी वह विषवृक्ष समय समय पर अपने फूलों और फलों से स्वार्थियों के द्वारा गढ़वाल को महान हानिकर सिद्ध हो रहा है।

गढ़वाल के कुछ महापुरुष—१ लोधी रिखोला गढ़-वाल राज्य की सेना का रखवाला होने से रिखोला कहे

जाते हैं। एक बार तिब्बतियों ने नीतिघाटे के रास्ते गढ़वाल पर आक्रमण किया, महाराजे की आज्ञा से गढ़वाल के शूरवीरों ने लोधी जी की अध्यक्षता में दुश्मनों से लोहा लिया, नीतिघाटी रणक्षेत्र में दोनों से रोड़ी, छुंगोली साग की पतिव्रता का रिवाज चलाया, इस रिवाज को सारे हिमालय प्रान्त ने कायम रक्खा, लोधी की नीति ने तिब्बतियों को ऐसा मार भगाया कि फिर कभी भूलकर भी गढ़वाल पर धावा बोलने को समर्थ न हुए तब से हमारे मारछा जाति के व्यापारी बेफिक्र तिब्बत से व्यापार करने लगे। लोधी जी लंगूर पट्टी के रहने वाले थे, इस जीत में लोधी जी को बदलपुर और पैनों में जागीरें मिलीं। तब लोधी रिखोला बयाली ग्राम में रहकर शेष जीवन बिताने लगे बयाली में इस वीर को एक पत्थर की महान शिला को आज कल के एक सौ आदमी भी नहीं ला सकते ५०० मील से लाकर अपनी यादगार रख छोड़ी है। वीर लोधी की सन्तान अब भी थोकदार कही जाती है किन्तु हमारे लोधी का नाम अमर है। (२) लाट सूबेदार बलभद्रसिंह इस वीर ने अफगान [illegible] और वीरता के वह काम किये जिसे सुनकर लार्ड रौबर्ट भी अचम्भित रह जाते। सरकारी रिपोर्टों में हमारे बलभद्र के गीत गाये गये

और वीरता का इतिहास लिखा गया बल्कि यहाँ तक लिखा गया कि जो देश और जो जाति बलभद्रसिंह सरीखा वीर पैदा कर सकती है वह अपने नाम की अलाहदा पल्टन रखने की इज्जत प्राप्त कर सकती है, नतीजा यह हुआ कि गोर्खाओं से अलाहिदा ही गढ़वाल रेजिमेन्ट कायम की गई। बलभद्रसिंह मेजर सूबेदार से पेन्सन पर आये और बड़े लाट अर्थात वायसराय के ए० डी० सी० नियत किये गये। लाट साहब के हमराह रहने के कारण गढ़वालियों में लाट सूबेदार के नाम ख्याति हो चली। बृटिश सरकार से १३ सौ बीघा जमीन भावर में इन्हें जागीर मिली जो कि आजकल बलभद्रपुर के नाम से प्रसिद्ध है इस वीर की वीरता के फल-स्वरूप आज हजारों क्षत्रिय घरोंका पालन पोषण हो रहा है। और होता रहेगा। किन्तु अफसोस है कि गढ़वालियों ने इस वीर के प्रति कृतज्ञता प्रकट नहीं की, लेकिन वीर के वीरत्व के नाते उनके बड़े पुत्र को घर पर ही बर्दी और खिरच मिला। अब चाहे विश्वका सेनापति ही क्यों न हो जाये किंतु बलभद्रसिंह की बराबरी नहीं कर सकता इन्होंने न तो "थल" और "पू" की हवा फैलाई न छोटे बड़े की और न क्षत्री-ब्राह्मण की। वैसे सिंह जी बहुत हैं लेकिन इस सिंह की बराबरी का सिंह सायद

और नहीं है। २ पं० घनानन्द खण्डूड़ी का नाम गढ़वाल में आ:स्मरणीय हो गया है। व्यवसायी, बहुत हुए हैं येन केन धन भी बहुतों ने समेटा लेकिन गढ़वाल कमायूं के इतिहास में सबसे बड़ा दानी यही सपूत यही माईका लाल दीवान ब्राह्मण कौम का भूषण निकला। गढ़वाल के सैकड़ों, बाहर के विसियों, जो रोटी से हैरान थे आपकी शरण में गये और उनको सहारा मिला। जिनमें से दर्जनों सेठ हो गये, लखपति हो गये, नामी ठेकेदार हो गये और प्रसिद्ध विद्वान भी हुए किन्तु हाय! अफसोस!! और भारी अफसोस!!! इस शरण गत वत्सलका साथ किसी ने न दिया। यह शिकायत उनको रह ही गई। उनकी शिकायत को लिखना व्यर्थ है क्योंकि नेता हीन गढ़वाल, संगठन रहित गढ़वाल, फूट का घर गढ़ वाल, अपने पड़ोसी से इर्षा करने वाला गढ़वाल, जाति पांति का स्वार्थी गढ़वाल कुछ करने को समर्थ नहीं हुआ यद्यपि महापुरुष अपने स्मारक के लिये किसी के पीछे नहीं पड़ते और वे न कोई काम अपने नामके लिये करते हैं। पं० घनानन्द परोपकारी थे उनका पतन संभव नहीं किन्तु जिस पुरुष के दान से हजारों पले, हजारों पलेंगे उस समूह ने कम से कम अपनी कृतज्ञता प्रकाशित करना ही था लेकिन हम अभी इतने योग्य हैं कहाँ कर्मवीर पं०

घनानन्द खण्डूड़ी अपने पिताजी की मृत्यु के बाद असह्य ऋण भार से दब गये थे लेकिन उन्होंने अपने छोटे से जीवन काल में अटल कर्मयोग द्वारा लक्ष्मीपति बन कर विमल यश प्राप्त किया है आपका जन्म सम्वत् १६३६ विक्रमी २० भाद्रपद को हुआ था लेकिन कराल काल ने ४२ वर्ष की जवानी में ही १२ श्रावण १६८१ को हमसे छीन लिया जिसके लिये गढ़माता को महान् वेदना है। ४ बद्रीमहाराज पं० बद्रीदत्त बमोला संसार के उन दीन हीन, कुली कबाड़ियों से लेकर बड़े बड़े तप-स्वियों के लिये नमूना हैं, उनका जीवन अनुकरणीय है। उन्होंने गढ़वाल के सामने भारतवर्ष के आगे एक उदा-हरण रख दिया है कि अपनी बुद्धि कौशल से अपनी ही योग्यता से बिना किसी के सहारे हजारों कठिनाइयाँ सहन कर अर्थात जिन जिन यातनाओं को उन्होंने फौजी में सहन किया क्या उनके असहयोगियों को उनका स्वाद चखने का सौभाग्य भारतवर्ष में प्राप्त हुआ। गढ़वाल में बड़े बड़े नामी कवि हो रहे हैं। नामी लेखक हो रहे हैं नामी पत्र, पत्रिकायें निकली, निकल रही हैं। लेकिन मालूम नहीं हुआ कि क्यों इनकी विस्तृत जीवनी प्रकाशित नहीं हुई। इनकी जीवनी आदर्श जीवनी है ऐसा कौन अभागा होगा जो इनकी जीवनी स्वयं पढ़ने

और बालकों को पढ़ाने का इन्तज़ाम न हो। वर्तमान समय के बी० ए० एम० ए० की डिग्री से विभूषित भी अपने पैरों खड़ा होने की शक्ति नहीं रखते। तो आपही बत-लाइये शुद्ध पानी के दाम में एक कुली को बड़ी महा [illegible]न की पदवी देकर जो माननीय आनरेबुल बनाने की सिफ़ारिश जिसने की थी वहाँ उनका कौन गया था? उन्होंने अपने देश वासियों के हितार्थ उस माननीय पदवी पर लात मार दी और महाराज कहलाना उनका जन्म सिद्ध अधिकार रह गया। उनकी रग-रग में वे गुण थे जिनके कारण वे महाराज के नाम से प्रख्यात हो गये। क्या कोई कह सकता है कि जिसकी जीवनी से दीन दुखियों को ढाढ़स मिलता, परदेश में भटकने वालों को साँत्वना मिलती, अपने बल, अपनी योग्यता से आगे चलने का साहस होता, ऐसा पुरुष याद रखने लायक नहीं है।

५ सिलोगी का सन्त—गढ़वाल में सदानन्द नामों की कमी नहीं लेकिन सदा आनन्द या सद् आनन्द वाला कुकरेती ब्राह्मण सदानन्द ही था। उसकी प्रकृति, उसका स्वभाव, उसकी विद्या सबको मोहित करने वाली एवं शान्ति का सागर थी। इसी कारण उन्हें संतों की श्रेणी में रखना अनुचित न होगा, उस सन्त के कामों से

परिचित व्यक्तियों का कर्त्तव्य है कि वे उनके कामों को प्रकाशित कर आगे के किये हुए अपने काम भी लोगों को दृष्टिगोचर करायें।

६ माधोसिंह—इस वीर की गाथा आज भी अनुकरणीय है वीर माधोसिंह ने अपने बल पौरुष से कीर्ति नगर के पास मलेथा की ऊसर जमीन को २ फर्लाङ्ग पहाड़ के अन्दर सुरंग काटकर पानी की गूल निकाल सारी जमीन को पनचर (तालाऊ) बनाया जो आज प्रान्त भर में हर एक चीज की पैदावार का केन्द्र कहा जाकर देखने योग्य स्थान हो रहा है।

गढ़वाल में एक नहीं अनेकों धीरवीर बुद्धिवान, बलवान हो चुके हैं जिनकी वीरता के कई एक स्मारक अनेक स्थानों पर मौजूद हैं।

यहाँ इन लोगों के अनेक गढ़ याने किले थे जो ऊँचे पहाड़ी टीलों पर होने से इसका नाम सन् १४६५ ई० से गढ़वाल पड़ा जो सन् १८०३ तक गढ़वाल टिहरी नरेश के अधीन था। सन् १८०३ गोरखों ने गढ़वाल पर अपना प्रभुत्व जमाया जिसे सन् १८१५ में अंग्रेजों की सहायता लेकर गढ़वाल नरेश ने निकाल फेंका फलस्वरूप आधा गढ़वाल ईस्ट इण्डिया कम्पनी को मिला। आज कल दोनों गढ़वालों के १२ लाख मनुष्य ७ हजार

गाँव में बसते हैं। यह सबसे ऊँचा हिमालय २५६४५ फीट, नन्दादेवी २५४४७ कामिट २२२६० त्रिशूल २३१८४ दुनागिर २३८६० माना चोटी २३४२० चौखम्भा २३२४० सतोपथ २२७२० केदार शृंगादि अनेक ऊँचे पर्वत हैं जिनमें से अनेक झरने बहकर बड़ी नदियों में आते हैं इसलिये ही स्कन्द पुराण में यहाँ करोड़ गंगाओं का होना बताया गया है। यहीं कुबेर भण्डार है और सभी धातुओं की खानें भी यहाँ हैं यहाँ तक कि हीरा, पन्ना, पुखराज, नीलम आदि रत्न भी यहाँ हैं। जड़ी बूटियों का तो यहाँ घर ही है।

जिला-टिहरी गढ़वाल

पहली अगस्त सन ४९ को रियासत टिहरी विलीन होगई। जिसकी स्थापना आज से १२६० वर्ष पूर्व राजा कनकपालने की थी। और उन्हीं के वंशज राजा अजे-यपाल जो बोलान्दा बदरीनाथ कहलाये। तब से टिहरी का राज सिंहासन बदरीनाथ की गद्दी तथा शासक राजा 'बोलान्दा-बदरीनाथ' कहलाता था। गढ़वाल राज्य हिमालय के विस्तृत भूभाग में फैला हुआ था जिसकी परिधि सहारनपुर, बिजनौर आदि तक फैली हुई थी। सन् १८१५ के गोरखा युद्ध के बाद अंग्रेजों ने इसके

टुकड़े कर दिये और वर्तमान टिहरी उसके शासक को देकर शेष अपने अधिकार में ले लिया । तब से 'गढ़राज्य' टिहरी राज्य के नाम से प्रचलित हुआ । आज १२ सौ वर्षों की सामन्तशाही के बाद टिहरी की जनता पूर्ण स्वतंत्र हुई और अब टिहरी यू० पी० का ५० वां जिला होगया ।

प्राचीन बावनगढ़ के नाम से गढ़वाल

१ चान्दपुर गढ़	१४ कुञ्जणीगढ़	२७ तोपगढ़	४० अजमीरगढ़
२ दसोली गढ़	१५ भरपुर गढ़	२८श्रीगुरुगढ़	४१ सावलीगढ़
३ बधाण गढ़	१६ लोदगढ़	२९ धौनागढ़	४२ बदलपुरगढ़
४ नागनाथगढ़	१७ रैकागढ़	३० लंगूरगढ़	४३ संगेलागढ़
५ कण्डारागढ़	१८ मुगरागढ़	३१ बागगढ़	४४ गुजड़ू गढ़
६ बांगार गढ़	१९ ऊपूगढ़	३२फल्यासूगढ़	४५ जौंटगढ़
७ भरदार गढ़	२० मोल्यागढ़	३३लोदनगढ़	४६ जौनपुरगढ़
८ सिलगढ़	२१ सांकरीगढ़	३४रतन गढ़	४७ चम्पा गढ़
९ लोहबागढ़	२२ नालागढ़	३५गढ़कोटगढ़	४८ कांडा गढ़
१० कोल्लीगढ़	२३ रामीगढ़	३६गढ़तांगगढ़	४९ भुवना गढ़
११ रवाड़गढ़	२४ बिराल्टागढ़	३७ बनगढ़	५० कांडा गढ़
१२ फल्याणगढ़	२५ चौंडागढ़	३८चौंदकोटगढ़	५१ देवल गढ़
१३ कुईलीगढ़	२६ रानीगढ़	३९ नयालगढ़	५२ हिंक्यागढ़

तीर्थ—वर्णन

जिसके हाथ पैर और मन काबू में हों तथा जिसमें विद्या तप और कीर्ति हो, वह मनुष्य तीर्थ के फल का भागी होता है। पुरुष का शुद्ध मन, शुद्ध वाणी तथा वस में की हुई इन्द्रियाँ ये शारीरिक तीर्थ हैं जो स्वर्ग का मार्ग सूचित करती हैं। भीतर का दूषित चित्त तीर्थ स्नान से शुद्ध नहीं होता। जिसका अन्तःकरण दूषित है जो दम्भ में रुचि रखता है तथा जिसकी इन्द्रियाँ चञ्चल हैं,उसे तीर्थ, दान, व्रत और आश्रम भी पवित्र नहीं कर सकते। मनुष्य इन्द्रियों को वश में करके जहाँ जहाँ निवास करता है वहीं वहीं कुरुक्षेत्र, प्रयाग और पुष्कर आदि तीर्थ वास करने लगते हैं। पृथ्वी के पवित्र तीर्थों का संक्षेप में वर्णन किया जाता है जिनके सुनने और पढ़ने से अश्वमेध फल की प्राप्ति होती है और मनुष्य सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है। सो भक्ति भाव से सुनिये।

पुष्कर, नैमिषारण्य, प्रयाग, धर्मारण्य, धेनुक, चम्पकारण्य, मगधारण्य, सैन्धवारण्य, दण्डकारण्य, गया, प्रभास, श्रीतीर्थ, कनखला, भृगुतुङ्ग, हिरण्याक्ष, भीमारण्य, कुशस्थली, कुशस्थली, लोहाकुल, केदार, मन्दरारण्य, महाबल, कोटितीर्थ, रूपतीर्थ, शूकर,

चक्रतीर्थ, योगतीर्थ, सोमतीर्थ शाखोटक, कोकामुख, बदरीशैल, तुंगकूट, स्कन्दाश्रम, अग्निपद, पञ्चशिख, धर्मोद्भव, बन्धनमोचान, गंगाद्वार, पञ्चकूट, मध्यकेशर, चक्रप्रभ, मतंग, कुशदंड, दंष्टाकुंड, विष्णुतीर्थ, सर्वकामिक तीर्थ, मत्स्यतिल, ब्रह्मकुंड, सत्यपद, बाहूकुंड, चतुःस्रोत, चतुःशृंग, द्वादशधार, मानस, स्थूलशृंग, स्थूलदंड, उर्वशी, लोकपाल, मनुवर, सोमशैल, सदाप्रभ, मेरुकुंड, सोमाभिषेचन तीर्थ, महास्रोत, कोटरक, पञ्चधार, त्रिधार, सप्त धार, एकधार, अमर कन्टक, शालग्राम, कोटिद्रुम, बिल्व प्रभ, देवहृद, विष्णुहृद, शंखप्रभ, देवकुंड, वज्रायुध, अग्निप्रभ, पुंनाग, देवप्रभ, विद्याधरतीर्थ, गान्धर्वतीर्थ, मणिपूर, गिरि, पञ्चहृद, पिण्डारक, मलव्य, गोप्रभाव, गोवर, वटमूल, स्नानदण्ड, विष्णुपद, कन्याश्रम, वायु कुण्ड, जम्बूमार्ग, गभस्ति-तीर्थ, ययाति पत्तन, भद्रवट, महाकालवन, नर्मदातीर्थ, तीर्थवज्र, अर्बुद, पिंगतीर्थ, वासिष्ठ-तीर्थ, पृथु संगम, दौर्वासिक, पिञ्चरक, ऋषि तीर्थ, ब्रह्मतुंग, वसुतीर्थ, कुमारिक, शुक्रतीर्थ पञ्चनद, रेणुकातीर्थ, पैतामह, विमलतीर्थ, रुद्रपाद, मणिमान, कामाख्य, कृष्णतीर्थ, कुलिंगक, यजनतीर्थ, याजनतीर्थ, ब्रह्मवालुक, पुष्पन्यास, पुण्डरीक, शिवोद्भेद, नर्मदोद्भेद, दीर्घसत्र, हयपद, अनशन तीर्थ, गंगोद्भेद, ब्रह्मा

पद, दारूवल, छायारोहण, कौशाम्बी, सिद्धेश्वर, मित्र-वल, कालिकाश्रम, वटावट, भद्रवट, दिवाकर, सारस्वतद्वीप विजयतीर्थ, कामदतीर्थ, रुद्रकोटि, सुमनस्तीर्थ, समन्त पंचक, ब्रह्मतीर्थ, सुदर्शनतीर्थ, पारिप्लव, पृथूदक, दशाश्व-मेधिक, सार्वद, विजय, पञ्चनद, वाराह, यक्षिणीहृद, पुण्डरीक, सोमतीर्थ, मुञ्जवट, बदरीवन, रत्नमूलक, स्वर्लोकद्वार, पञ्च तीर्थ, कपिलातीर्थ, सूर्यतीर्थ, शंखिनीतीर्थ, गोभवनतीर्थ यक्षराजतीर्थ, ब्रह्मावर्त, कामेश्वर, मातृतीर्थ, शातवनतीर्थ स्नानलोमापह, माँससंसरक, ब्रह्मोदुम्बर, सप्तर्षिकुण्ड, देवी तीर्थ, जम्बुकतीर्थ, ईहास्पद, कोटिकूट, किंदान, किंजप, कारण्डव, अवेध्य, त्रिविष्टप, पाणिखात, मिश्रक, मधुवट मनोजव, कौशिकीतीर्थ, देवतीर्थ, ऋणमोचनतीर्थ, नृगधूम अमरहृद, श्रीकुञ्ज, शालितीर्थ, नैमिषेयतीर्थ, ब्रह्मस्थान, कन्यातीर्थ, मानसतीर्थ, कारुपावनतीर्थ, सौगन्धिकवन, मणितीर्थ, सरस्वतीतीर्थ, ईशानतीर्थ, पाञ्चयज्ञिकतीर्थ, त्रिशूलधार, माहेन्द्र, देवस्थान, कृतालय, शाकम्भरी, देवतीर्थ, सुवर्णतीर्थ, कलिहृद, क्षीरस्रव, विरूपाक्ष, भृगुतीर्थ, कुशोद्भवतीर्थ, ब्रह्मयोनि, नीलपर्वत, कुब्जाम्रक, वशिष्ठपद स्वर्गद्वार, गंगाद्वार, कालिकाश्रम, रुद्रावर्त, सुगन्धाश्व, कपिलावन, भद्रकर्ण हृद, शंकुकर्णहृद, सप्तसारस्वत, औशनसतीर्थ, कपालमोचन, अवकीर्ण, काम्यक, चतुःसामुद्रिक,

शतिक, सहस्रिक, रेणुक, पञ्चवटक, विमोचन, स्थाणुतीर्थ,
कुरुतीर्थ, कुशध्वज, विश्वेश्वर, मानवकूप, नारायणाश्रम, गंगा
हृद, बदरीपावन, इन्द्रमार्ग, एकरात्र, क्षीरकावास, दधीच
श्रुतीर्थ, कोटितीर्थ, स्थली, भद्रकालीहृद, अरुन्धतीवन
ब्रह्मावर्त, अश्ववेदी, कुब्जावन, यमुना, प्रभव, वीर, प्रमोद
सिन्धुत्थ, ऋषिकुल्या, कृत्तिका, उर्वीसंक्रमण, मायावि
द्योद्भव, महाश्रम, वेतशिका, सुन्दरकाश्रम, बाहुतीर्थ, चारु
नदी, विमलाशोक, मार्कंडेयतीर्थ, सितोद, मत्स्योदरी,
सूर्यप्रभ, अशोक वन, अरुणास्पद, शुक्रतीर्थ, वालुका-
तीर्थ, पिशाचमोचन, सुभद्राहृद, विरलदंडकुंड, चंडेश्वरतीर्थ,
ज्येष्ठस्थानहृद, ब्रह्मसर, जैगीषव्यगुहा, हरिकेशवन, अजा-
मुखसर, मन्दाकर्णीहृद, कर्कोटक, वापी, सपर्णास्पोदपान,
श्वेपतीर्थहृद, घर्घरिकाकुंड, श्यामाकूप, चन्द्रिकातीर्थ,
श्मशानस्तम्भकूप, विनायकहृद, सिन्धूद्भवकूप, ब्रह्मसर,
रुद्रावास, नागतीर्थ, पुलोमतीर्थ, भक्तहृद, क्षीरसर, प्रेता
धार, कुमारतीर्थ, कुशावर्त, दधिकार्णोदपानक, शृंगतीर्थ
महातीर्थ, महानदी, गयशीर्ष, अक्षयवट, कपिलाहृद,
गृध्रवट, सावित्रीहृद, प्रभासन, शीतवन, योनिद्वार, धन्यक,
कोकिलातीर्थ, मतंगहृद, पितृकूप, सप्तकुन्ड, मणिरत्नहृद,
कौशिक्यतीर्थ, भरततीर्थ, जेष्ठालिका तीर्थ, कलसर,
कुमारधारा, श्रीधारा, गौरीशिखर, शुनःकुंड, नन्दितीर्थ

कुमारवास, श्रीवास, कुम्भ कर्णह्रद, कौशिकीह्रद, धर्मतीर्थ कामतीर्थ, उद्दालकतीर्थ, संध्यातीर्थ, लोहितार्णव, शोणो द्भव, वंशगुल्म, ऋषभ, कालतीर्थ, पुंड्यावर्तिह्रद, बदरिका-श्रम, रामतीर्थ, पितृवन, विरजातीर्थ, कृष्णातीर्थ, कृष्णवट, रोहिणी कूप, इन्द्रद्युम्न, सरोवर, सानुगर्त, माहेन्द्र, श्रीनन्द इषुतीर्थ, सार्षभीतीर्थ, कावेह्रद, गोकर्ण, गायत्री स्थान, बदरीह्रद, मध्यस्थान, त्रिकर्णक, जातिह्रद, देवकूप, कुशप्रथन, सर्वदेवव्रत, कन्याश्रमह्रद, बालखिल्यह्रद तथा अखंडितह्रद ये सब पवित्र तीर्थ हैं। जो मनुष्य इन तीर्थों में उत्तम श्रद्धा से सम्पन्न हो उपवास एवं इन्द्रिय संयम पूर्वक विधिवत स्नान देवता ऋषि मनुष्य तथा पितरों का तर्पण देवताओं का पूजन एवं तीन रात्रितक निवास करता है वह महापापी होनेपर भी सम्पूर्ण पापों से छूट कर परमपद प्राप्त करता है इसमें सन्देह नहीं है।

धन्यास्ते पुरुषालोके ये न्वं यांति सदा हरिम् ॥